

"पितृयज्ञ प्रसाद"

स्वामी ब्रह्मानन्द

मुद्रकः—
देवकीनन्दन अरोरा
श्री गोपाल प्रिंटिंग प्रेस, सीतारोड चन्दौसी।

❀ ओ३म् ❀

सत्यं वद
ऋग्वेद

धर्मं चर
यजुर्वेद

ओ३म् भूर्भुवः। तत्सवितुर्वरेण्यं
भर्गो देवस्य धीमहि। धियो यो नः प्रचोदयात्

"पितृयज्ञ प्रसाद"

लेखकः—
श्रीमान् पूज्यपाद स्वामी ब्रह्मानन्द जी महाराज
परिव्राजक

प्रकाशक
श्रीमती लाजवन्ती जी ने अपने पति स्वर्गीय श्री ला०
किशनदयाल जी के समपर्णार्थ छपवाई

प्रथमवार १०००
द्वतीयवार १०००
तृतीयवार १०००

सं० २०१३

सामवेद

अथर्ववेद

❀ ओ३म् ❀

पाठकगण—पितृयज्ञ प्रसाद पुस्तक का पहिला संस्करण श्रीमती पारवती देवी जी धर्मपत्नी श्री रायसाहब शैप्रसाद जी खजानची रामनिवास लुधियाना की प्रबल इच्छा उदारता श्रद्धा भावना से जो उन्हों ने २६०) रु० भेजा था। शेष अन्य कुछ प्रेमियों की श्रद्धा युक्त की गई सेवा से प्राप्त होने पर छपी इस पुस्तक को सद् गृहस्थी परिवारों ने श्रद्धा युक्त उसे अपनाया और लाभ उठाया।

दूसरा संस्करण

अमृतसर श्री मा० लालचन्द जी प्रधान आर्य समाज लक्ष्मण सर के निमन्त्रण पर गया, परिवारिक सत्संग होता रहा, पितृयज्ञ पर उपदेश किये गए, कई व्यक्ति रो पड़े श्री ला० सालिगराम जी क्लाथ मर्चैन्ट प्रताप बाजार ने कहा, स्वामी जी यह पुस्तक फिर छपवावें, मैं पुस्तक पर जिस कदर कागज का खर्च आवेगा मैं दुँगा। अतः पितृयज्ञ प्रसाद का दूसरा संस्करण छपनार्थ दे दिया गया, छपवाई इत्यादि का खर्च अन्य भगवत प्यारों ने तत्काल दे दिया। पुस्तक छप कर प्रेमियों की भेंट होती रही है। प्रभुदेव इन सेवा करने वाले भगवत प्यारों को बल; बुद्धि, शक्ति, प्रदान करते रहें, ताकि ऐसे निष्काम ज्ञान यज्ञ में अपनी पवित्र कमाई को भेंट करते हुए अपने भावी जीवन को सफल कर सकें।

स्वामी ब्रह्मानन्द



मुद्रकः—श्री गोपाल प्रिंटिंग प्रेस, सीतारोड चन्दौसी।

❀ विषय सूची ❀

समर्पण

"त्वदीयं वस्तु गोविन्द । तुभ्यमेव समर्पये" ॥

पाठक वृन्द !

जगन्नियन्ता जगदीश की असीम अनुकम्पा से महर्षि श्री स्वामी दयानन्द जी सरस्वती द्वारा प्रणीत पंच महायज्ञ विधि के ब्रह्म-यज्ञ प्रसाद ६०००, देवयज्ञ प्रसाद ६०००, पित-यज्ञ प्रसाद ३०००, अतिथि यज्ञ प्रसाद २०००, यज्ञ प्रसाद ४०००, ब्रह्म-प्रसाद २०००, भगवत-यज्ञ प्रसाद १०००, मौन-यज्ञ प्रसाद २००० नारी-कर्त्तव्य प्रसाद १०००, प्रेम सुमन प्रसाद १००० अमृत प्रसाद १०००, ब्रह्म-सोम प्रसाद १०००, पारिवारिक सतसंग प्रसाद १६००० (४५०००) अपने प्रभु-प्रेरित विचारों के रंग में रग कर प्रभु प्रसाद के रूप में भेंट कर चुका हूं ।

प्रभु की प्रेरणा मयी रचना उन्हीं के पवित्र चरणों में विनम्र भाव से समर्पण है—और प्रार्थना करता हूं कि वह अपनी दया कृपा से मुझे सामर्थ्य और शक्ति प्रदान करते हुए ऐसे मंगल कार्य करने की प्रेरणा प्रदान करते रहे ।

ब्रह्मानन्द स्वामी C/o भारत गलास कम्पनी
सदर बाजार देहली

भूमिका

ओ३म्त्वं हि नः पिता वसो त्वं माता शतक्रतो बभूविथ
॥ सा० आ० ८ मन्त्र ८१५

योगीराज श्री कृष्ण चन्द्र महाराज ने गीता में लिखा है कि यज्ञ से बढ़कर कोई पुण्य कर्म नहीं है। परन्तु यज्ञ कहते किस हैं शतपथ ब्राह्मण में लिखा है—

"यज्ञो वै श्रेष्ठतमं कर्म"

जितने भी शुभ कार्य हैं वे सब ही यज्ञ हैं। शतपथ ब्राह्मण की इस व्यवस्था के अनुसार कुआं, धर्मशाला आदि बनवाना, विद्या, सार्वजनिक सेवा, गऊ, सच्चे ब्राह्मण आदि को दान देने के अतिरिक्त नित्य प्रति के वे कर्म जिन से व्यक्ति, समाज और राष्ट्र ऊंचा उठे वे सब यज्ञ के ही अन्तर्गत आ जाते हैं। तब फिर प्रश्न उठता है कि यह यज्ञ जिसे देव-यज्ञ हवन आदि नाना नामों से पुकारा जाता है, क्या है? इसके उत्तर में वैदिक मर्यादा के अनुसार यह ही कहेंगे कि देवयज्ञ अथवा महायज्ञ जीवन यज्ञ की वह तैयारियां है जिन्हें आश्रम मर्यादा का पालन करते हुये आरम्भ के तीन आश्रमों में तप की भट्टी में तपकर चतुर्थ आश्रम सन्यास में यज्ञीय जीवन बनाकर स्वयं अग्नि स्वरूप बन जाना है।

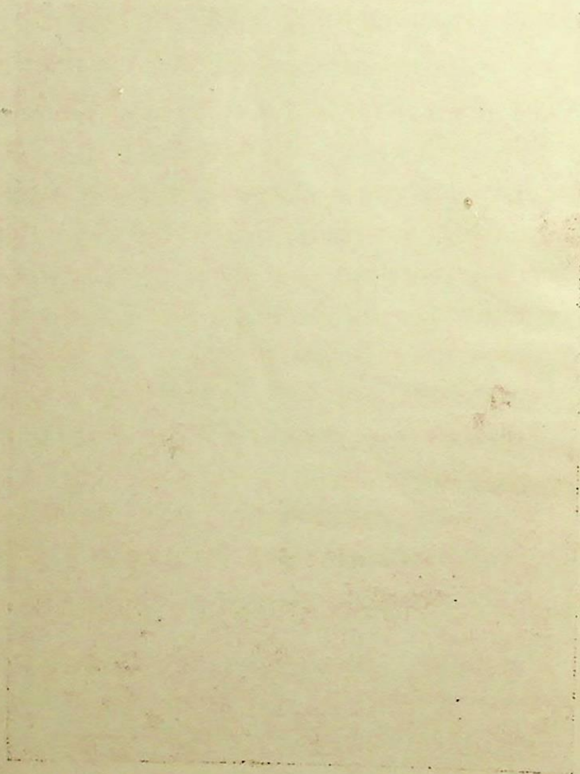
इस उच्च आदर्श की प्राप्ति के लिये जो यज्ञ आरम्भ किया जाता है उस के लिये कुछ व्रत ग्रहण करने होते हैं और कुछ बन्धन हैं। जिनमें बंधकर जीवन की गाड़ी को धर्म की लीक पर बड़ी सावधानी से चलना होता है। इस व्रत बन्ध का दूसरा नाम यज्ञोपवीत भी है जो किसी आदर्श गुरू के चरणों में बैठकर ग्रहण किया जाता है। यज्ञोपवीत की दीक्षा के समय मानव शरीर धारी प्राणी पर जिन तीन ऋणों का उपदेश दिया जाता है उनमें पितृ-ऋण भी एक है वह क्या है, और कैसे उससे उऋण (मुक्त) हुआ जा सकता है इस शुभ ज्ञान पीपसा के लिये दो होनहार युवक आपस में ज्ञान-विज्ञान पर चर्चा करते हैं।

ओ३म्

ओ३म् भू र्भुवः स्वः। तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि। धियो यो नः प्रचोदयात् ॥



स्वर्गीय ला॰ किशनदयाल जी कोच्चर



तीसरा संस्करण

मैं चन्दौसी, जिला मुरादाबाद, श्री लाला रामलाल जी इंजीनियर गवर्नमेंट पावर हाऊस तथा लाला सेवकराम जी पेशावर निवासी के निमन्त्रण पर गया, तो दैवयोग से श्री लाला किशन दयाल जी कोचर जो आर्य-समाज के पुजारी नित्य कर्मकांडी और ऋषि भक्त थे उनकी आयु ६३ वर्ष की थी टांगों में वायु रोग रहता था परन्तु आर्य-समाज के प्रति सेवा और लग्न ऐसी थी कि वह आर्य-समाज लोअर बाजार शिमला के प्रधान थे। आर्य-समाज में प्रतिदिन प्रातः समय अग्निहोत्र तथा सतसंग होता था। आपका रहने का स्थान आर्य-समाज मन्दिर से लगभग एक मील की दूरी पर था और पहाड़ी चढ़ाई होती थी। अति वर्षा ही क्यों न हो रही हो तो वह नियत समय पर सबसे पूर्व सतसंग में पहुंचते थे। उनका २-१-५६ ई० सौमवार को देहान्त हो गया उनकी सन्तान ने पूर्ण वैदिक रीति से उनका मृतक संस्कार कराया। उनका तेहरवां मनाने के लिये यज्ञ कराने अर्थ-उनके सुपुत्र नरेन्द्र नाथ कोचर मेरे पास आये। और मुझसे पूछा, कि स्वामी जी! सबसे उत्तम दान कौन सा होता है। मैंने कहा

"सर्वे षामेव दानानां, ब्रह्म दानं विशिष्यते" ॥

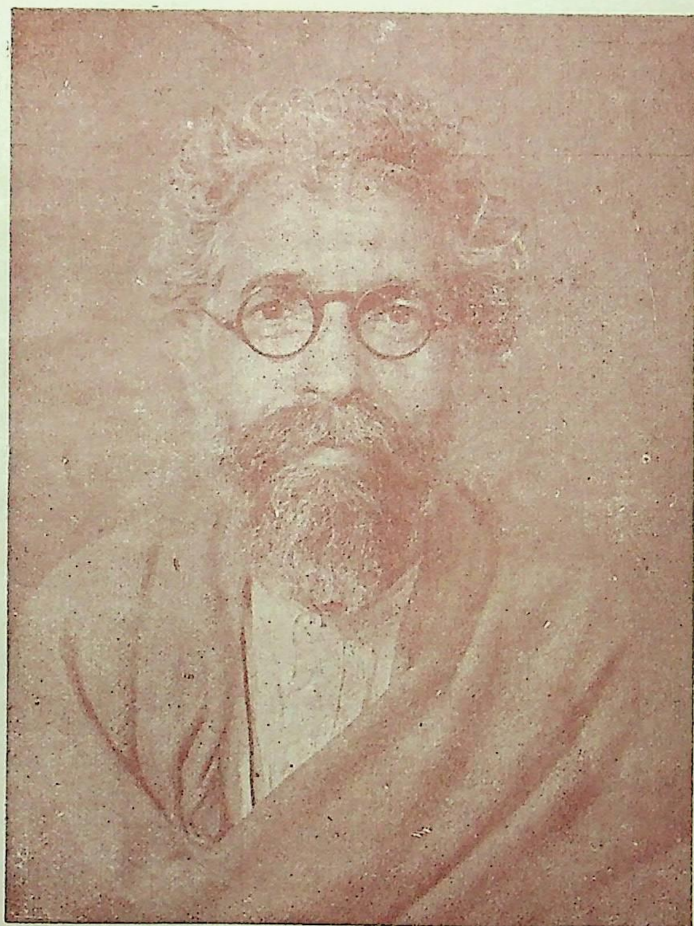
सब दानों से उत्तम दान ज्ञान दानही है, और वह मुझसे मेरी लिखी पितृ-यज्ञ प्रसाद पुस्तक जो उर्दू में छपी हुई थी साथ ले गये। और दूसरे दिन उन्होंने मुझे निमन्त्रण दिया मैं उनके स्थान पर गया तो वह स्वयं तथा उनकी माता जी तथा अन्य परिवार ने मुझ से कहा कि स्वामी जी! आपकी पितृ-यज्ञ-प्रसाद पुस्तक पढ़ सुनकर हमको बड़ा आनन्द आया है, यह बहुत उत्तम पुस्तक है। लाला नरेन्द्र नाथ जी की माता लाजवन्ती देवी जी ने कहा कि यदि यही पुस्तक हिन्दी में छपी हुई हो तो मुझे देवें। मैंने कहा हिन्दी में छपी हुई है। मैं दुंगा

थोड़ी सी प्रतियाँ शेष रह गई हैं इसको फिर से छपवाना है। तो श्रीमती लाजवन्ती देवी जी ने तत्काल कहा कि मैं यह पुस्तक छपवा देती हूँ। चुनाचे उसी समय पुस्तक (पितृ-यज्ञ-प्रसाद) श्री गोपाल प्रेस में छपने अर्थ देदी गई। मुझे श्रीमती लाजवन्तीदेवी तथा उनके स० ला० नरेन्द्रनाथ की श्रद्धा सात्विक भावना और उदारता को देखकर बड़ी प्रसन्नता हुई। मैंने अनुभव किया कि जहां ला० किशनदयाल जी कोचर स्वयं आर्य-समाज के सच्चे सेवक थे साथ ही वह अपनी धर्मपत्नी को भी वैसा ही बना गये। यह है; सच्चा गृहस्थ जीवन। और मैंने उनके सपुत्रों-ला० मनोहर लाल, ला० नरेन्द्र नाथ तथा सारे परिवार में अपने माता-पिता के प्रति अगाध श्रद्धा भावना को देखा। यह सब ला० किशनदयाल जी के Practical जीवन का ही परिणाम है। यह पितृ-यज्ञ-प्रसाद का तीसरा संस्करण श्रीमती लाजवन्ती देवी जी ने अपने पति देव स्वर्गीय ला० किशन दयाल जी कोचर के समरणार्थ छपवाकर भेंट किया है। मेरी प्रभु देव से प्रार्थना है कि वह श्रीमती लाजवन्तीदेवी तथा उनके सुपुत्रों और परिवार में धर्म कार्यों में प्रवृति और अधर्म कार्यों से निवृति बनाये रखें। ऐसे ही निष्काम कार्यों को करते हुए अपने भावी जीवन को सफल करें।

स्वामी ब्रह्मानन्दन

ओ३म्

ओ३म् भूर्भुवः स्वः। तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि।
धियो यो नः प्रचोदयात् ॥



श्री स्वामी ब्रह्मानन्द जी महाराज

"पितृयज्ञ प्रसाद"

(ज्ञान विज्ञान प्राप्ति के साधन)

सत्यपाल—दो वस्तुओं के मिलाने के लिए तीसरी वस्तु की आवश्यकता पड़ती है, उदाहरणार्थ, यह मकान बना हुआ है, परन्तु किस वस्तु का बना हुआ है।

रामलाल—ईंटों का।

सत्यपाल—तो क्या यदि ईंट पर ईंट रखते जाएं, तो क्या मकान बन जायेगा ?

राम—नहीं, यह तो तब बना, जब दो ईंटों के मध्य में गारा आया।

सत्य—गारा किस चीज का बना हुआ है, और कैसे बनाया गया।

राम—गारा मिट्टी का है और उस में पानी मिलाकर बनाया गया।

सत्य—अर्थात दो वस्तुओं को मिलाने वाली शक्ति जल हुआ।

राम—जी हाँ।

सत्य—अब बताओ मनुष्य जीवन का उद्देश्य क्या है ?

राम—ईश्वर प्राप्ति, क्योंकि जीवात्मा सत चित है और परमात्मा सत् चित आनन्द, आनन्द की प्राप्ति के लिये उसे प्राप्त करता है।

सत्य—तो उसकी प्राप्ति के लिये कौन से गारे की आवश्यकता है।

राम—परमात्मा को प्राप्त करने के लिये गारा चाहिए ज्ञान का, ज्ञान दो अक्षरों "ज्ञ" अर्थात जानना "न" से अभिप्रायः है बन्धन, अर्थात् जिस ज्ञान द्वारा आत्मा के बन्धन कट जाएं।

सत्य—ज्ञान कहां से मिलता है ?

राम—गुरु से।

सत्य—गुरु कौन है ?

राम-शतपथ ब्राह्मण में लिखा है (मातृमान्-पितृमान् आचार्यवान् पुरुषोवेद) प्रथम गुरु माता-दूसरा गुरु पिता, तीसरा गुरु वह जो भगवान प्राप्ति का मार्ग दिखाए ! माता की भक्ति करो पिता की आज्ञा पालन करो, गुरु का अनुकरण करो ।

सत्य—क्या मास्टर, पंडित, लाला, मौलवी, जो स्कूलों कालिजों, पाठ-शालाओं में पढ़ाते हैं वे गुरु कहलाते हैं ।

राम—नहीं, वे अध्यात्मिक विद्या के गुरु नहीं ।

सत्य—क्यों, क्या यह विद्या नहीं पढ़ाते ?

राम—विद्या तो पढ़ाते हैं । परन्तु प्यारे ! विद्या तीन प्रकार की है ।

(१) धन देकर विद्या प्राप्त करना ।
(२) किसी से पढ़कर फिर दूसरों को पढ़ा देना ।
(३) सेवा से विद्या प्राप्ति करना ।

प्रथम विद्या निकृष्टतम है, इस लिये अनेकों स्कूल, कालिजों तथा पाठशालाओं में विद्या प्राप्त करने वाले विद्यार्थी पढ़ रहे हैं इस विद्या का परिणाम देखें बी. ए., ऐम. ए. तक पढ़े लिखे व्यक्तियों का प्रायः जीवन क्या है, न माता के न पिता के न गुरु के न देश तथा जाति के हैं । सिवाय भोग विलास के और स्वार्थपरता के और कुछ जानते ही नहीं । सदाचार तो इन में खोजने पर भी प्राया दुर्लभ मिलता है ।

सत्य—क्या पाठशालाओं, स्कूलों कालिजों में जो शुल्क देकर विद्या प्राप्त की जाती है यह अधम श्रेणी की है ।

राम—हां २, इससे पाठशालाओं के अध्यापकों के लिए विद्यार्थियों के हृदय में कोई मान तथा श्रद्धा उत्पन्न नहीं होती । वे यह समझते कि हम धन देकर पढ़ रहे हैं । और अध्यापक समझते हैं कि हम ने वेतन लेना है । अधिक सिरदर्दी की क्या आवश्यकता है । सुनो और

वर्तमान शिक्षा की तुलना श्री ला० कांशी राम जी लेखक; पुस्तक "आदर्श जीवन" से उद्धृत।

भूत	वर्तमान
१. त्याग तथा संयम का जीवन था।	भोग तथा विलास का जीवन है।
२. देना ही देना था।	लेना ही लेना है।
३. कर्त्तव्य पालन उद्देश्य था।	कर्त्तव्य विमुखता।
४. सादा जीवन।	फैशन लिप्सा।
५. सच्चा प्रेम।	स्वार्थ स्नेह।
६. प्रतिज्ञा निभाना।	प्रतिज्ञा भंग करना।
७. सीधी बात करना।	व्यंग वार्तालाप।
८. आज्ञा पालन करना।	आज्ञा भंग करना।
९. नम्रता।	अभिमान
१०. प्रातः जागरण।	सूर्योदय के बाद के जागरण
११. ईश्वर विश्वास।	नास्तिकता।
१२. सेवा भाव।	स्वार्थ।
१३. नियम पूर्वक जीवन।	स्वेच्छाचरण।
१४. मादक द्रव्यों से घृणा।	मादक द्रव्यों को सुधा जानना।
१५. सदाचार।	दुराचार।
१६. मंत्र श्रद्धा (मित्रों से प्रेम बढ़ाना)।	मंत्र भंग (मित्रों में फूट डलवाना)।
१७. दीनों की सेवा करना।	दीनों की हत्या करना।
१८. द्वेष मिटाना।	द्वेष फैलना।
१९. बिछुड़ों को मिलाना।	मिलों को विछोड़ना।
२०. गिरों को उठाना।	उठों को गिराना।
२१. शरीर बलवान् बनाना।	दवाईयाँ बनाना व खाना।
२२. शान्ति प्राप्त करना।	तृष्णा बढ़ाना।

२३. सत्य से प्रेम।	असत्य प्रचार (झूट बोलना और झूठ सिखाने की डिग्री लेना)
२४. शिष्य का गुरु को खोजना।	गुरू का शिष्यों को खोजना।

न अब तादीब में शफ़कत, न शोखी में अदब बाकी
बज़ुर्गों की रविश बदली, अज़ीज़ों का चलन बिगड़ा

दूसरी विद्या:—मध्यम श्रेणी की है।

तीसरी विद्या:—वास्तविक विद्या है और ज्ञान है।सेवा से ज्ञान मिलता है। ज्ञान से शान्ति प्राप्त होती है। पहला गुरु माता है जो मति की विधाता है। माता पृथ्वी के समान है पिता सूर्य, तथा गुंरु वायु-शिष्य जल के गुणों वाला होता है।

सत्य—गुरु किसे कहते हैं।

राम—गुरु अर्थात गु मन रु प्रकास, जो मन में ऐसा प्रकाश दे जिस के द्वारा आत्मा परमात्मा का साक्षात्कार हो जाए।

सत्य—गुरु के पास ज्ञान प्राप्तार्थ कैसे जाना चाहिये ?

पितृ उपासना

राम—यजुर्वेद अध्याय १६ म० ६२ में लिखा है।

ओं-आच्या जानुदक्षिणतो निषद्य मंयज्ञमभि गृणीत विश्वे। माहिंसिष्ट पितरः केन चिन्नो यद्व आगः पुरुषता कराम।

भावार्थ:-जिन के पितृ लोग जब समीप आवें अथवा सन्तान लोग उनके समीप जाएं तब भूमि में घुटने टिकाकर नमस्कार कर उन को प्रसन्न करें, पितृ लोग भी आर्शीवाद, विद्या अच्छी शिक्षा के उपदेश से अपनी सन्तानों को प्रसन्न करके सदा रक्षा करें।

सत्य-चकित होकर, हैं यह क्या लिखा है, घुटने टिका कर नमस्कार करो, वाह भाई वाह, ऋषि दयानन्द जी ने तो केवल नमस्ते करना बतलाया है और सभी आर्यसमाजी-विद्वान साधु-महात्मा ऐसा करते कहते हैं। यदि कोई किसी को नतशत हो कर नमस्कार करता है तो उस के इस कर्म को गुरुडम के नाम से पुकारते हैं और उस से हंसी ठट्ठा करते हैं! क्या वेद में ऐसा लिखा है? भाई! यह किसी मनगढ़न्त ने मनमाने अर्थ लिख दिये होंगे, भाई! तुम तो ऐसा नहीं मानते, हम तो ऋषि दयानन्द की बात प्रमाणित मानते हैं।

राम-भाई चकित क्यों हो गये हो, और घबरा क्यों गये हो। मैंने जो मन्त्र आपको बताया है और उस का भावार्थ सुनाया है, किसी ऐसे मन घड़न्त के अर्थ नहीं सुनाए, वरन् जिस महान् आत्मा ऋषि दयानन्द जी महाराज पर आप श्रध्दा विश्वास रखते हैं, उन के भाष्य किये हुए मन्त्र का भावार्थ सुनाया है। यह लो यजुर्वेद देख लो।

सत्य-(वेद को लेकर पढ़ा, सम होकर), भाई! रामलाल, ! यह बात आपने नई दिखलाई, ये आर्य लोग फिर यूँही मुफ्त में झुकने और नमस्कार करने वालों पर हँसी ठट्ठा मखौले करते हैं।

राम-प्यारे! सत्यपाल जी, क्या बताऊँ, कुछ न पूछो, दिये तले अंधेरे वाली बात है, वर्तमान काल में देखो। यवन का बालक यवन, ईसाई का बालक ईसाई, सिख का बालक सिख, यहूदी का बालक यहूदी, पारसी का बालक पारसी, सनातनी का बालक सनातनी होगा, पर आर्यों का बालक आर्य नहीं होगा। यदि कोई होगा भी तो दुर्लभ। यह क्यों, कारण यह है कि ये लोग प्रायः दूसरों के कहने के ठेकेदार हैं, काश जिस महान् त्यागी तपस्वी ऋषि दयानन्द महाराज जी ने नियम बनाते हुए यह लिखा था कि वेद सत्य विद्याओं की पुस्तक है वेद का पढ़ना

पढ़ाना सुनना सुनाना आर्यों का परम धर्म है केवल इस पर आर्य लोग चल पड़ते, तो आज सारा संसार आर्यवर्त देश बन गया होता, अच्छा भाई अब इस विषय को क्या छेड़ें, दिल दुःखता है। कवि ने कहा है:—

दिल के फ़फोले जल उठे, सीने के दाग से।
इस घर को आग लग गई, घर के चिराग से॥

अब तो प्रभु से प्रार्थना है कि वह अब आर्य जाति की डूबती नौका को बचाने अथवा पार लगाने के वास्ते पुनः ऋषि की आत्मा भेजें।

सत्य-सुनो भाई ! सनातनी लोग जब अपने गुरु के पास जाते हैं तो घुटने टेक कर माथा चरणों में रख नमस्कार कर गुरु के आसन से दूर नम्र होकर बैठते हैं क्या यह सत्य है न ?

रामभाई ! सुनो, मैं तुम को सुनाऊँ, ईसाई लोग जब गिरजाघर में जाते हैं प्रार्थना करते हैं। उस समय वह नील डाऊन (घुटने टेक कर) होकर बैठते और नतशिर होते हैं। यवन लोग जब निमाज (सन्धया) पढ़ते हैं तो वे दोज़ानू (घुटने टेक कर) होकर नतशिर पृथ्वी पर माथा टिका कर प्रार्थना करते हैं। गुरु के प्यारे सिख भाई जब गुरुद्वारा जाते हैं तो पांव हस्त अथवा मुख धोकर मन्दिर में जाकर दो जानू होकर (घुटने टेक कर) सिर भूमि पर टिका कर नमस्कार करते हैं। सनातन धर्मी भाई भी इसी प्रकार करते हैं भला आपने रामलीला देखी होगी कि जब २ राम गुरु के चरणों में आता है, दोजानू होकर (घुटने टेक कर) गुरु को नमस्कार करता है। अब और सुनो अथवा देख लो-आर्य समाज के प्रवर्तक महर्षि दयानन्द जी महाराज का वह चित्र जिस में ऋषि दयानन्द जी महाराज ने गुरु विरजानन्द जी महाराज के चरणों में दक्षिणा (लौंगों की थाली) भेंट कर रहे हैं, दोजानू होकर। यह क्यों, भाई

जी इस से मेरु दण्ड सीधा होता है, जिस से बुद्धि का विकास होता है।

सत्य-भाई रामलाल आपने चकित कर देने वाली बातें बताई हैं। भाई हम तो न इधर के रहे, न उधर के रहे। न स्वयं वेद ग्रन्थों को देखते, और न पढ़ते हैं, दूसरा उल्टा लोगों को यह कहते रहते हैं। यह छोड़ो वह छोड़ो, पर हम ने लेना कुछ न सीखा और न किसी को लेने दिया, हम तो भाई वैसे रहे, जैसे—

धोबी का कुत्ता न घर न घाट का।

भगवान मनु लिखते हैं—

ब्रह्यारम्भेऽवसाने च पादौ ग्राह्यौ गुरोः सदा।
सहन्यत हस्तावध्येयं स हि ब्रह्माञ्जलिः स्मृतः॥

भावार्थः-सदा वेद पढ़ने के आरम्भ में गुरु के चरण का स्पर्श कर हाथ जोड़ कर अध्ययन करना और पुनः समाप्ति में गुरु के चरणों का स्पर्श करना ब्रह्माञ्जलि है।

(मनु अ० २ शलोक ७१ ७२)

व्यत्यस्तपाणिना कार्यमुप संग्रहणं गुरोः।
सव्येन सव्यः स्प्रष्टव्यो दक्षिणेन च दक्षिणः॥

भावार्थ-गुरू के वाम चरण को अपने वाम हाथ से और दक्षिण चरण को अपने दक्षिण हाथ से इस प्रकार अपने हाथों को बदल कर गुरु के चरणों को दोनों हाथों से स्पर्श करें।

ओ३म् शुचि मर्कैं ब्रहस्पति मधवरेषु नमस्यता।
अनाम्योज अचके॥ ऋ० सू० ३ मं० ६३ मं ५।

भावार्थः-जो मनुष्य वेदार्थ के जानने वाले अध्यापक और उपदेशकों को नमस्कार और सत्कार करते हैं वह पवित्र विद्वान हुये बल को प्राप्त होते हैं।

एक विद्यार्थी का अनुचित व्यवहार

सायंकाल के पांच बजे का समय था। सन्त महात्मा अपनी कुटिया से बाहर निकल कर घूम रहे थे। कई एक स्कूल तथा कालेज के विद्यार्थी आए और सन्त महात्मा के निकट आ पहुंचे: वह बोले !

पहिला विद्यार्थी-क्यों महात्मा जी क्या आप यहां पर रहते हैं और कब से यहां पर रहते हैं, ?

महात्मा-प्यारे ! यहां एक सप्ताह से रहता हूँ।

दूसारा विद्यार्थी अपने साथी से-चल मित्र, अपना समय व्यर्थ में नष्ट क्यों करते हैं ? इन लोगों से क्या प्राप्त होना है। ये लोग निठल्ले, बेकार, देश का माल मुफ्त में उड़ाने वाले, अट्ठावन लाख साधु संसार में रहते हैं।

पहिला विद्यार्थी मित्र ! तू बड़ा तेज मिज़ाज है' पढ़ा लिखा होकर ऐसी व्यर्थ की बातें करता है। शेख सादी ने कहा है:—

हर किरा जामाए पारसा बीनि,
पारसा दान ओ नेक मर्द अंगार।

अर्थात् जिस किसी को भक्त के रूप में तू देखें उसे भक्त जान और सज्जन समझ। अलबत्ता जब तुझे दोष मालूम हो जावे तो त्याग कर दें। सन्त तुलसीदास ने कहा है:—

तुलसी या संसार में सब से मिलिये धाय।
न जाने किस रूप में नारायण मिल जाय॥

पहिला विद्यार्थी-(महात्मा जी को सम्बोधन करके बोला, माहराज जी ! कृपा कर के हमें उपदेश दें।

महात्मा-प्यारे ! बताओ, तुम लोग जब स्कूल के कमरे में पहुंचते हो तो प्रविष्ट होते ही सर्व प्रथम क्या करते हो ?

विद्यार्थी-महाराज ! जाकर बैठ जाते हैं, जब मास्टर जी आते हैं, ख

हो जाते हैं। वे आज्ञा करते हैं सिट (Sit) तो हम बैठ जाते हैं और वह पढ़ाना आरम्भ कर देते हैं।

महात्मा-इस पढ़ाने वाले को आप किस नाम से पुकारते हैं।

विद्यार्थी-प्रौफेसर, मास्टर, लाला जी, मौलवी साहिब इत्यादि।

महात्मा-जब प्रौफेसर पढ़ा कर जाते हैं तो उन के सम्बन्ध में आप के मन में क्या मान होता है।

विद्यार्थी-महाराज जी ! कुछ न पूछिये–अभी आरम्भ में ही आपने मेरे साथी की बातों को नहीं सुना था। पर आज की बीती बात मैं आपको बताऊँ। मैं आज जब कालिज में गया तो मेरे सहपाठियों ने एक प्रस्ताव पास किया हुआ था वह यह, कि एक चौकोर कागज का टुकड़ा बनाया। उस पर लिखा, डैमफूल (Dam Fool) इस कागज के चारों कोनों पर गोंद लगा कर प्रोफेसर साहिब की कुर्सी पर चिपका दिया दूसरी ओर कागज पर सारी गोंद लगा दी प्रौफेसर साहिब आते ही टेक लगा कर कुर्सी पर बैठ गये. कुछ मिनट विश्राम करने के पश्चात् खड़े होकर कोट को उतार खूंटी पर लटका दिया और भाषण देना आरम्भ किया. जब भाषण समाप्त हुआ, तो कोट खोंटे से उतार कर पहना और चल पड़े, तो सभी विद्यार्थी बाहर निकल कर प्रोफेसर के पीछे तालियां पीटते चल पड़े और यह कह रहे थे, ओ डेम फूल ओ डेमफूल और खूब हँसे।

तीसरा विद्यार्थी-महाराज ! मैं अपनी आंखों देखी बात सुनाऊँ।

महात्मा-अच्छा प्यारे ! सुनाओ।

विद्यार्थी-मैं कालिज में पढ़ता था। एक दिन दोपहर के समय विद्यालय के बोर्डिंग के आंगन में एक व्यक्ति आया जिसने खादी की धोती पहनी हुई थी सिर पर टोपी, पैरों में फटा पुराना जूता, पीठ पर दस पन्द्रह सेर बोझा उठाया हुआ था उसने मेरे समीप आकर पूछा, कि अमरनाथ कहां रहता है। मैंने कहा वह

कहां का वासी है उसने उत्तर दिया, अमुक गाँव का है। ग्यारहवीं श्रेणी में पढ़ता है। इतने में एक विद्यार्थी ने सुन कर अमरनाथ का पता बता दिया कि ऊपर वाले अमुक कमरे में रहता है। तो मैंने उसको नीचे से आवाज दी उसने ऊपर से देख कर उस व्यक्ति को अपने यहाँ ऊपर बुला लिया। वह व्यक्ति ऊपर गया सामने आते ही अमरनाथ ने बिना नमस्ते कहे अथवा राम राम कहे उनको आज्ञा दी कि सामान कोने में रख दो। फिर पूछा कि आपने स्नान कर लिया है उत्तर 'न' मिलने पर अमरनाथ ने बोर्डिंग के सेवक को आवाज देकर कहा, यह व्तक्ति आरहा है इसे स्नानानागार दिखा दो। स्नान कर लेने के पश्चात् भोजन करा दें। वह व्यक्ति नीचे गया। स्नान करके भोजन किया। अब पाचक ने पूछा अमरनाथ आपका क्या लगता है। व्यक्ति ने कहा मेरा पुत्र है। यह सुनकर सब रसोईये चकित रह गये। कुछ कहे बिना आपस में हँसे और चुप हो गये।

महाराज जी ! अमरनाथ ने जब व्यक्ति को नीचे नहाने और भोजन कराने के लिये भेज दिया तो सहपाठियों ने अमरनाथ से पूछा; यह आपका क्या लगता है। तो उसने उत्तर दिया, कि यह हमारा पुराना सेवक है। मेरे पिता जी ने इसे आटा, घी देकर भेजा है और साथ ही किसी वकील साहिब से मिलकर किसी अभियोग का परामर्श लेना है। इतने में व्यक्ति ऊपर आगया। अमरनाथ ने पूछा, क्यों भोजन, स्नानादि कर आए व्यक्ति ने कहा हां अब अमरनाथ ने रसोइये को आवाज़ दी। और कहा अरे मेरा घी ले जाओ और थाली परोस कर लाओ और दही भी साथ लाना। सेवक घी ले गया और थाली परोस कर ले आया। अब अमरनाथ मेज़ कुर्सी लगाकर भोजन खा रहा है। सेवक गर्म २ फुलके लाकर खिला रहा। खाना खा लेने के पश्चात् अमरनाथ ने कोट पतलून पहनी, नेकटाई, जुराबें, बूट पहनकर आंखों पर चश्मा चढ़ाकर व्यक्ति से कहा, उठो चलो। अब आगे२ अमरनाथ

औरपीछेर वह व्यक्ति(सेवक)जारहा है। शहर के कामों से निवृत्त होकर छात्रालय में जब वापिस आये तो व्यक्ति लघुशंका करने बैठ गया। अमरनाथ ने कहा कि लघुशंका से निवृत्ति होते ही ऊपर आ जाना। अमरनाथ ऊपर चला गया, नीचे छात्रों ने व्यक्ति को घेर कर पूछा ? अमरनाथ आप का क्या लगता है, व्यक्ति ने कहा मेरा पुत्र है। तो यह सुनकर सब छात्र हँस पड़े और यात्री से कहा कि अमरनाथ तो कहता है कि यह हमारा सेवक है पिताजी ने आटा, घी पहुँचाने को भेजा है और एक वकील से परामर्श लेकर उत्तर भेजना है। व्यक्ति ने जब यह बात सुनी, उधर अमरनाथ के सारे किये हुए व्यवहार को देखा, तो मन में बड़ा दुःखी हो और बिना कुछ कहे वापिस ग्राम को लौट गया और रात्रि को गले में रस्सी डाल कर फाँसी खा ली, और अपने पीछे छोटे से कागज पर लिखकर छोड़ गया. कि ऐसी सन्तान देखने से तो मर जाना अच्छा है। ऐसी सन्तान से तो कुत्ते का पालना अच्छा है। जब उसका स्वामी आता है तो वह पूँछ हिलाते मस्तिष्क को स्वामी के चरणों पर रखकर चूमता है और चित लेट कर अपना उदर यूँ दिखाता है कि तू मेरा मालिक है। प्रेम और श्रद्धा के भाव प्रगट करता हुआ और धन्यवाद करता है और अपने प्राण तक स्वामी के हितार्थ अपर्ण कर देता है।

महाराज जी ! जब आप जैसे महात्माओं के उपदेश सुनते हैं तो जी थर्रा जाता है। अब कृपा करके हमें अपनी अमृत वाणी द्वारा वर्षा से तृप्त करें।

नमस्कार भावना

महात्मा-आपने वेदार्थ सुना, और महर्षि दयानन्द का भावार्थ भी किया हुआ देख लिया। अब आप बतलाएं कि पितर लोग कौन होते हैं।

रामलाल-महाराज, पितर लोग माता-पिता, गुरु आचार्य विद्वान्, साधु संत महात्माओं को कहते हैं। अर्थात् वे विद्वान

लोग जो मनुष्यों को ज्ञान चक्षु देकर उनके अविद्या रूपी अन्धकार को नाश करदें। वे पितर कहलाते हैं क्योंकि जैसी रक्षा मनुष्यों की सुशिक्षा से हो सकती है वैसी और प्रकार से नहीं।

महात्मा-जब आप प्रातः निद्रा से जागृत होते हो तो क्या करते हो

रामलाल-महाराज बिस्तर से उठकर शौच आदि से निवृत हो फिर चाय आदि पीकर घूमने चले जाते हैं। लौट कर स्नान कर भोजन किया, और पढ़ने चले गये।

महात्मा-कभी माता पिता को नमस्कार करते हो।

रामलाल-नहीं महाराज! नमस्कार करने से लज्जा आती है।

महात्मा-क्या स्कूल में मास्टरों को नमस्ते करते हो?

रामलाल-हां वहां तो करते हैं।

महात्मा-क्यों?

रामलाल-वे विद्या पढ़ाते हैं।

महात्मा-विद्या के बदले जब वे फीस लेते हैं, फिर नमस्कार क्यों करते हो। जब दुकानदार से सौदा लेकर दाम देते हो तो क्या उसे नमस्कार करते हो?

रामलाल-नहीं महाराज, जब दाम देकर सौदा लिया तो फिर नमस्कार क्यों करे।

महात्मा-तो प्यारे! इस प्रकार से स्कूल मास्टर को (फीस) दाम दिया, तो विद्या ली, फिर नमस्कार क्यों की?

रामलाल-भगवन! आप ही कृपा करके विस्तार से बतला दीजिये हम तो देखा देखी करते हैं।

माता पिता के ऋण

महात्मा-प्यारे ! माता-पिता तुमको भोजन देते हैं वस्त्र पहनाते हैं । संसार की वह कौन सी वस्तु है जो तुम्हारे लिए नहीं लाते और और तुम्हारे खिलाने पिलाने में ही वह प्रसन्नता मानते हैं । तुम्हें विद्यालय से अवकाश जब मिलता है तो माँ द्वार पर खड़ी तुम्हारी प्रतीक्षा में रहती है । जब तुम आओ, देखते ही फूली नहीं समाती, क्यों राम ऐसा करती है, या नहीं ।

राम-(हंस कर) हाँ महाराज ।

महात्मा-तो क्या इस सेवा का वह कुछ तुम से मोल लेती है ?

राम-नहीं महाराज ।

महात्मा-यदि तुझे अपना सहपाठी कोई अल्प वस्तु खिला दे, पानी पिला देवे, तो उसके लिए तुम्हारे मन में क्या भावना उत्पन्न होती है ।

राम-यह भावना उठती है कि कभी अवसर मिले तो इसका ऋण उतारूँ । यही विचार रहता है, क्योंकि खाता मुख है परन्तु लज्जा आँख को आती है ।

महात्मा-आँख से लज्जा कैसे आती है ।

राम-महाराज जब वह मित्र मिलता है आंख उसके आगे झुक जाती है ।

महात्मा-तो प्यारे ! एक अल्प वस्तु खिलाने पिलाने वाले के सम्मुख आते ही तो तेरी आंख उसके चरणों में झुक जाती है । पर जिस माता पिता ने बिना कुछ प्रतिफल लेने के अपना तन, मन, धन तेरे कल्याणार्थ अर्पण किए हुए हैं उसके लिए नमस्कार करने से आंख को लज्जा आती है ।

राम-[लज्जा से आंख नीची कर ली । और चुप हो गया ।]

महात्मा-सुनो में अब तुम्हें माता पिता की निष्काम सेवाओं का ज्ञान कराऊँ।

(१)

अभी बच्चा मां के गर्भ में नहीं होता तो माता पुत्रेच्छा के लिये साधु सन्तों, मन्दिरों, शिवालयों, पीरों, फकीरों, के पास याचन करती भटकती फिरती है कि मैं पुत्रवती हो जाऊँ। जब प्रभु की कृपा से वह गर्भवती हो जाती है तो जननी बच्चे को जन्म देते समय दर्द पीड़ा से त्राहिमाम २ कहती है, रक्त से लथपथ हो जाती है और अपने रूप आकार को विगाड़ देती है। मानो मृत्यु की प्रतीक्षा कर रही होती है। पर जिस समय वालक गर्भ से वाहर आता है तो सब कष्टों को वालक के जन्म लेने की प्रसन्ता में भूल जाती है और फिर उसके पालन पोषण में दिन रात एक कर के तन मन-धन अर्पण कर देने में भी कोई कसर नहीं रखती है बल्कि प्रसन्नता तथा आनन्द अनुभव करती है। तो क्या उस समय उसकी कुछ कामना भावना समक्ष होती है?

राम नहीं महाराज।

महात्मा-अब मैं तुम्हें मातृ ऋण की कुछ घटनएं सुनाता हूं सुनो!

मातृ-ऋण--बीरबल

कहते हैं कि एक दिन बीरबल ५००)की रु० थैली घर लाया और मात के चरणों में रख दी।

माता-बीरबल! क्या लाये हो ?

बीरबल-माता जी ५००) रु० आप की भेंट हैं।

माता-तो इनको क्या करूँ।

बीरबल-माताजी! दान कर दो-माता ने पुत्र की इच्छानुसार जब दान कर दिया। तब बीरबल ने कहा माता जी! आपका जो ऋण मुझ पर था आज वह चुका दिया।

माता-बीरबल ! क्या मातृ-ऋण तू यही समझता है प्यारे ! मातृ-ऋण चुकाना बहुत कठिन है । सुन तुम्हें सुनाऊँ जब तुम गर्भ में थे । दस मास पूरे होने को आये और तुम बाहर आने को चाहते थे तो तुझे पीड़ा ने सताया तो मैंने एक महात्मा से प्रार्थना की महाराज ! यह बालक जो अभी उत्पन्न होगा, तो इसका भविष्य क्या बनेगा ? महात्मा ने कहा कि देवी ! यदि इस बालक का जन्म १ घन्टे तक हुआ, तो यह नगर का चौकीदार बनेगा । तो मैंने महात्मा से करबद्ध प्रार्थना की, आप ऐसा उपाय बतलायें, कि यह बालक देश का आदर्श बने, तब महात्मा ने कहा, देवी ! यदि दूसरा घन्टा बीत जावे तो यह नगर का ज़ैलदार बनेगा । पुनः मैंने प्रार्थना की, महारज कृपा करो कोई और उपाय बताओ, कि यह कुछ देश का बने । तो महात्मा ने कहा देवी ! यदि तीसरा घंटा बीत जाये तो राजा का मन्त्री बनेगा, यदि चौथा घंटा बीत जाए तो देश का राजा बनेगा ।

प्यारे! बीरबल! पहला और दूसरा घंटा तो मैंने बड़ी कठिनाई से बिताया, परन्तु तीसरे घंटे अत्यन्त पीड़ित हुई, तो मैं छत से ज़घाएं बाँध और सिर नीचे करके लटक गई । तीसरे घँटे के बीतने पर तुम्हें उत्पन्न किया । चौथा घंटा सहार न सकी जिससे तू राजा का मन्त्री बना ।

बीरबल ने जब यह वृतान्त सुना तो कर बद्ध होकर चरणों में गिर पड़ा और क्षमा मांगी । और सदैव के वास्ते सावधान हो गया ।

महात्मा-और सुनो प्यारे !

(३)

[माता की दृष्टि]

एक दिन अकबर की रानी ने दासी को बुलाया । और उस को एक अत्यन्त सुन्दर वस्तु दी और कहा कि नगर में जाकर उस बालक को दे आ, जो कि अत्यन्त रूपवान् हो और उस का रूप

पता लिख कर आओ। दिन भर वह दासी नगर में भ्रमण करती रही, सहस्रों बालक नाना प्रकार के वर्णन वाले मिले, परन्तु इसकी दृष्टि किसी पर न टिकी। अन्ततः थक कर वापिस लौटने को ही थी कि उसको अपना पुत्र मिल गया उसे देख कर प्रसन्न बदन हो छाती से लगाया और प्रेम दर्शाते हुए उसे कहा, प्रिय पुत्र तेरी खोज में मारी २ फिरी, यह ले वस्तु, जो रानी ने उपहार रूप में दी है। वस्तु दे अपने बालक को साथ लेकर घर को लौटी। रानी ने पूछा काम कर आई।

सेविका-हाँ रानीजी ! दिन भर खोज करती २ नगर की गली २ और कूचा २ खोज मारा, अन्त में थक कर परमात्मा से प्रार्थना की, कि भगवन् ! लाल को मिलाओ, नहीं तो क्या मुख लेकर जाऊंगी। परमात्मा ने प्रार्थना स्वीकार की और बालक सन्मुख आ गया उसे वस्तु खिला कर दौड़ कर अभी आ रही हूं।

रानी-उस बालक का नाम व पता क्या है।

सेविका-(हंस कर) रानी क्या बताऊं, कहीं दूरका नहीं है वह मेरा अपना बच्चा ही है।

रानी-(गुस्सा में लाल पीली होकर) भाग्यहीन कहीं की, तेरा बालक काला-कुजला चक्षुहीन जिसको देखकर घृणा आती है। वही तुम्हें उत्तम प्रतीत हुआ।

दासी ने कर जोड़ कर प्रार्थना की, निस्सन्देह आप की दृष्टि में ठीक ऐसा ही होगा जैसा आप कह रही हैं, परन्तु मेरी दृष्टि में ऐसा रूपवान दूसरा कोई संसार में देखने में नहीं आया।

महात्मा-प्यारे ! अपनी कीमत माता से पूछो।

रामलाल-महाराज ! हम तो पढ़े लिखे माता पिता की कुछ कीमत समझते नहीं हैं। आप ने तो बड़ा सुन्दर स्वरूप दिखाया। यहाँ तो आवा का आवा ही बिगड़ा हुआ है।

महात्मा-और सुनो:—

(४)
माता का प्रेम—धन्य हो माता

अमरनाथ नाम का बालक स्कूल में पढ़ता था। जब आधी छुट्टी मिली. तो दौड़ता २ घर पहुँचा, मां चक्की पीस रही थी, मां की पीठ पर चढ़ कर जोर से बोला माँ रोटी दे दो। माँ ने चक्की का हत्था छोड़ कर प्रेम से कहा, बेटा! रात को रोटी बची नहीं थी मैं डैन खा गई थी" अमरनाथ यह शब्द सुनते ही क्रोध में आ गया, कहने लगा, तू मर जा, मैं तेरे घर नहीं आऊंगा, साँ अपशब्द कहे और हम तुम कह रहा था स्कूल का घंटा वजा, तो रोता, गाली निकलता दौड़ता हुआ स्कूल चला गया।

प्यारे! अमरनाथ के चले जाने पर क्या मां को शांति आ गई, नहीं २ हरगिज नहीं, किन्तु दिल दुःखी हो रहा है, बस चक्की पीसना छोड़ दिया; आटा उठाया, नमक मसाला; घी डाल कर परौंठा बनाया, थाली में परोस कर स्कूल को चली। जब स्कूल के द्वार पर पहूँची; तो स्कूल का एक विद्यार्थी मिला उससे कहा, मेरे अमर को बुला दे। वह लड़का स्कूल के अन्दर गया, अमर से कहा, तेरी मां स्कूल के द्वार पर खड़ी तुम को बुला रही है,। अमर स्कूल से बाहर आया, पर माथे पर त्योरी (बल) चढ़ी हुई, लाल पीला मुँह किये हुए मां के निकट आ कर गुस्से से कहा, क्या कहती है। तो माँ ने प्रेम भरी कोमल बाणी से कहा, बेटा, बासी रोटी खाने से बुध्दि मलीन हो जाती है मैं तेरे लिये घी, मसाला डाल कर ताजा परौंठा बना कर लाई हूँ, लो खालो, अमर नाथ ने गुस्से से कहा, मैं नहीं खाता अपने घर ले जा, फिर मां ने नम्रता से हाथ जोड़ कर कहा, बेटा! यह खा ले, मेरा यह दोष क्षमा कर दे, गुनाह बख्श दे, फिर ऐसा नहीं करूंगी और पांवों पर हाथ रख कर मिन्नतें कर रही है जैसे दोषी बनी हुई है, अमरनाथ टस से मस न

। । स्कूल के कमरे में वापिस चला गया, अब मां बेचारी ममता की मारी स्कूल के भीतर कभी न जाने वाली स्कूल के भीतर गई, अमरनाथ के मास्टर जी से प्रार्थना की, महाराज ! अमरनाथ को छुट्टी देवें, रोटी खाले, रोटी लाई हूँ । मास्टर जी ने कहा, अमर जाओ रोटी खालो, अमर ने उत्तर दिया, मास्टर जी ! मुझे भूख नहीं है । तो मास्टर जी ने अमर की माता से कहा, माई ! यह कहता है, मुझे भूख नही है, तो माता ने फिर कहा, महाराज ! यह अर्ध अवकाश के समय घर आया था, रोटी मांगी, रोटी था नहीं तो क्रोध करके यहाँ चला आया है । अब मैं ताजी रोटी पका कर लाई हूँ कृपा कर के इसको समझावें और आज्ञा देवें रोटी खाले, मास्टर जी ने फिर अमर से कहा कि जाओ रोटी खा ले, अमरनाथ ने फिर भी वही उत्तर दिया, मास्टर जी भूख नहीं है, अब मास्टर जी ने उस की माँ से कहा, कि माई जा यह टक्कर मारे, जब इसको भूख लगेगी, यह स्वयं आकर माँगेगा ।

प्यारे ! माता पिता और गुरू में यही भेद है, गुरू में कड़ापन का भाव अधिक होता है और माता में मोह ममता का, जिससे शिष्य गुरू से भय खाता है, पर माता से नहीं । हां यदि यही गुण माता पिता भी अपना लें, तो सन्तान देवता बन जाये पर आज कल की माताएँ बच्चे को ही हार सिंगार करते हुये उस को देख कर प्रसन्न होती रहती हैं, जिस से बच्चों का भविष्य जीवन नाश कर देती है, कहावत है:—

सादगी जीवन सजावट मृत्यु

प्यारे ! सोचो, क्या अमरनाथ के इन्कार करने पर मां को अब शान्ति आ गई, नहीं २ हरगिज नहीं, किन्तु पहले से अधिक बेचैन और व्याकुल हो रही है, तड़पती हुई घर आई अपने मुहल्ले की पड़ोसिन के यहां गई, जाकर पूछा, बहिन जी । तेरा 'ज्योती' स्कूल पढने गया है ? उत्तर मिला; हां बहिन जी । तो अमरनाथ की माता ने उसे कहा, एक काम आज मेरा कर आवे

देवी बोली, क्या काम है ? अमरनाथ की मां ने कहा, बहिन जी ! आज मेरा अमरनाथ अर्ध अवकाश मिलने पर घर आया, तो मुझ से रोटी मांगी पर रोटी रात्री की बची नहीं थी तो अमरनाथ क्रोध से लाल पीला होकर स्कूल चला गया, उस के चले जाने के पश्चात् मैने घी मसाला डालकर परौंठा बनाया, स्कूल में ले गई, कितनी मिन्नत समाजत कीं उसके मास्टर जी को भी कहा कि इसे छुट्टी दो, रोटी खा लेवे, पर वह मास्टर जी का कहना भी नहीं मानता, कहता है मुझे भूख नहीं है, बहिन जी ! आप कृपा कर यह मेरी थाली में परौंठा है इसे ले जाकर किसी प्रकार अपने ज्योति को बुला कर उसके साथ अमरनाथ को खिला आवें। देवी ने थाली उठाई, स्कूल के द्वार पर जाकर अपने ज्योति को बुलाया; वह दौड़ता हुआ आया तो माँ ने कहा; बेटा ! मै आज परौंठा बनाकर तुम्हारे लिये लाई हूँ, पर तुम पहले एक काम करो, वह यह कि तुम अमरनाथ को भी अपने साथ बुला लो. क्योंकि वह तुम्हारा पड़ौसी है, यदि आज तुम उस को खिलाओगे, तो कल तुम्हें भी वह खिलायेगा, अब ज्योति दौड़ता हुआ स्कूल के कमरे क भीतर गया, अमरनाथ से कहा मेरी माँ रोटी लाई है आओ मिल कर खायें, अमरनाथ भूख से व्याकुल तो था ही, तत्काल उठ कर ज्योति की माँ के निकट पहुँच कर ज्योति के साथ बैठ कर खाना खाया, अब पड़ोसिन थाली खाली अमरनाथ की मां के पास लाई, तो वह प्रसन्नता से फूली नहीं समाई मानो जान में जान आ गई।

प्यारे ! अब तुम अपना निरीक्षण करो, यदि तुम बाजार से गन्डेरी लो तो घर के भीतर पहुँचने से पहले खा जाओगे । यदि बदकिस्मती से दो चार गंडेरियां माॅ को दे देवें भी. तो वह जेब में रखेगी जब तुम फिर घर जाओगे तो तुम्हारे मुख में दे देवेगी, क्यों ऐसा ठीक है या नहीं। हां महाराज।

प्यारे ! पाठकगण ! एक कुत्ता जो मालिक के जूठे सूखे टुकड़े

टुकड़े खाता है जब मालिक सामने आता है वह दुम हिलाता दौड़ता हुआ मालिक के चारों ओर परिक्रमा करता और सर झुका माथा पांव पर रख कर चूमता है और चित लेट कर मुख सामने कर के पेट दिखाता और यूं हींकता है कि तू मेरा मालिक है, धन्यवाद करता है; और संकट पड़ने पर अपने प्राण तक मालिक पर न्योछावर कर देता है। अब तुम बताओ यदि तुम को माता पिता बुलायें, राम इधर आओ 'तो तुम कहो कि मैं नहीं आता' तो इस अवस्था में तुम अच्छे हुये या कुत्ता। यह शब्द सुनकर रामलाल जोर २ से रो पड़ा और चरणों में पड़कर कहा महाराज! आपने मुझे वास्तविक ज्ञान देकर कृतार्थ किया है

प्रत्यक्ष घटना

प्यारे! एक सेठ एक सहस्र रुपये की थैली लेकर घोड़े पर सवार होकर चला। मार्ग में जाते कूप चल रहा था; घोड़ा पानी पीने को मुड़ा तो सेठ कुआं पर पहुँच कर स्वयं उतर पड़ा; रुपये की थैली कूप पर रख दी; स्वयं पानी पिया और घोड़े को पानी पिला कर उस पर सवार हो गया घोड़े को चलाया पर अब कुत्ता घोड़े को आगे बढ़ने नहीं देता और पांव के बल खड़ा हो कर सेठ को आगे बढ़ने से रोकता है सेठ ने कुत्ते को कई बार प्यार से मार्ग रोकने से पुचकारा, पर वह कुत्ता बार २ रोकता है। अब सेठ ने यह सोचा; कि कुत्ता पागल हो गया है पिस्तौल साथ था; तत्काल कुत्ते को गोली लगा दी।

कुत्ता चीख मार कर भूमि पर गिर पड़ा। सेठ घोड़े को दौड़ा कर मकान पर जा पहुँचा; देखा तो रुपये की थैली नहीं है। फिर घोड़े पर सवार हो पीछे दौड़ा तो देखा मार्ग में कुत्ता तो नहीं पड़ा है पर उस की घसीट पड़ी है। जब वह कुएं पर पहुँचा तो क्या देखा; कि कुत्ता रूपते की थैली पर मुँह रखे मालिक की प्रतीक्षा कर रहा है। अब जब सेठ थैली के निकट पहुँचा तो कुत्ते

ने एक चीख मारी और हमेशा के लिए चल बसा। सेठ कुत्ते की सेवा तथा उसकी कृतज्ञता को देख कर रो पड़ा पश्चाताप करने लगा।

हरि सिंह नलवा

कहते हैं कि हरि सिंह जब युवक होकर जीविका कमाने लगा तो एक दिन मां से प्रार्थना की; अब मैं कमाने लगा हूँ, मुझे आप सेवा बताओ; मां ने सुनी अनसुनी कर दी। इसी प्रकार मां से कई बार और कई दिन कहता रहा। एक दिन मां ने कहा-बेटा! अच्छा! तुम आज रात्रि को मेरी सेवा करना। अब जब रात्रि हो गई सोने का समय आया तो हरि सिंह ने माँ से फिर प्रार्थना की, कि आज प्रातः आपने कहा था कि आज रात्रि को मेरी सेवा करना; अब रात्रि हो गई। सोने का समय आगया है आप ने सेवा न बतलाई। माँ ने कहा, बेटा! सेवा का समय भी अब आया है। मैं भूली नहीं हू। हरिसिंह ने कहा तो अब बताओ।

माँ ने कहा बेटा! और तो कोई सेवा नहीं, केवल आज तुम रात्रि भर मेरे साथ सो जाओ। हरिसिंह यह सुनकर बड़ा प्रसन्न हुआ कि यहां भी सोना था मां के साथ भी सोना ही है। बस मां के साथ लेट गया जब हरिसिंह को नींद आ गई तो माँ ने धीमी २ आवाज से पुकारा बेटा! बेटा! हरिसिंह चौका; नम्रता से कहा; हाँ मां जी! तो मां ने कहा बेटा! प्यास लगी है; तो हरिसिंह तत्काल उठा पानी का गिलास भर लाया। कहा लो मां जी, मां ने गिलास ले लिया कमरा में अन्धेरा ही था। मुँह से लगा गिलास पानी को एक तरफ उंडेल दिया हरिसिंह फिर माँ के निकट लेट गया। अब जब गहरी नींद आई तो फिर मां ने कहा बेटा! बेटा! पुत्र ओ पुत्र! हरिसिंह चौका अशान्त होकर कहा—क्या है माँ? मां ने प्रेम से कहा बेटा! पानी चाहिये। हरिसिंह उठा; सर्दी अधिक पड़ रही थी; ठिठरता हुआ पानी का गिलास भर लाया माँ से कहा, ले पानी। माँ ने पानी का गिलास लेकर मुँह से लगा कर एक तरफ उंडेल दिया। हरिसिंह फिर साथ

लेट गया । जब गहरी निद्रा आई तो फिर मां ने जगाया । प्यारे हरि; प्यारे हरि! ओ लाल! तो हरिसिंह चौंका क्रोध अवस्था में कहा; क्या है मां, सोने भी देती है कि नहीं। मां ने कहा बेटा क्या करूँ प्यास तंग कर रही है; पानी चाहिये। हरिसिंह कुढ़ते हुये उठा पानी का गिलास भर लाया और माँ से कहा, यह ले और कहा मुझे सारी रात व्याकुल कर दिया। मां ने पानी का गिलास लिया; कुछ हरिसिंह के बिस्तरे पर गिरा दिया। जब हरिसिंह सोने लगा तो बिस्तरा गीला था तो कहने लगा कि देख यह अपना स्यापा। सारी रात निद्रा नहीं करने दी; अनेकों अपशब्द मुख से निकले। अब माँ ने कहा बेटा तेरी सेवा हो चुकी। जा अपने विस्तर पर लेट जा, और कहा बेटा! यह तो अमृत जल ही है; मैं तो तेरे पेशाब तरबतर; टट्टी से भरे हुए कपड़े उठाकर अपने नीचे कर लेती थी; सूखे साफ सुथरे कपड़े तेरे नीचे बिछाती थी; तब मुझे शान्ति आती थी और जब तुझे कोई दुःख होता था तो सारी २ रात तेरे सुख के लिये गुजार देती थी और तुझे थपकियां; लोरियां दे दे कर सुलाती थी। यदि मेरे रोटी खाते समय जब तू रो पड़ता था, तो अपनी रोटी खाते तुझे गोद में ले लेती फिर रोटी खाती। उस समय पाखाना. पेशाब तू कर देता; तो ऐसी अवस्था में परवाह तक न करती थी पर तुझे दुःखी होता देख कर सहन न न कर सकती थी, और जब तू तोतली वाणी से बोलता, पूछता मां; मां, यह क्या है तो मैं हँस कर कहती बेटा कव्वा है। फिर पूछता मां, मां वह क्या है तो बार २ पूछने पर भी मैं तेरी तोतली वाणी को वाणी को सुनकर फूली न समाती और कहती, लाल यह कव्वा है। इसी प्रकार तू बार बार पूछता, तो मैं तंग न होकर कहती कव्वा है।

प्यारे! आज ज़रा माँ बेटे से यह कह दे बेटा! शहर जाते समय मेरा यह काम करके आना, तो उत्तर मिलता है, हाँ हाँ कर आऊंगा। यदि दूसरी वार माँ यह कह देवे बेटा! मेरा काम भूल न जाना जरूर कर आना, तो क्या उत्तर मिलता है हाँ हाँ सुना है सिर खा गई है। एक बार जो कहा है कर आऊंगा वार २ कर आना काम कर, आना कह रही है।

आहा ? धन्य हो माता तेरे गुण कहां तक गाऊँ मैं बड़ा कृतघ्न हूँ ।

माता	की सेवा	न करने से	मिलती है	—मूढ़ बुद्धि
पिता	,,	,,	,,	—मन्द बुद्धि
गुरु	,,	,,	,,	—कु बुद्धि
अतिथि	,,	,,	,,	—दुर बुद्धि
परमेश्वर	,,	,,	,,	—राक्षस बुद्धि क्रूर बुध्दि निर्दैत्या बुध्दि

इन सब से बचने का मुख्य साधन गायत्री जाप ही उपाय है

अभिवादन का फल

मनु महाराज कहते हैं ।

अभिवादनशीलस्य नित्यं बृद्धोपिसेविनः ।
चत्वारि तस्य वर्धन्ते आयुर्विद्या य शो बलम् ॥

अर्थ-जो माता पिता, आचार्य, विद्वान् को नमस्कार करता है और नित्य बड़ों की सेवा करता है उसकी चार चीजें बढ़ती हैं आयु, विद्या, यश, बल ।

रामलाल-वह कैसे ।

महात्मा-बेटा ! देखो ! जब बालक माता के चरणों में शीश झुकाता तो अनायास माता पिता के मुख से यह आर्शीवाद निकलती है "चिरंजीव रहो और लाखों पर तुम्हारी लेखनी रहे ! कोसी बा (झुलसा देने वाली वायु) न लगे, जीते रहो ।" माता का यह आर्शीवाद सच्चे हृदय से निकलता है जिसमें प्रेम भरा होता है और यह मानव उत्थान का अचूक साधन है । माता-पिता, गुरू परमेश्वर की सेवा से क्या फल मिलता है ।

माता से मिलता है प्यार,
पिता से मिलता है अधिकार,

गुरू से मिलता है सत्कार,

माता की सेवा करने से मिलती है—यज्ञ बुध्दि
पिता ,, ,, —तीव्र बुध्दि
गुरु ,, ,, —सूक्ष्म बुध्दि
अतिथि ,, ,, —पवित्र बुध्दि
परमेश्वर ,, ,, —देव बुध्दि
राष्ट्र ,, ,, —यश और नेतृत्व
गऊ ,, ,, —तेज और ब्रह्म ज्ञान

और देखिये शास्त्रकार कहते हैं:—

विद्या ददाति विनयं विनयाद्याति पात्रताम् ।
पात्रात्वाद्धनमाप्नोति धनाद्धर्मं ततः सुखम् ॥

अर्थ-विद्या विनय देती है। विनय-नम्रता से ही मनुष्य अधिकार प्राप्त करता है, योग्य बनता है। योग्य पुरुष ही धन प्राप्त करता है। फिर धन से धर्म लाभ प्राप्त करता है। धर्म कर सुख पाता है।

दृष्टान्तों से इस सिद्धान्त को समझाते हैं।

(१) यहां बिजली का बल्ब लगा है। उसमें प्रकाश कब आवेगा ? जब बल्ब का स्विच नीचे करेंगे। विद्युत कहां से निकलती ? जल से। जल का गुण है नम्रता।

मनुष्य की उत्पत्ति जल से होती है। रज-वीर्य जल होताहै। बालक माता के गर्भ में दस मास पर्यन्त जल की थैली में रहता है तो सिर नीचे, टाँगें ऊपर होती हैं जब जन्म लेता है तो माता के चरणों में सिर नमस्कार करता हुआ आता है। वह नमस्कार उस का जन्म सिध्द कर्त्तव्य है इसके द्वारा यह संसार पर विजय पाता और परमात्मा को प्राप्त कर सकता है, इसके विपरीत पशु गर्भ से सदैव पांवों के बल आता है यह जन्म से ही भूमि पर नाक रगड़ कर भोग प्राप्त करता और खाता है यदि मनुष्य का बालक किसी और अंग द्वारा बाहर आये तो उसे डाक्टर लोग काट र

कर बाहर निकालेंगे। और सुनोः—

नन्नेह बीज (एक से अनेक)

(२) एक नन्नहा सा बीज जिसको कृषक भूमि माता की गोद में समर्पण कर देता है। तो उसकी मूल पाताल में और तना बाहर आजाता है शाखायें- पत्ते पुष्प तैयार होकर हरे रंग की गोली बन जाती है। तो वह गोली माता के चरणों में नमस्कार करती है तो माता उसमें रस भरना आरम्भ कर देती है। ज्यों २ गोली नीचे झुकती जाती है गोली बढ़ती जाती है। अन्ततः गोली को रूपवान बना देती है और वह नारंगी बन जाती है। अब उसका स्वागत कैसे करेंगे। थाली में रख कर, मेज पर रखेंगे। उसको काटेंगे तो उस में दस बारह फांके होंगी पर रस में भरी हुई, मन को आल्हाद देने वाली आँखों में प्रसन्नता दिखाने वाली, फिर देखो एक एक फांक में तीन २ दाने, गोया बारह फांकों में ३६ दाने हुए। अब उस पेड़ को देखो तो सैकड़ों की संख्या में नारंगियाँ हैं। तो गोया सहस्त्र की संख्या में बीज बढ़ गये। अब सोचो एक बीज बोया, सहस्रों की सख्या में कब बढ़ा। इस का उत्तर स्पष्ट है कि माता के समर्पण होने से बढ़ा। यह है नमस्कार। किसी ने कहा है।

ऊंचे पानी न टिके, नीचे में ठहराये ।
नीचा हो तो भर पिये, ऊंचा प्यासा जाये ॥

आहंकार (ज्वार बाजरा)

ज्वार, बाजरा का पेड़ भी माता की गोद से उत्पन्न हुआ पर फल आने पर अकड़ गया। अब उस की गति कैसे होती है। पौदे को सिर से दरांती से काटा जाता है फिर धूप में डाल कर बैलों के पांवों से रोंदा जाता है और चक्की में पीस कर आग पर पकाया जाता है।

फारसी के एक कवि ने कहा है:—

तकब्बुर अज़ाज़ील रा खव्वार कर्द ।
बाज़िन्दाने लानत गरिफ़्तार कर्द ॥

अर्थ-अभिमान ने अजाजील को बहुत तंग किया और धिक्कार के पाश से जकड़ दिया ।

(बरगद)

(३) बरगद का वृक्ष कितना विशाल होता है मानो गगनचुम्बी है परन्तु बीज इतना तुच्छ होता है कि गणना में भी न आये । यदि अन्धेरी चल पड़े तो कोई शाखा कहीं, कोई कहीं कट कर भूमि पर आ पड़े । इस के विपरीत एक बेल को देखो जो माता की गोद में बिछी हुई है । आधा २ मन के मतीरे, खरबूजे तरबूजे, पेठे, काशीगोले लगे हुए हैं, पवन अथवा अंधेरी कितनी ही वेग से चले, क्या मजाल कि कोई पत्ता भी उखाड़ सके, यह क्यों, यह बेल माता की शरण में है । नमस्कार अवस्था में फलों से लदी हुई है ।

(जल)

(४) मनुष्य गर्मी से अशान्त है, कब शान्त होगा जब जल मिलेगा, पर जल कब शान्ति देगा जब कि अशान्त व्यक्ति नम्रता को धारण करेगा । जल का गिलास हाथ में है जब तक जल की न्याईं जल को प्राप्त करने के लिये सर को न झुकायेगा तब तक जल अन्दर नहीं जायेगा, शान्ति नहीं पायेगा । अथवा सर को पीछे करके ऊपर से मुख में जल डालेगा या मुख को जल के आगे नमस्कार करनी होगी ।

(५) नलके से जल निकालो, कब निकलेगा, जब नलके की हत्थी नीचे होगी । भले कूप से जल निकालो तो झुक कर जल निकालना पड़ेगा ।

(६) परमात्मा ने आंख में मांस का गोला नहीं रखा, किन्तु जल

बिन्दु है । जल का गुण है झुकाव की ओर जाना, जब तक आंख

पांव को नमस्कार न करे वह आंख २ कहलाने के योग्य नहीं। पग २ पर ठोकरें खायेगी।

(७) जब तुम बात भूल जाओ-फिर यदि स्मरण करनी पड़े तो कैसे स्मरण होगी, तब जब सिर को नीचे करोगे अथवा एक कोने की ओर झुकाओगे तब याद आयेगी।

(८) जब दो मल्ल आपस में युद्ध करते हैं तो एक दूसरे को गिराने के वास्ते कौन सा दाँव पेच सफल बनाता है वह टाँग का पकड़ना सिर ताकने से सफलता नहीं होती।

(९) किसी बड़े पेड़ को गिराना चाहो; यदि उस पेड़ की शाखायें आदि पहले काटना शुरू करें। तो कई दिन लग जावेंगे। यदि उसकी मूल में नमस्कार (कुलहाड़ा) चलाओ तो सहसा नीचे मुँह के बल आकर गिरेगा।

(१०) सूर्य चन्द्र-जल इत्यादि देवता कहतलाते हैं। यह क्यों कर यूं सूर्य अपनी किरणें झुक २ कर भेजता है, वायु झुक २ कर आती है। जल देवता सदैव झुकाव को स्वीकार करता है, पर्वतों पर वर्षा हो तो सदा सम भूमि में जा कर हरा भरा कर देता है। जहां पर नम्रता होगी वह खेत हरा भरा रहेगा।

(११) दीपक जलता है, प्रकाश देता है, पर उस के नीचे अंधेरा रहता है (लोकोक्ति है)।

दीपक तले अन्धेरा-उसका कारण, दीपक की बत्ती का अकड़ा हुआ होना है। अर्थात् उस में। अहंकार की प्रवृत्ति का भाव निहित हुआ है। इसके विपरीत बल्ब को देखो उसकी बत्ती नीचे को होती है और सर्वत्र प्रकाश करती है।

(१२) किसी महान् महात्मा को निमन्त्रण देना हो तो उन्हें प्रार्थना की जाती है—महाराज! हमारे घर पर पदार्पण कर पवित्र करें।

(१३) मैं आपको दस वर्ष पश्चात मिलता हूं आप से पूछता हूँ क्या आपने मुझे पहचाना, परन्तु आप मुझे भूले हुए हैं, दूसरी बार फिर मैं पूछता हूं क्या आप ने मुझे नहीं पहचाना तो आप सिर-

काल सर नीचे कर लेते हैं थोड़ी देर पश्चात् हंसते हुए आप कहते हैं, हाँ २ अमुक स्थान पर मिले थे अमुक २ बातें हुईं थीं अब सोचो यह दस वर्ष की भूली बात कब याद आई, प्यारे सर नीचा करने पर ! नमस्कार करने पर—

महाभारत

(१४) जब अर्जुन भगवान् श्री कृष्ण चन्द्र जी की सेवा में युद्धार्थ सहयोगार्थ गया तो भगवान कृष्ण निद्रा में थे। अर्जुन चरणों की ओर बैठ गया और दुर्योधन पहले आकर सिर की ओर बैठा था भगवान् कृष्ण की जब निद्रा खुली तो पहले पांव की ओर बैठे हुए अर्जुन पर दृष्टि पड़ी। पूछा, कैसे आये ? तो अर्जुन ने प्रार्थना की महाराज ! हमारी सहायता करो। दुर्योधन ने कहा इधर देखो, पहले मैं आया बैठा हूं। श्री कृष्ण ने कहा—मैंने तो पहले अर्जुन की ओर देखा है तो दुर्योधन ने अहंकार में आकर कहा—पूछो अर्जुन से, पहिले मैं बैठा था कि नहीं ? तो भगवान कृष्ण ने कहा अच्छा, आप पहिले आये हैं पर मैंने दोनों की सेवा करनी है मैं दो प्रस्ताव करता हूँ पहले एक आप चुन लो। क्योंकि पहले आप आये हैं और कहा एक ओर मेरी सशस्त्र सेना और दूसरी ओर मैं निशस्त्र, दुर्योधन ने कहा कि मुझे सशस्त्र सेना चाहिये। अर्जुन ने कहा कि मुझे तो केवल आपकी आवश्यकता है। अब इतिहास साक्षी है कि अन्त में जीत अर्जुन की ही हुई-चाहे दुर्योधन के पास ११ अक्षौहिणी सेना थी। इस का एक मात्र कारण अर्जुन का श्री भगवान के चरणों में प्रति नमस्कार। प्यारे ऊंचे २ पर्वत पर चढ़ने के लिये सिर धड़ को कमान की नाईं झुकाना पड़ता है तभी जाकर पर्वत पर चढ़ जाते हैं। जब ऊपर चढ़ जाता है, तो चारों ओर के दृश्य देख सकता है। और सारा जगत उसको देख सकता है।

(१५) बन्दूक से तभी निशाना सफल हो सकता है, जब निशाना बाज बन्दूक के सिरे को हृदय पर रखेगा। तत्पश्चात फिर आंख को

झुकायेगा। बन्दूक की मक्खिका को ठीक उस निशाने की सीध में रखेगा, तब निशाना पूरा लगेगा। अकड़ा हुआ मनुष्य निशाना नहीं लगा सकता। सफल नहीं हो सकता।

(१६) आप ने देखा होगा, कि प्रायः मल्ल युद्ध में उतरने से पूर्व अपने पूर्वजों को नमस्कार कर के जाता है। जब वह सफलता प्राप्त कर के आता है तो फिर उमड़ते हुए पूज्य के चरणों में आकर नमस्कार करता है। कारण यह कि उसकी आशीर्वाद से ही सफलता प्राप्त हुई अतः धन्यवाद देता हुआ कृतज्ञता प्रगट करता है। प्यारे यह कतिपय उदाहरण नम्रता की सफलता के आपके सम्मुख मैंने रखे। मानो सफलता की कुञ्जी नम्रता है।

(१७) कोई मनुष्य किसी भी पवित्र स्थान पर जावे, तो क्या पहिले उस स्थान पर उसका सिर आगे होगा अथवा पाओं। पहिले इस स्थान को चरणों से पवित्र करेंगे। गोया सिर की रक्षा पाँव से होती है।

आप सन्ध्या करते हुए कहते हो:—

ओं तपः पुनातु पादयोः सत्यं पुनातु पुनः शिरसी।

चन्द्र देवता

सत्य की रक्षा तप से होती है। तप पाँव में है। आप देखा करते हैं कि अमावस्या की घोर रात्रि को चन्द्रमा का चिन्ह नजर नहीं आता। जैसे विपत्ति में [अन्धेरे में घिरा हुआ] मनुष्य त्राहिमाम् २ करता है इस प्रकार चन्द्रमा भी बिलबिलाता है। सूर्य भगवान् को पुकारता है। आखिर उस की शरण में धीरे २ पग बढ़ाता है तो आप देखते हैं अमावस्या की दूसरी रात्रि को चन्द्रमा को जो एक लकीर की न्याई प्रकाश मिलता है। वह कब मिलता हैं जब पूर्व दिशा (सूर्य की दिशा) में नम्र हो कर चलता हैं! दूसरे दिन उस से दुगुना प्रकाश पाता है तो द्वितीया का चन्द्रमा कहलाता है ज्यों २ यह सूर्य की ओर पग बढ़ाता जाता है प्रकाश अधिक प्राप्त करता जाता है। वह पूर्णमासी के दिन

प्रकाश से पूर्ण हो जाता है । इस की पूर्णता मे सागर उछल २ कर जल थल कर देता है और सारा संसार इस की पूर्णता से फूला नहीं समाता, पर इस सफलता को जिस नम्रता और शरण में आने से प्राप्त किया उस अवस्था को चंद्र भूल जाता है अहंकार में हो जाता हैं फिर वह पश्चिम की ओर पग बढ़ाता है। पश्चिम दिशा अंधकार की होती है । अब चन्द्र देवता का सर थोड़ा २ काटा जाता है । प्रकाश से रहित और अंधकार से घिरा जाता है। अन्ततः सारा अन्धकार ही अन्धकार छा जाता है। यह नम्रता के करने अथवा न करने का फल चांद की घटना द्वारा देख लिया। पश्चिम दिशा में सूर्य डूबता है पूर्व दिशा प्रकाश की है । वर्तमान में अवस्था हमारी पश्चिम दिशा की है।

१—नम्रता के बिना सब कार्य निसतेज है।

२—भक्ति ज्ञान बिना नम्रता के मृत्यु हैं।

३—नम्रता वढ़ पीपल की जड़ें होती हैं जड़ें नम्रता हैं जितनी वृक्ष की जड़ें नीचे जावेंगी उतना वृक्ष फलीं भूत दीर्घ आयु वाला होगा।

शौनक मुनि ऋक्-प्रातिशाख्य में लिखते हैं—

पारायणं वर्तयेद ब्रह्मचारी गुरुः शिष्ये भ्यस्त दनुव्रतेभ्यः ।
अध्यासीनी छिशमेकां प्रशस्तां प्राची मुदी चीम पराजितांवा ॥
एकः श्रोता दक्षिणतो निषीदेद् द्वौवा भूयांसस्तुयथावकाशमं।
ते धीहि भो इत्यभिचो दयन्ति गुरु शिष्या उप संग्रह्य सर्वे ॥

अर्थ—गुरु स्वयं ब्रह्मचारी रह कर ब्रह्मचारी शिष्यों को वेद का अध्यायन करावे । प्राची, उदीची व अप्राजिता में स्वयं ऊंचे आसन पर विराजें। और दक्षिण में एक या दो श्रोता शिष्य व अधिक स्थान हो तो अधिक भी वैठें। सव शिष्य गुरु के चरणों में नमस्कार करें अधिहि भी वैठें व शिष्य गुरू के चरणों में नमस्कार करें।

प्रश्न-एक आर्य-समाज के एक महाशय जी ने आकर मुझ से कहा कि मनुष्य के आगे सर झुकाना तो मूर्ति पूजा ही होगी, आप सिद्धांत के विरुद्ध प्रचार करते है।

उत्तर-नम्रता के सम्बन्ध में अनेकों दृष्टान्त इस पुस्तक में पहले प्रकाशित कर आया हूँ। पर उनके पढ़ने पर भी सन्तुष्टि नही हुई, तो प्यारे और सुनो, नम्रता का स्थान हृदय है, परमातम देव की अनेकों विभूतियां हैं, मगर मुख्य पाँच हैं:—

१	२	३	४	५	
ज्ञान	ध्यान	दान	ईमान	प्राण	अगर इन पांचों में नम्रता नहीं है तो इसका

फल-कोरा, छोर, खोटा, छूटा, टूटा, होगा।

—मत ऊंची मन नीवां, शिव दी संगी थीवां।

—हम तो बुलबुले जल के ठहरे हैं, गहरे गम्भीर शब्द सुनाते हैं। मत ऊंची मन नीवें वाले शाह को संग में पाते हैं॥

जिस व्यक्ति का हृदय उदार, लचकदार पिघला हुआ हो उस की साक्षी उस की आँख दिया करती है, लज्जावान और आँसू से तर रहती है जब मस्तक में झुकाव, नम्रता होगी उस की जबान वाणी गवाही देगी, हाथ गवाही देंगे। मस्तक के झुकाव से मुखालिफ की जबान भी बन्द हो जाती है। यह मिकनातीसी जौहर इन्सान में हैं प्रभु की देन है। जो मनुष्य जन्म से हो नम्रता अपने साथ लाया है यही प्रभु की भेंट कर उसे प्राप्त कर सकता है अन्य कोई वस्तु मनुष्य की अपनी नहीं जो प्रभु भेंट कर उसे और उसे प्राप्त करें।

घटना

(१) स्वर्गीय श्री स्वामी सालिगराम जी महाराज गौशाला का प्रचार करते थे, एक प्रसिद्ध सन्यासी थे, उन के पास रेल में सवार होने को दूसरे दरजे का टिकट था जब गाड़ी के डब्बे में सवार होने लगे तो उस डब्बे में एक पठान परिवार सहित बैठा था उसने अन्दर आने से मना किया, तो स्वामी जी ने कहा कि मेरे पास दूसरे दरजे

का टिक्ट है। पठान ने कहा कि और डब्बा में जाओ, अन्दर मत आओ। स्वामी जी ने कहा कि दूसरे दरजे का और डब्बा नहीं है और उसी डब्बा में सवार होने लगे। जूहीं कमरा में पांव रक्खा, तो पठान ने क्रोध में आकर तलवार निकाली, और आक्रमण करने ही लगा था कि स्वामी जी उसके पांव में पड़ गये तो पठान के हाथ से तलवार गिर गई और वह थर २ कांपने लगा. और स्वामी जी को झट उठा छाती से लगाया, फिर चरणो में पड़कर जार जार रोने लगा, कर जोड़ क्षमा मांगी और कहा धन्य हो महाराज! आप की सहन शक्ति और नम्रता। तू कामिल गुरू है, तू ने मेरे साथ वह भलाई की है जिस का धन्यवाद मैं इस ज़वान से, हृदय से नहीं कर सकता हूँ, तू ने मुझे पशु से इन्सान बनाया, तू ने मेरी जिन्दगी वचाई, नहीं तो मैं अपने इस करम के करने से फाँसी पर लटकाया जाता, जिससे मेरा परिवार नष्ट भ्रष्ट हो जाता; और वह जार २ रोता रहा, स्वयं नीचे बैठा ऊपर स्वामी जी को बिठलाया; अब बोलो कौन सा खन्जर स्वामी जी ने चलाय! ।

प्यारे ऐसी अनेकों घटनाएं आँखों के सामने गुजरीं, पर जरा अमल करके देखो; फुटवाल की तरह अकड़ न रहो जैसे अकड़ी हुई फुटवाल इधर उधर से चोटें खाती रहती है कोई पाऊं से कोई हाथों से कोई कंधे से, गरजे कि अंग २ चोटें लगाते हैं ऐसी ही तुम्हारी गती होगी, मनुष्य के अंग २ ढीले और झुके हुए होते हैं जब मनुष्य मर जाता है तो सभी अंग अकड़ जाते हैं। वस अगर झुके रहोगे तो जिन्दा, वरना अकड़े रहोगे तो वमिसले मुर्दा होगे। अब आगे सुनो विचारो और अमल करो।

(१) जब तुम्हारा कोई आदर करे तो तुम उस का आदर करो। छोटा झुक कर नम्र हो कर आदर का अजहार करता है।

बड़े का छोटे को आशीष दे कर, मुख से मीठे वचन बोल कर या हाथ फेरना ही आदर का निशान है जो कोई व्यक्ति इधर न वचन से, न हाथ से करे, वैसे अकड़ा रहता है तो समझो वह

निरादर कर रहा है। और यह निरादर भी होता है जब वह अपने आप को बड़ा मान लेता है, यही अभिमान ही दुर्गुण है।

(२) कोई किसी के शरीर को झुकता है तो वह मनुष्य पूजा है,

उत्तर-दोनों भूल पर हैं। यदि कोई किसी के गुण को झुकता है तो वह गुण प्रभु की दात है। गोया वह प्रभु के गुण का आदर और मान कर रहा है और वह भी (बड़ा) इसी लिये झुकता है कि छोटे में निर्अभिमानता का गुण है। यह गुण भी प्रभु की दात है। इस लिये वह बड़ा भी झुकता है तो समझो वह भी देव पूजा कर रहा है। शरीर, शरीर का आदर तब करता है जब स्वार्थ हो एक धनी का लोग आदर करते हैं उस के शरीर का धन के कारण से, धन जड़ है शरीर जड़ है स्वार्थ भी जड़ता है, जब धनी के पास नहीं जायगा और न कोई उसे पूछेगा, क्योंकि धन शरीर की पैदा की हुई वस्तु है आत्मा की नहीं है, बुद्धि के द्वारा पैदा करता है तो स्वार्थी बुध्दि झुकने पर मजबूर करती है जब धन न रहे तो बुध्दि भी उस से मुंह फिराती हैं क्यों कि स्वार्थ की जड़ता नहीं रहती।

धनी जब किसी को धन देता है तो उस के वापस वसूल हो जाने पर ऋण उतर जाता है। मगर ज्ञानी जब किसी को ज्ञान धन देता है वह वापस नहीं उतरता, लेने वाले के पास वैसे ही ऋण बना रहता है जब वह उसे विस्तृत कर के देता है हर जगह अपने गुरु के काम को फैला देता है, यही गुरु को देना है मगर फिर भी वह गुरु के पास दिया नहीं समझा जाता, शास्त्र कारों ने लिखा है 'विद्या ददाति विन्यं' अर्थात विद्या नम्रता सिखाती है।

माता, पिता गुरु और ईश्वर का सम्बन्ध कब टूटता है।

माता पिता का सम्बन्ध तब टूटता है जब उनका तृष्कार निरादर हो और यह होता है क्रोध्द (गुस्सापन) के कारण।

गुरु का सम्बन्ध टूटता है आज्ञा के भंग करने से, यह तब होता है

जब शिष्य में अभिमान आ जावे, और गुरु की निन्दा करने लग जावे या उनकी निन्दा सुनने में खुश हो दिलचस्पी ले।

परमेश्वर से सम्बन्ध क्यों टूटता है, जब स्वार्थ प्राईण बुध्दि हो जावें।

माता पिता और गुरु से सम्बन्ध तोड़ने का फल

शरीर में आंख का सम्वन्ध जब सूर्य नारायण से टूट जावे तब उस में जयोति नहीं रहती और कान का सम्वन्ध जब आकाश से टूट जावे तब शब्द सुनाई नहीं देता। यह सम्वन्ध टूटना अर्थात आंख कान में विकार आ जाना है ऐसे ही मनुष्य का या साधिक मनुष्य, सम्बन्ध जब माता पिता से तोड़ देता है उनका तिरस्कार निरादर करता है तब उन की अप्रसन्नता से आर्शीवाद न पा कर अपनी धन सम्पत्ति और कमाई में वह बरकत और सुख नहीं पा सकता, चाहे कितनी सम्पति क्यों न हो, और जब गुरु से सम्बन्ध तोड़ता है उसकी आज्ञाओं का भंग करता है तब अज्ञान और अश्रध्दा पैदा होकर संसार के दुखों से छुड़ाने वाला ज्ञान छीना जाता है, और जब प्रभु से सम्बन्ध तोड़ देता है तब दया और न्याय उस में नहीं रहता उसकी की हुई भक्ति नीरस हो जाती है। कवि कहता है—

है अगर बन्दा प्रभु का, तू सदा कर वन्दगी।
ले प्रभु का नाम तू जब तक है तेरी जिन्दगी॥
शुद्ध कर हृदय पापों से न रहे गन्दगी।
अंत के दिन ता नही तुझको कोई शरमिन्दगी॥

अब दूसरी बात, वेद ने आज्ञा की कि अपने पितरों को प्रसन्न करो। वह कैसे-पूर्व इसके कि मैं उपनिशद शास्त्र आदि के प्रमाणों से इस बात को सिध्द करूँ। मैं उन महानुभावों के विचार-सम्मति जो वर्तमान संसार में अमर आत्माऐं मानी जाती हैं क्रम से बतलाता हूं।

माता पिता के प्रति

महानुभावों की सम्मति तथा विचार

(१) रामायण में सन्त तुलसीदास जी लिखते हैं—

सुनु जननी सोई सुत बड़ भागी,
जो पितु मातु वचन अनुरागी।
तनय मातु पितु पोषन हारा,
दुलर्भ जननि यह संसारा।

अर्थात्-वह पुत्र भाग्यवान् है जो अपने माता पिता को अपनी सेवा से प्रसन्न करता है। ऐसा बालक जगत में दुर्लभ होता है।

(२) मनु जी महाराज ने लिखा है।

जिनके माता पिता जीवित हैं, उन को किसी तीर्थ स्थान पर जाने की आवश्यवता नहीं। माता पिता की सेवा से मनोवांछित फल मिलता है।

(३) सिक्ख शास्त्र-भाई गुरुदास जी की वार ३७ में आया है जो पुत्र अपने माता पिता की सेवा छोड़ पूजा, तप, दान, स्नान व शास्त्र अध्ययन करता है। उसके ये सारे पुण्य कर्म निरर्थक हैं। बल्कि वह छली और कपटी है।

(४) कुरान-सूरत बनी इसराईल के रूक तीन में आया है ऐ मनुष्य तेरा रब तुझ को आज्ञा देता है कि तू अपने माता पिता से नेक स्लूक (वर्ताव) कर। जब उनमें से एक या दोनो वृध्द हो जावें तो तू उन को 'हूँ' तक मत कर और न उनको झिड़क, अपितु मधुर वचन कह और बड़ी नम्रता पूर्वक मधुर भाव से उनके सामने झुक कर और अपने रब से उन पर दया करने की प्रार्थना कर।

(५) **इञ्जील, ईसाई शास्त्र**-पोथी मती ४, १५ में लिखा है कि अपने माता पिता का आदर करो जो अपने माता पिता का अपमान करता है उसका संसार में न रहना ही ठीक है।

(६) **हजरत मूसा शास्त्र**-में लिखा है कि जब हजरत मूसा कोह-तूर पर गये तो आकाश वाणी हुई, अन्त में मूसा ने कहा कि मुझे शिक्षा दीजिये, वो सात वार ध्वनि आई, हम आज्ञा देते हैं कि अपने माता पिता से नेक स्लूक करो, इस पर हजरत ने कहा मैं ऐसा करुँगा, फिर आवाज आई सुनो मूसा! यदि तुम्हारे माता पिता, तुम्हारी सेवा से प्रसन्न हो गये तो मैं भी प्रसन्न हूँगा।

(७) **हरजत मुहम्मद साहिब**-से किसी ने पूछा कि संसार में सब से अच्छे स्लूक [वर्ताक] का अधिकारी कौन है, तो उत्तर मिला माता, फिर पूछा तो उत्तर मिला माता, तो फिर पूछा तो उत्तर मिला, पिता।

(८) **मुसलमान शास्त्र**-में लिखा है कि सात स्वर्गों का मार्ग माता पिता के चरणों में है। जो स्वर्ग पाने के इच्छुक हों, वे माता पिता की सेवा करें। और लिखा है कि हजरत मुहम्मद जब युध्द में जाने लगे तो अनेकों युवक आने लगे, एक ऐसा युवक आया जिस की केवल बुढ़िया माता ही पीछे थी तो हजरत ने उसे लौट जाने का आदेश करते हुये कहा कि तुम्हें माता की सेवा करने से जो लाभ होगा वह युध्द में नहीं मिलेगा, माता की प्रसन्नता न होने पर युध्द में सफलता होनी असम्भव होगी।

(९) **महाभारत**-के अनुशासन पर्व में लिखा है कि जो पुत्र माता पिता की आज्ञा, सेवा, आदर न करके उन्हें रुष्ट करता है, वह पशु, योनि गधा, कुत्ता, बिल्ली का जन्म लेता है। जिन्हों ने माता पिता को दुःख दिया है वे निम्नलिखित फल भोगेंगे।

कर्म	फल
माता पिता को आंखें दिखाने से—	अन्धे होंगे।
,, ,, कटु बोल ने से—	गूंगे बनेंगे।
,, ,, पर हाथ उठाने से—	लूले ,, ।
,, ,, को लात मारने से—	लंगड़े ,, ।
,, ,, ,, अधिक मारने से—	कोढ़ी ,, ।
,, ,, ,, भूखा मारने से—	भिखारी ,, ।
,, ,, ,, सेवा न करने से—	निर्धन ,, ।

जो लोग अपने जीवित माता पिता को दुःखी रखते हैं परन्तु उनके मरने पर बड़े बड़े यज्ञ तथा ब्रह्मभोज करते हैं याद रखें वे इस धूर्त पन के कारण दुगुना दण्ड भोगेंगे।

(१०) ऋषि दयानन्द जी महाराज से प्रार्थना की गई महाराज ! आप अपना शिष्य पीछे बना कर छोड़ जावें। जो इस नौका को चलावे। तो ऋषि ने उत्तर दिया कि मुझे निश्चय है कि इस जन्म में मुझे कोई व्यक्ति योग्य नहीं मिलेगा जो इस कार्य को चलावे उस का कारण यह है कि मैं वैराग्य से प्रभावित होकर युवा अवस्था में अपने माता पिता को त्याग, मृत्यु पर विजय प्राप्त करने के लिये योगाभ्यास करता रहा। मैंने गृह त्याग के समय मातृ प्रेम तथा ममता का तनिक भी विचार न किया। पितृ ऋण जो मेरी आत्मा तथा शरीर पर है उसे नहीं चुकाया है। जो मुझे योग्य शिष्य के मिलने के मार्ग में बाधा बन रहा है।

(११) शास्त्र कहते हैं:-मातृदेवो भव, पितृदेवो भव, आचार्यदेवो भव, अर्थात अपने माता-पिता तथा गुरु को देवता जान कर पूजो। अर्थात माता की भक्ति करो। पिता की आज्ञा का पालन करो। गुरू का अनुकरण करो।

(१२) निरुक्तकार-लिखते हैं। वह पुत्र है जो „पु" नाम नरक का और „त्रा" नाम रक्षा करना अर्थात जो माता पिता को नरक

से बचावे।

माता पिता को नरक से कैसे बचाएँ

(१) एक रेलवे गार्ड का छोटा सा बालक था। वह एक दिन पिता के साथ स्टेशन पर आया। पिता के हाथ में लाल और सब्ज झंडी देख कर पूछा। पिता जी आप ये दोनों झण्डियां नित्य प्रति अपने हाथ रखते हैं, और कोई नहीं रखता, हालाँकि और भी कितने ही रेलवे कर्मचारी हैं। तो पिता जी ने कहा, बेटा मेरी ड्यूटी रेल की है; लाल झंडी खतरे की है। यदि रेल आ रही हो लाईन पर कोई रुकावट हो, तो लाल झण्डी दिखाने से रेल रुक जाती है, यात्री और गाड़ी खतरे से बच जाते हैं। यदि यह न दिखाई जाए, तो अनेक यात्री मर जाएं और गाड़ी टुकड़े २ हो जावे। और हरी झण्डी उस समय दिखाई जाती है जबकि लाइन साफ हो, कोई खतरा न हो तो गाड़ी चला दी जाती है। गोया लाल झण्डी खतरे की और हरी झण्डी रक्षा की होती है। बालक यह बात मालूम करके घर चला गया। और खाना खाकर स्कूल चला गया। अर्धावकाश जब मिला तो घर दौड़ता हुआ आया मकान के अन्दर जाकर फिर बाहिर आकर माता से कहा माता जी! मुझे छोटा सा वस्त्र का टुकड़ा चाहिए। माता ने उठाकर दे दिया। फिर कहा, माता जी! मुझे थोड़ा सा लाल रंग भी दे। माता ने लाल रंग भी दे दिया। बच्चे ने इस टुकडे को लाल रंग में रंग दिया, फिर एक लकड़ी का छोटा सा टुकड़ा उठाया, उसको चाकू से चीरा, फिर उसमें यह लाल रंग का टुकड़ा लगाकर भीतर जाकर पिता जी की मेज पर गाढ़ दिया। फिर स्कूल के घण्टे की ध्वनि सुनकर स्कूल चला गया। बच्चे के स्कूल चले जाने के पश्चात गार्ड (बच्चे के पिता) घर आया, खाने के कमरे में गया, तो मेज पर लाल झण्डी गढ़ी हुई देखी तो क्रोध से लाल पीला होकर भोजनशाला में आया धर्मपत्नी

से कहा कि मेज पर लाल झण्डी किसने गाढ़ी है, तो देवी ने कहा कि अभी रामलाल स्कूल से (बालक का नाम) आया था उसने कपड़े का टुकड़ा और लाल रंग मांगा तो मैंने दे दिया वही खेलते २ लगा गया होगा और तो कोई नहीं आया । तो गाडं ने सेवक को स्कूल भेज कर रामलाल को बुलवाया रामलाल अवकाश लेकर घर की ओर सेवक के साथ चला और मार्ग में हर्ष से फूला न समाया, कि घर पर पिता जी कुछ मिठाई खिलायेंगे। परन्तु जब रामलाल पिता के सामने आया और झुक कर नमस्कार की, तो पिता ने आवेश में आकर पूछा, कि रामलाल ! यह लाल झण्डी मेज़ पर किस ने लगाई है। रामलाल ने नम्रता से कहा, मैंने लगाई है। फिर पूछा क्यों लगाई है ? तो रामलाल ने कहा पिता जी ! आज मुझे गुरुदेव ने पाठ पढ़ाया था कि जो मनुष्य मांस खाता है वह भावी जन्म में राक्षस का जन्म पाता है और यह भी कहा कि मांस मनुष्य का प्राकृतिक आहार नहीं है। यह कुत्ता, बिल्ली, सिंह, बघियाड़ आदि जिन की लम्बी २ दाढ़ें और चीरने फाड़ने वाले नख होते हैं और वह जिव्हा से लक २ कर जल पीते हैं उन के सम्मुख रोटी अथवा माँस का टुकड़ा डाला जावे तो वह सर्व प्रथम मांस को अङ्गीकार करेंगे, रोटी नहीं। माँस उनका प्राकृतिक भोग है मानव का नहीं, मानव जो माँसाहार करता है, उसे घी में पका कर अनेकों प्रकार के मसाले लगा कर खाता है, कच्चा मांस वह नहीं सेवन करता है, परन्तु पशु ऐसा नहीं करते। फिर कहा-जो मनुष्य भगवान् की आज्ञा के विपरीत चल कर मांस खाते हैं परमात्मा उनको ऐसा जन्म देते हैं। जिससे फिर उनको घी मसाले की आवश्यकता ही नहीं होती। बल्कि बड़े २ नख और लम्बे २ दांत प्रदान करता है। मानव जन्म नहीं मिलता । न मकानों की आवश्यकता, न वस्त्रों की जरूरत गिद्ध, काक, चील के समान आकाश की सैर करेंगे और उनकी

दृष्टि सदैव मुरदों पर पड़ती रहेगी। और यह कहा—जो लोग

अण्डे अथवा छोटे २ मुर्गी के चूजे खाते हैं उनकी धर्मपत्नियों का गर्भपात हो जाता है अथवा अल्पायु में ही उनकी सन्तान मर जाती है। और जो हृष्ट पुष्ट बकरे का मांस खाते हैं उनके जवान बच्चे मर जाते हैं बल्कि यह बताया कि सर्प विषैला जन्तु होते हुये भी गर्भिणी स्त्री को नहीं डसेगा क्यों कि वह निष्पाप बालक (गर्भस्थ) को डंक नहीं लगाता। परन्तु धिक्कार है उस मानव पर जो हीरा जन्म की उपेक्षा करता हुआ सर्प से भी घृणित कर्म करता है, तो बताओ, भगवान् उस को कौन सा जन्म देगा जो नित्य प्रति अन्डे खाता है। निष्पाप जीवों का रक्त पीकर घर को मसान और पेट को कब्रिस्तान बनाता है। एक छोटा बालक मिट्टी का छोटा खिलौना बनाता है यदि कोई और बालक उसको छेड़े, तो न केवल बालक, किन्तु उसके माता पिता तक भी उसके साथ लड़ने भिड़ने को तैयार हो जाते हैं। पर जो भगवान् के खिलौने का नाश करता है तो क्या उसको भगवान् नाश नहीं करेंगे।

किसी कवि ने कहा है—

दर हकीकत वह दिल नहीं, जिसमें न हो एहसासे दर्द
दीदाए बे नूर है, वह चशम जो पुर नम नहीं।

कवि ने तो कहा है कि दुःखी को देखकर जो अश्रु नहीं बहाता और हृदय में तड़प नहीं उठती वह अन्धा है, परन्तु जो सुखी जीवों को दुःख पहुँचावे और फिर उसके हृदय पर जूँ तक न रींगे तो उसका भविष्य कैसा होगा। आप ही अनुमान कर लो।

गुरु नानक देव ने कहा है—

जो रत लागे कपड़ा, जामा होये पलीत।
जो रत पीवन मानुषा—तिन क्यों निर्मल चीत॥

दूसरी बात गुरु ने कही कि जो शराब पीता है उसका दिल फेल होजाता है उस को कम्पन और वायु रोग होजाता है। मदिरा सेवी की बुध्दि मलीन हो जाती है। अथवा मदिरा पीने वाला माता—

वहिन पुत्री की पहिचान नही कर सकता मुखसे अपशब्द व्यर्थ बकवास करता है। गली कूचे में पड़ा हुआ कुत्ता भी यदि उसके मुख में मूत्र कर जाए तो उसे भी पी जाता है।

(३) तीसरी बात गुरुदेव जी ने यह बताई कि हुक्का सिगरेट पीने वाला मांस खाने वाले से अधिक पापी होता है। कैसे अधिक पापी होता है. वह यूँ बतलाया, कि मांस खाने वाला जिस जीव का घात कर के उस का मांस खायेगा उसी का ही दु:ख फल भोगेगा, पर मांस खाने वाला दूसरे प्राणियों के वास्ते दु:ख कारी नहीं होता, परन्तु हुक्का, सिगरेट पीने वाला प्राणी के प्राणों का नाश करता रहता है। भगवान की शुध्द पवित्र निर्मल वायु को अशुध्द करता है। जैसे अग्नि पर एक मिर्च को डाल दो तो वह मिर्च अग्नि के संग से सूक्ष्म होकर वायु मन्डल में फैल कर प्राणी मात्र के प्राणों को नाश करती है, लाखों मनुष्य तत्काल खाँसने लग जाते हैं और अग्नि पर मिर्च डालने वाले को बद दुआयें तथा गाली देना आरम्भ कर देते हैं, ऐसे ही हुक्का सिगरेट पीने से निको-टीन विष (जहर) उत्पन्न होती है जो मनुष्य मात्र के जीवन को नष्ट भ्रष्ट करने वाली होती है। दूसरा हुक्का सिगरेट के सेवन करने से फेफड़ों पर उसके धुआँ से मैल जम जाती है जिस से फेफड़ों के मसाम बन्द हो जाते हैं फिर फेफड़ों में दुर्गन्ध उत्पन्न हो जाती है; फेफड़ों में पीप पड़ जाती है जिस से तपेदिक, दमां का रोग उत्पन्न हो जाता है और शरीर का रक्त दुर्गन्ध युक्त होकर नाना प्रकार के रोग उत्पन्न हो जाते हैं। प्राणों के नाश होने से वीर्य का नाश होता है। आयु कम होती है। आँख, नाक; मुख नासिका, ज्ञान इन्द्रियों की शक्ति का नाश हो जाता है।

(४) भगवान ने सफेद मोती जैसे चमकते सुन्दर दन्त प्रदान किए और जिव्हा पानी की न्याई शुध्द निर्मल बनाई, यह मुख जिसको ज्ञान का गुरू कहा गया है उन्हें दुर्गन्ध युक्त करता रहता है जो भगवान के उत्तम से ऊत्तम तथा रसीले सुगन्ध युक्त पदार्थों

को मुख द्वारा सेवन करता है और वह सभी दुर्गन्ध युक्त हो कर शरीर के अन्दर जाकर नाना प्रकार के रोग उत्पन्न हो जाते हैं अन्तः करण, मन, बुध्दि का नाश होता है, भगवान के शुध्द पवित्र दिये हुए हाथों से इस दुर्गन्ध युक्त सिगरेट का पान करता है। जरा अपने हाथों को सूंघिये, कितनी बदबू आती है परन्तु नशा में मस्त हुआ विषयी बना हुआ कुछ भी अनुभव नहीं करता। जैसे भंगी की नासिका शक्ति प्रतिदिन टट्टी उठाने से मर जाती है वैसे ही वह मनुष्य निर्लज्ज हो जाता है इस दुर्गन्ध युक्त सिग्रेट वस्तु को आजकल के तालीमयाफ्ता जो अपने आप को सभ्य समझते हैं इस सिग्रेट, हुक्का को अपनी सभा का शृंगार मानते हैं जहां यह सभ्य पुरुष इकट्ठे बैठते हैं वहां पर इस के धुआँ से अंधकार ही अंधकार फैला देते हैं और कै करते रहते हैं ज्यूं ही सिगरेट का धुआँ लिया; तत्काल अन्दर से लौटा कर कै करते रहते हैं निकट बैठे हुये प्राणियों के प्राण को जहर आलूदा करते रहते हैं। दूसरे लोग उनकी इन (सभ्य पुरुषों) की इस बुरी हरकतों से मुंह नाक चढ़ा लेते हैं। दुखी हो कर चुप रहते हैं। यदि उन्हें कुछ कहा जाय तो आंखें दिखाते है। प्यारे ! कुत्ता जहां बैठेगा दुम से स्थान को साफ सुथरा करके बैठेगा पर यह सभ्य पुरुष जहां शुध्द साफ सुथरे स्थान पर बैठेंगे; उसी को तत्काल सिगरेट, हुक्का की दुर्गन्ध से भरपूर कर देंगे। इन के मुंह दुर्गन्धित, हाथ दुर्गन्धित; जेबें दुर्गन्धित, गरजे कि सारा शरीर दुर्गन्धित प्राणों से लतपत ! पर इनको कैसे ज्ञान हो; परमात्मा ही इन को समझाए इन की बिगड़ी कला को बनाए।

(५) यह शरीर भगवान का एक सुन्दर मन्दिर है; जो शुध्द निर्मल है सिगरेट हुक्का पान करने वाला नित्य प्रति इस मन्दिर में दुर्गन्ध चढ़ाया करता है। तो क्या फिर यह मनुष्य जन्म, मनुष्य शरीर उसे मिलेगा ? कदाचित नहीं। किन्तु वह उन्हीं कीड़ों का जन्म और वास प्राप्त करेगा जो दुर्गन्ध में ही जन्म लेते और वास

करते हैं। जैसे उन कीड़ों को दुर्गन्ध से निकालो तो बार बार उस में ही घुसते हैं। यह सभ्य पुरुष वैसे जन्म प्राप्त करेंगे; कहावत है:-"तपो राज; राजों नरक"।

(६) महात्मा गांधी आदेश कर गये हैं, कि हुक्का; सिगरेट पीने वाले को विवाह नहीं करना चाहिये; और न ही सन्तान उत्पन्न करनी चाहिए, ऐसा न करने वाला वह अपनी कुल में तपेदिक, दमा की बुनियाद उत्पन्न करके अपने गोत्र का घातक बनेगा।

(७) हुक्का सिगरेट पीने वाला अपनी पवित्र गाढ़े पसीने की कमाई को अपने हाथों नाश करता है। वर्तमान काल में स्कूलों कालिजों के विद्यार्थियों को देखो, नाना प्रकार के बहुमूल्य सिगरेट लेकर पीना अपना मान (इज्जत) समझते हैं। उन की अपने खून पसीना की कमाई हो, तो उन्हें दर्द दिल भी हो, वह दुर्बुद्धि अपने माता पिता की गाढ़े पसीना की कमाई को किस निर्दयता से नाश करते हुए अपने अनमोल ब्रह्मचर्य के जीवन को नष्ट करते और संसार के प्राणियों के प्राणों का नाश करते रहते हैं। भला जो माता पिता की पवित्र कमाई का इस प्रकार नाश करताहै। क्या वह माता पिता का हित चिन्तिक होगा; या शत्रु; तो क्या फिर वह मनुष्य जन्म प्राप्त करेगा? हरगिज नहीं।

(८) वर्तमान काल में देखो, लाखों रुपये इस सिगरेट तम्बाकू के प्रचारार्थ लगाए जा रहे हैं। नगर नगर में बाजा, तबला; खड़ताल ले कर राग गा गा कर लोगों को इस सिगरेट पीने का स्वाभावी बनाया जा रहा है। क्या भारत में कोई इन को रोकने वाली ऐसी सभा है जो इस बुराई को रोकने के लिए धन व्यय करे, जब प्रजा का मुख मन्डल ही इस रोग में ग्रस्त हो तो प्रजा का रक्षक कौन बने; क्रोड़ों रुपये प्रति दिन इस दुर्गन्ध के फैलाने में व्यय होते हैं राजमुख और कर्मचारी लाईसेंस जारी करके इस दुर्गन्ध की कमाई, प्राप्त करके खजाना को दुर्गन्धित बना रहे हैं, जरा अपने ऊपर तरस नहीं करते, फिर कहते हैं, संसार में राम राज्य हो।

(६) अन्त में गुरुदेव ने बतलाया, इस नाशवान सिगरेट की बजाय इन्ही पैसों का फल, मेवा, दूध लेकर प्रयोग करें, तो प्रत्येक अंग अंग में अद्भुत सात्विक शक्ति उत्पन्न हो, जिस से शुध्द आहार शुध्द व्यवहार, शुध्द विचार, शुध्द आचार उत्पन्न हो, यदि इस पैसे से किसी मोहताज, दीन; दुखी की सेवा कर दो तो यश के भागी बन जाओ और माता पिता, और कुल के, रतन बन जाओ और प्रभु के आर्शीवाद से यह हीरा जन्म सफल कर जाओ और कहा—

मुझे अध्दावकाश जब मिला था तो मैं घर दौड़ता हुआ आया, आप की मेज पर शराब, सिग्रेट मांस रखा हुआ देखा, आप उपस्थित नहीं थे जो आप को गुरू जी का उपदेश सुनाता आप की उस दिन वाली [स्टेशन] वाली बात याद आ गई तो माताजी से कपड़े का टुकड़ा लिया उसे लाल रंगमें रंग कर, झन्डी बना कर मेज पर गाड दिया, स्कूल का घण्टा बजा मैं दौड़ कर स्कूल चला गया। पिता जी ने पूछा स्टेशन पर क्या बात हुई थी। रामलाल ने कहा, आप ने बताया था कि लाल झण्डी खतरे की होती है। मैंने जब मेज पर माँस शराब, सिगरेट को देखा तो मुझे बड़ा भय लगा, आप का अथवा अपना भविष्य बड़ा दुःखदायी प्रतीत हुआ तो मैंने खतरे की झण्डी मेज पर गाड़ दी और स्कूल चला गया, ताकि पिता जी सचेत हो जायें।

पिता ने जब तीनों बातें सुनीं तो नयन से अश्रुधारा प्रवाहित हो पड़ी तत्काल बालक को उठा छाती से लगाया और आर्शीवाद दिया और माँस, शराब, सिग्रेट को फेंक दिया और सर्वदा के वास्ते त्याग दिया।

ओ३म् कियत्स्विदिन्द्रो अध्येति मातुः कियत्पितुर्जनितुर्यो जजान। यो अस्य शुष्मं मुहुकैरियर्ति वातो न जूतः स्तनयद्भिरभ्रैः॥ ऋ० मं० ४ सू १७ मं० १२

भावार्थ:-जो मनुष्य माता और पिता का कितना उपकार है ऐसा जान कर प्रत्युपकार करते हैं वे मेघ और वायु से प्रेरित बिजली के सदृश बल को प्राप्त हो कर बार २ शत्रुओं को जीत कर प्रगट यश वाले होते हैं।

❀ पितृ-सेवा ❀

❀ भगवन् राम के जीवन से ❀

प्यारे पाठक गण !

(२) भला सोचो भगवान रामचन्द्र जी महाराज ने कौन सा ऐसा काम किया था कि जिस को लाखों वर्ष बीत गये पर आज तक सारा संसार उन का नाम श्रध्दा व प्रेम से लेता है। बल्कि वर्तमान युग के नर नारी राम-राज्य की स्थापना चाहते हैं। क्या राम ने कोई उपकार कार्य किया था, विजय दशमी अथवा रामनवमी के दिवस राम की घर २ जय मनाते और वर्ष गांठ मनाते हैं। हम अपने माता पिता की जन्मगांठ तो न मनाएं; पर राम की मनायेंगे। यह क्यों ? केवल इसी लिये कि उसने माता पिता की आज्ञा पालन को ही अपने जीवन का मुख्य उद्देश्य रक्खा और अपने आप को उसी के अर्पण कर दिया। देखिये जब राम को राजसिंहासन पर बैठने का आदेश मिला तो राजभवनों तथा सर्व अयोध्या नगरी में हर्ष मनाया जाने लगा। परन्तु राम चकित होकर कहता है:—
रामायण में सन्त तुलसीदास जी लिखते हैं:—

जन्मे एक संग सब भाई, भोजन शयन केलि लरकाई।
करण वेध उपवीत विवाहा, संग संग सब भये उछाहा।

विमल वंश यह अनुचित एका, अनुज बिहाय बड़े ही
अभिषेको।

अर्थात्-हम चारों भाई इकट्ठे जन्मे। खाते पीते सोते बालकप
बिताया। हमारे कानछेदन और यज्ञोपवीत इकट्ठे हुए, पर
आश्चर्य है कि हमारे पवित्र कुल में शेष तीनों को छोड़ कर रा
बड़े को दिया जाता हैं।

प्यारे! अब तुलना करो, वर्तमान कालीन भाईयों के प्रेम का।

न भाईयों से रही उलफत, न यारों में रही यारी
जो उलफत है तो ज़र से है, यही बस सब से प्यारा है
रह गई है अब जमाने में मुहब्बत नाम की
दिल टटोलें तो [1]बजुज [2]मक्रो[3]दग़ा कुछ भी नहीं॥

[1][बिना] [2][छल] [3][कपट]

· प्यारे! राज मिलने पर राम आश्चर्य में हैं पर जब माता कै
के चरणों में उपस्थित हुआ, तो आदेश हुआ कि पिता जी की आ
के लिये आज्ञा है कि आप १४ वर्ष तक बनवास करो और भरत रा
सिंहासन पर बैठे। राम को यह सुनकर तनिक भी दुःख नहीं हुआ
और शोक की एक भी रेखा उसके ज्वलन्त मुख को मलिन न क
सकी प्रजा तो सारी शोक ग्रस्त है, पर राम कवि के शब्दों में मा
कैकयी से नम्र निवेदन करता हैः—

जब राम पर कैकई ने, खंजर अलम किया।
बनवासी राम के लिये, यानी रकम किया।
सुनते ही राम ने, सरे तसलीम ख़म किया।
मुतलिक न ताजो तखत के, छुटने का ग़म किया।
यों अरज़ की, कि कौल, पिता को निभाऊंगा।
माता तुम्हारे हुकम से, जंगल में जाऊंगा।

हुज्जत करेगा राम, न बातें बनायेगा ।
जिस हाल में राहेगा, मुसर्रत मनायगा ।
अब जंगलों के कुदर्ती, फल फूल खायगा ।
मसरूर, शाद तुम रहो, अब राम जायगा ॥
होगा जन्म सफल मेरा, ऋषियों की दीद से ।
आनन्द वेद सुर्ती की, होगा शुनीद से ॥
फरमान तेरा टाल दूँ, अमरे मुहाल है ।
सिर फेरे राम हुकम से, किस की मजाल है ॥
तख़्ते शाही के छुटने का, किसको मलाल है ।
तकलीफ़ फ़िक्र की, न कुलफत का ख़्याल है ॥
हर संग राहे तख्ते, हकूमत से कम नहीं ।
दिल जोई वालदैन की, इबादत से कम नही ॥
ध्रुव छोड़ दे तो छोड़ दे जाये क़याम को ।
मुश्किल नही बदल दे, हिमालय मकाम को ॥
लेकिन मुहाल कौल से, फिरना है राम को ।
रुख़सत करो पिता जी अब अपने गुलाम को ॥
यह कह कर राम चरणों पर, दशरथ के झुक गए ।
कुछ कहने को थे खलीक, कि हसरत से रुक गए ॥

राम ने माता कैकयी से पिता का आदेश सुना; तो माता के चरणों में शीस झुका कर कहता है कि वास्तव में मेरी सच्ची माता तू ही है; कैकयी अपनी दृष्टि से यह तुलना करती है कि राम तेरे से विनोद कर रहा है। परन्तु राम पुनः नतशिर हो; करवद्ध कहता है कि तू मेरी सच्ची माता है और कहता है; वे कैसे। सुन माता,

तुझे सुनाऊं। राम कहता है कि यद्यपि पूज्य माता कौशल्या; ने
मुझे दस मास गर्भ में रखा। जन्म देते समय अपनी सूर
सौन्दर्य को बिगाड़ा। रक्त में लतपत हुई। अपने आपको मृत्यु के
मुख में डाल कर मुझे जन्म दिया। मेरे पालन पोषण में नाना
प्रकार के कष्ट सहे। मेरा प्रत्येक संस्कार किया, विवाह किया
अब उसकी यह कामना कि मैं राज तख्त पर बैठूं और वह राजमाता
कहलाए, पर वास्तव में सच्ची मां मेरी तू है। यह सुन कर कैकयी
सर नीचा कर देती है। फिर राम कहता है। सुन माता तू सच्ची
मां मेरी कैसे है, कहता है, यदि मैं पूज्य माता कौशल्या जी की
इच्छानुसार राज्य पर बैठ जाता; तो राज्य के मद में मस्त हो कर
नाना प्रकार के उपद्रव करता और अपना अनमोल जन्म खोता
पर, मेरी सच्ची माँ तू है, कि तू मुझे १४ वर्ष ऋषि मुनियों के
चरणों में भेज कर मेरे जन्म को सफल कर रही है। यह कह कर
राम माता कैकयी के चरणों में नतशिर होकर और आज्ञा लेकर
माता कौशल्या के चरणों में गया। माता कौशल्या अग्नि होत्र
कर रही थी। राम एक ओर बैठ गया। जब वह अग्नि होत्र
प्रार्थना कर चुकी—तो राम झट उठा और चरणों में शीश झुका
दिया माता ने राम को उठा छाती से लगाया और आशीर्वाद दिया
कि तेरा राज्य पाट फले फूले, तेरा प्रजा में मान हो, यश हो
इत्यादि। तो राम ने झट माता से कर जोड़ प्रार्थना की, माता जी
मुझे यह आशीर्वाद न दो। माता कहती है क्यों बेटा? राम
कहता है मुझे और आशीर्वाद दो। माता कहती है, वह क्या?
राम कर जोड़ कर कहता है कि पूज्य माता कैकयी के द्वारा मुझे
पिता जी का आदेश मिला है कि राम १४ वर्ष बन में जाकर रहे
और भरत राज्य करे। जब कौशल्या ने यह शब्द सुने तो धड़ाम
से धरती पर गिर पड़ी। राम ने माता को होश में लाकर विनय
पूर्वक माता से पूछा। माता जी आपकी यह दशा क्यों हो?

तो कौशल्या क्रोध में आकर कहती है, हे राम! तू सुशिक्षित

विद्वान है, और तू यह जानता है कि मां का अधिकार पुत्र पर पिता से सहस्त्र गुण अधिक होता है तो राम ने कहा; हां माता जी ! तो कौशल्या कहती है कि बस अब तुम्हारा कर्त्तव्य यही है कि पहले मेरा कहना मानो। तो राम ने कहा, माता जी आज्ञा करो। तो कौशल्या ने कहा, कि तुम बन मत जाओ, भले राज्य पर न बैठो। तो राम कहता है। माता जी आप भोली हो गई हो। तो कौशल्या फिर आवेश में आकर कहती है क्यों ? मैं कैसे भोली हो गई हूँ, तू नहीं जानता, कि माता का पुत्र पर पिता से सहस्त्र गुणा अधिक अधिकार होता है। तो राम कहता है कि हाँ माता जी ठीक है; तो कौशल्या कहती है फिर मैं भोली कैसे हो गई हूँ तो राम कहता है हे पूज्य माता जी ! सुनिये। पृथ्वी सदैव सूर्य के गिर्द घूमती है यदि वह सूर्य के गिर्द घूमना छोड़ दे, तो वह पृथ्वी न रहे। इसी प्रकार सूर्य पति है, पृथ्वी स्त्री है। आप का कर्त्तव्य है कि पति के मार्ग पर चलना। जो स्त्री पति के मार्ग का त्याग करती है वह सदाचारणी नहीं कहलाती किन्तु दुराचारिणी कहलाती है। दूसरा पिता जी राजा हैं मैं और तुम उन की प्रजा हैं। प्रजा का काम राजा की आज्ञा का पालन करना धर्म है। अतः इन दोनों सूरतों में आप और मैं बंधे हुये हैं अब जब कौशल्या ने ये शब्द प्यारे राम से सुने तो मुख पर ताला सा लग गया। शांत चित हो गयी। अब राम जब माता कौशल्या से आशीर्वाद लेकर आरहा था, तो लक्ष्मण जला; भुना हुआ आग बबूला होकर राम के सम्मुख पहुँचा और यूं कहा,—

लक्ष्मण-क्यों भ्राता जी ! क्या आप ने पिता जी से यह भी पूछा कि मैं ने कौन सा अपराध किया है जिस के प्रतिफल में मुझे राज से पृथक कर के बनवास जाने का आदेश दिया है। न्यून से न्यून अपने अपराध का ज्ञान तो हो जाना चाहिये। सारी अयोध्या पुरी में शोक छा रहा है। राम, लक्ष्मण के यह शब्द सुन कर

आश्चर्य में पड़ गये। परन्तु जब लक्ष्मण ने दूसरी तीसरी बा
उसी बात को दुहराया, तो राम की आँखों में अश्रु आ गये औ
लक्ष्मण से बोले, लक्ष्मण तेरी बुद्धि पर पाषण पड़ गया है,
ऐसी बात को एक बार नहीं, किन्तु दो तीन बार ऐसे शब्दों
कह दिया है कि मैं पिता जी से पूछूँ, कि मैंने क्या पाप किया
जो मुझे राज से पृथक कर बनवास भेजा जा रहा है? अ
लक्ष्मण! पिता जी से मैं यह पूछने की धृष्टता करूं, कि मैं
क्या पाप किया है, ऐसा कर के सूर्यवंशी कुल को कलङ्कित करू
अरे पिता भी कभी सन्तान से शत्रुता करता है! राम को तो पि
का आदेश पक्षी द्वारा मिले कि राम! हिमालय पर चढ़ कर उ
छलांग लगा दे तो राम एक क्षण भी विलम्ब न करे, छलाँग लग
दे। राम को आज्ञा हो कि समुद्र की गहरी धार में कूद पड़। रा
तनिक भी न विचारे और आज्ञा पालन कर दे। राम को पित
का आदेश मिले आग में कूद पड़ो तो राम तत्काल अग्नि में कू
पड़े। राम के शब्द उत्तर सुन कर लक्ष्मण शांत हो गया अब
राम सीता के पास पहुँचा और पिता का आदेश सुनाया,
सीता भी राम के साथ चलने को तैयार हुई, तो राम कहता है—

राम-प्रिये, आप मेरे साथ न चलें, क्योंकि तुम महलों में रहने वाल
लाड, प्यार की पली, कोमल शय्या सोने वाला हो, बन में शीतोष्ण
तथा कंटक, बन का निवास स्थान, न पलंक न भोज्य पदार्थ, सिं
बघियाड़-भिन्न २ प्रकार के जन्तु वहां होंगे ऐसी अवस्था
तुम्हारा चलना तुम्हारे लिये हानिकारक होगा।

सीता-"भगवती सीता ने उत्तर दिया, कि आप का कहना यथार्थ
परन्तु मैं आप से पूछती हूँ कि मैं तो महलों में रही, लाड
प्यार से पली थी, आप का पालन पोषण क्या बन में हुआ था
आप मेरी तरह नहीं पले थे"। राम ने कहा, कि यह अवस्था
मेरी और तेरी एक ही गई, पर एक बात जो मुझे जाने को बाधि

करती है और तुम को नहीं । तो भगवती सीता ने कहा, कि वह क्या ?

राम-माता पिता की आज्ञा का पालन करना ।

सीता-आप आज्ञा का पालन न करें । तो....

राम-फिर तो सीधा नरक में जाऊंगा ।

सीता-क्यों ! नरक में कैसे ?

राम-जो माता पिता की आज्ञा का पालन नहीं करता वह कितने ही पुन्य कार्य क्यों न करे, सब निरर्थक हैं ।

सीता-तो क्या मैं नरक में जाऊं यह आप को अभीष्ट है ?

राम-क्यों ? मैं यह नहीं चाहता ।

सीता-मेरी मां ने मेरा हाथ पकड़ कर आप के हाथ में दिया था और मुझे आदेश किया था कि पति के संग रहना, चाहे कुछ भी हो जाए ।

राम यह सुनकर अवाक् हो गया ।

कठोपनिषद् में लिखा है-कि जब बाजश्रवा (उद्दालक ऋषि) ने बानप्रस्थ लिया तो ब्राह्मणों को गौएं दान कीं, तो नचिकेता (जो वाजश्रवा का पुत्र था) पिता को गौएं दान करता देख "करजोड़" प्रार्थना करता है; पिता जी ! आप जो यह गौएं ब्राह्मणों को दान कर रहे हैं, ऐसी गौएं दान करने से भलाई की अपेक्षा हानि होगी क्योंकि गौओं का दुग्ध तो आप पान कर चुके हैं; और अब जब गौएं दूध से रिक्त हो चुकी हैं, तो उन को दान करना पाप ही है । शास्त्रों में तो लिखा है कि दान उत्तम से उत्तम वस्तु का करो। यदि कोई फटे वस्त्र दान करता हैं तो उस को नवीन वस्त्र थोड़े मिलेंगे, पर कोई भी ऐसा फल नही चाहता है । प्रत्येक उत्तम से उत्तम फल की इच्छुक होता है अतः आप वह वस्तुएं दान करें जो आप को बहुत प्रिय और उत्तम हों । फिर कहा पिता जी !

गृहस्थी को सब से प्यारी वस्तु सन्तान ही होती है, तो मुझे दान ही कर दो। पिता ने नचिकेता की बातें सुनीं तो क्रोध में आ गया कि बालक होकर मुझे उपदेश करता है। क्रोध में पूरित होकर कह दिया कि जाओ तुम मृत्यु के मुख में। नचिकेता ने सुना फूला नहीं समाया और कर जोड़ पिता से प्रर्थना करने लगा।

रघुकुल रीति यही चली आई।
प्राण जायें पर वचन न जाई॥

पिता जी मुझे मृत्यु के पास भेजो। अब जब यह शब्द पिता ने सुने तो चेतना आई। अब सोचता है। "यक न शुद दे शुद" तो प्रभु से प्रार्थना करता है। अन्त में विचार यह हुआ कि यम के अर्थ मृत्यु के हैं। यम नाम का ऋषि है उन के पास भेजना चाहिए तो नचिकेता से कहा कि तू यमाचार्य के पास चला जा। पिता की आज्ञा पाकर नचिकेता यमाचार्य के आश्रम में चला गया। यमाचार्य की धर्मपत्नी ने आसन जल भेंट किया, परन्तु नचिकेता ने स्वीकार न किया, और देवी से कहा कि जब तक मै गुरूदेव (यमाचार्य) के दर्शन नहीं करूँगा तब तक अन्न जल ग्रहण नहीं करूंगा।

यमाचार्य बाहर गये हुए थे। तीन दिन पश्चात् जब घर को लौटे तो देवी ने कहा कि महाराज! एक अभ्यागत तीन दिन से भूखा प्यासा आपके दर्शनार्थ पड़ा है; विना आपके दर्शन किये अन्न जल ग्रहण नहीं करता, अतः आप शीघ्र आसन, जल ले जाकर उस को भेंट करें। देवी से जब यमऋषि ने यह वृत्तान्त सुना तो बहुत विस्मय होकर तुरन्त आसन जल का लोटा लेकर नचिकेता के पास पहुँचे। जल आसन भेंट करते हुए कहा, कि ऐ नचिकेता! गृहस्थी के द्वार पर एक अभ्यागत का भूखा प्यासा रहना गृहस्थी के लिये बड़ा भारी पाप है। कठोपनिषद् में लिखा है

आशा प्रतीक्षे संगतं सूनृताञ्चेष्टा पूर्ते पुत्र पशूँश्च सर्वान्

एतदबृङ्क्ते पुरुषयाल्पमेधसो यस्यानश्नन् वसति ब्राह्मणों गृहे ॥ कठ० १-८

अर्थात्-जिस गृहस्थी के घर से अतिथि निराश (नाराज) हो जाता है। उसका सब जप-तप-यज्ञ-दान आदि शुभ कर्म निष्फल हो जाता है अतः तुम मुझ से अपनी इच्छानुसार तीन वर माँगो; ताकि मैं इस महान पाप से मुक्त हो जाऊं! यमाचार्य के यह वचन सुनकर नचिकेता गुरु से यह नहीं मांगता कि मुझे धन-पुत्र, स्त्री महल माड़ी राजपाट मिलजावे. और यह भी नही माँगता कि स्वर्ग में जाऊँ। किन्तु सांसारिक सब सुखों को छोड़ कर वह सब से प्रथम वर गुरु से यह माँगता है कि गुरू जी! जब मैं आप से सुशिक्षत होकर घर जाऊँ तो मेरे पिता जी मुझ पर वैसे ही प्रसन्न हों जैसे प्रथम रहते थे। प्यारे नचिकेता ने आरम्भ में अपने आप को पिता के अर्पण करते हुए यह प्रार्थना की थी कि मुझे आप अपने मंगल कार्यार्थ लगाओ। अर्थात् अपने आपको समर्पण कर देताहै। पिता की प्रसन्ता में अपनी प्रसन्नता जानता है प्यारे!: वर्तमान काल की तुलना करो। अब नवयुवक हर समय प्राय यह कामना करते हैं कि पिता माता मरें तो सम्पति के स्वामी बनें। और आनन्द उड़ाएं। वर्तमान काल में साधारणतया पिता अपने एक ग्रेजूएट पुत्र को यह कहने का साहस नहीं कर सकता कि एक गिलास जल का भर कर लाओ।

(१) स्वामी शङ्कराचार्य

अब मैं ऐतिहासिक घटना आपके सम्मुख रखता हूँ। श्री स्वामी शङ्कराचार्य जी महाराज जब गुरुकुल से विद्या अध्ययन कर के घर आए तो वैराग्य की भावनाओं से भरे हुए अपनी माता के चरणों में पहुंचे और प्रार्थना की माता जी! मुझे आज्ञा दो मैं सन्यास धारण करके संसार की सेवा करूँ। माता ने सुनते ही अस्वीकार कर दिया। प्यारे! एक दिन श्री स्वामी शङ्कराचार्य

जी अपने सहपाठियों के साथ नदी पर स्नान करने के लिये गये तो गहरे पानी में जाकर शंकर ने शोर मचाया, और बोला, कि मुझे संसार ने पकड़ लिया है, मुझे बचाओ। यह सुनकर सहपाठी भय से बाहर निकल आये और दौड़ कर शंकर की माँ को सूचना दी। माता सुनते ही रोती हुई नदी पर पहुँची और शंकर की पुकार सुनकर कहती है, मेरे बच्चे को भगवान के नाम पर बचाओ, अब शंकर ने माता जी से कहा, माता जी संसार कहता है यदि तुझे माता जी सन्यासी होने की आज्ञा दे देवें तो मैं तुझ को छोड़ दुँगा, अन्यथा नहीं।

माता ने यह सुन कर शंकर को तुरन्त आदेश किया कि बेटा! तुम सन्यासी बन जाओ मैं आँखों से तो तुझे देखती रहुँगी प्यारे किस सुनीति से शंकर ने माता से स्वीकृति प्राप्त की संसार मगरमच्छ को भी कहते हैं और संसार जगत को भी यदि शंकर माता की आज्ञा न लेता तो शंकर, शंकर न होता आज लाखों मनुष्य श्री स्वामी शंकराचार्य महाराज जी के पुजारी हैं।

प्यारे! श्रवण का नाम आज तक संसार में अमर है क्यों उसने अपने माता पिता को कन्धों पर उठाकर यात्रा कराते प्राण तक दे दिये।

(२) भीष्मपितामह-आप महाभारत को भली भांति जानते होंगे उस में लिखा है कि राजा शान्तनु जब नदी के तट पर गया तो नदी में नौका के भीतर एक युवती कन्या को देखा। उसके सौन्दर्य को देख कर मोहित हो गया तो नाविक से कहा, तुम अपनी कन्या का विवाह मेरे साथ कर दो। नाविक ने स्वीकार न किया तो राजा ने कारण पूछा। नाविक ने कहा कि तेरा ज्येष्ठ पुत्र भीष्म वर्तमान में है यदि मैं अपनी कन्या का विवाह तेरे साथ कर दूँ तो भीष्म की वह दासी बन कर रहेगी, राजा ने कहा वह तो राजा की रानी कहलायेगी; दासी क्यों? तो नाविक

उत्तर दिया, कि तेरे राज्य का उत्तराधिकारी तो भीष्म ही होगा जो सन्तान मेरी पुत्री के गर्भ से होगी वह तो उत्तराधिकारी न हो सकेगी, वह और मेरी पुत्री भीष्म के आधीन दासी बन कर रहेगी, हां यदि आप यह लिख दें कि शरीर छोड़ने पर मेरी पुत्री की सन्तान राज्य अधिकारी बनेगी तो मैं विवाह कर दुँगा, पर यह शान्तनु कैसे करें। पर काम में अन्धा हो वापिस घर आकर लेट गया। पिता की उदासीनता, अशान्ति तथा क्षोभ अवस्था को देख भीष्म ने कारण पूछा, पर पिता जी मौन रहे। अन्ततः भीष्म को मन्त्रियों से ज्ञान हुआ, कि मेरे पिता जी नाविक की कन्या पर मोहित होकर विवाह करना चाहते है, परन्तु नाविक ने स्वीकार नहीं किया। भीष्म तुरन्त नाविक के पास गया और कहा कि तुम अपनी कन्या का विवाह मेरे पिता जी से कर दो, नाविक ने न माना, तो भीष्म ने कारण पूछा, तो नाविक ने कहा कि यदि मैं अपनी कन्या का विवाह राजा से कर दूं, तो फिर मेरी पुत्री तुम्हारी दासी बन कर रहेगी, तो भीष्म ने पूछा कैसे और राजा से विवाह हो जाने पर तो वह मेरी माता कहलायेगी। नाविक ने कहा, राजा की मृत्यु के पश्चात् तुम ही राज्य के स्वामी बनोगे, तो उस समय मेरी कन्या तथा उसकी सन्तान तेरे आधीन होकर दासता का जीवन बितायेंगे। भीष्म ने कहा, मैं तुम को लिख देता हूं कि मेरे पिता के स्वर्गवास हो जाने पर राज्य का अधिकारी नहीं बनुँगा। नाविक ने कहा, भले ही तुम राज्य पर मत बैठोगे पर तुम्हारे न बैठने पर तुम्हारी सन्तान ही अधिकारी हो सकती है। यह सुन कर भीष्म ने उत्तर दिया, अच्छा अब मैं प्रतिज्ञा करता हूं कि मैं आयु पर्यन्त विवाह नहीं करुँगा।

"न होगा बांस न बाजे बांसरी"

इस पर नाविक ने अपनी कन्या का विवाह राजा शान्तनु से कर दिया, परन्तु भीष्म आजन्म ब्रह्मचारी रहे। प्यारे ! सोचो

सर्व संसारिक इच्छाओं को लात मार कर अपने पिता की इच्छा
को परिपूर्ण कर दिया। जिस का परिणाम यह कि भीष्म पितामह
कहलाया। क्या भीष्म पितामह मृत्यु से घबराये। जब भीष्म
पितामह रणभूमि में शर शय्या पर चित लेटे हुये थे तो अर्जुन
से पूछते हैं कि सूर्य किस ओर है। तो अर्जुन ने कहा कि सू
दक्षिणायन में है तो भीष्म ने कहा, जब सूर्य उत्तरायण में आवे
तब प्राण त्यागेंगे।

प्यारे यह है पितृ-भक्ति, जिस पर मृत्यु हाथ जोड़े खड़ी
है। क्या भीष्म मर गया है, नहीं, वह नित्य जीवित है। तीसरी
बात वेद ने बतलाई कि माता पिता आर्शीवाद तथा वि
सुशिक्षा के उपदेश से आपनी सन्तान को प्रसन्न करके स
रक्षा किया करें।

ऐतिहासिक घटना

माता पिता का आर्शीवाद तथा उसका फल

(१) सम्राट औरंगजेब के ऐतिहासिक काल की घटना है कि उ
पदाधिकार में एक राजा की मृत्यु हो गई। राजकुमार अल्प आ
में था, जब युवा हो कर राज्य करने के योग्य हुआ तो राजकी
नियम के अनुसार निश्चित तिथि को सम्राट के दरबार में अभिवा
करने तथा स्वीकृति प्राप्त करने को जाना था। राजकुमार को मन्त्रि
ने सम्भवनीय प्रश्नोत्तर समझा दिये, और राजकुमार को राजवेष
आभूषित कर तैयार किया। समस्त मन्त्री मण्डल साथ है अब रा
कुमार राजभवन के द्वार पर आया। माता द्वार के भीतर खड़ी है
अब राजकुमार माता से आर्शीवाद चाहता है। और माता से प्र
करता है कि हे माता जी ! मन्त्रियों ने सब पाठ मुझे भली प्रकार प
दिये हैं जो कि सम्राट के दरबार में मुझ से किये जायेंगे, और मैं
खूब कण्ठ कर लिये हैं। मैं इन की परीक्षा में पूर्ण रूपेण उत्तीर्ण
आप इन से पूछ लीजिये। माता ने मन्त्रियों से पूछा तो मन्त्रियों
विश्वास दिलाया कि राजकुमार रुपये में सोलह आने ही पास है

तो माता ने उत्तर सुनकर राजकुमार को आज्ञा दी कि जाओ पुत्र! अब राजकुमार ने पुनः करबद्ध हो माता से कहा, माता जी! यह तो आपको पूर्ण ज्ञान अथवा विश्वास हो गया है कि मैं मन्त्रियों के पढ़ाए हुए पाठ पर पूर्ण पास हूँ पर मेरे दिल में एक शंका उत्पन्न हुई है उसकी आप निवृत कर दें। माता ने कहा कहो बेटा! राजकुमार ने कहा, कि जो कुछ मन्त्रियों ने मुझे पाठ पढ़ाया है उनका उत्तर तो मैं दे दुँगा। पर यदि इन प्रश्नों के अतिरिक्त कोई और प्रश्न सम्राट करें तो उसका मैं क्या उत्तर दूँगा, तो माता राजकुमार की शंका सुनते ही बोली; कि हे पुत्र! यह सब पाठ पढ़ा पढ़ाया याद किया हुआ भुला दो; एक परमात्मा के आश्रय पर जा। वह ही तेरी सहायता करेगा। बस राजकुमार ने माता के चरणों में शीस रखा, माता माता ने आर्शीवाद दी, राजकुमार घोड़े पर सवार होकर चल पड़ा।

सम्राट औरंगजेब का दरबार

सम्राट औरंगवाद राज सिंहासन पर विराजमान हैं। मन्त्री आदि सब अपने २ कार्य में व्यस्त हैं तो राजकुमार दरबार में पहुँचा। राजकीय नियमों के अनुसार राजकुमार ने सम्राट को अभिवादन किया, औरंगजेब की जब राजकुमार पर दृष्टि पड़ी तो सम्राट औरंगजेब ने राजकुमार को सिंहासन पर अपने साथ बिठलाया और पहिला प्रश्न राजकुमार से यह किया, कि हे राजकुमार! तूने अब राजगद्दी पर बैठना है। तुम को अपनी प्रजा पर शासन करना होगा क्योंकि राजा प्रजा का सिर होता है और युद्ध में भी आवश्यकता पड़ने पर आपको जाना होगा, पर मैंने तेरा घोड़ा देखा है यह अल्प आकृति का है। राजा जितना महान् कहलाता है, उसका घोड़ा भी उतना ही महान होना चाहिये। तो राजकुमार ने कहा, महाराज! आप का वचन सत्य है, घोड़ा आकृति से छोटा है परन्तु समय आने पर यह युद्धक्षेत्र से भागेगा नहीं, यदि घोड़ा विशाल काय हो और कायर हो तो किस काम का? सम्राट ने उत्तर सुना और सन्तुष्ट हो गया, फिर दूसरा प्रश्न किया? राजकुमार! परमात्मा तुझे ऐसा अवसर न देवे,

कि तुम को युद्धक्षेत्र में जाना पड़े, हां· यदि जाना भी पड़ जावे, तो तेरी यह छोटी सी खड़ग क्या करेगी ? तू राजा, फिर इतनी छोटी खड़ग, (तलवार) खड़ग बड़ी होनी चाहिए।

राजकुमार ने उत्तर दिया, सम्राट की छत्रछाया बनी रहे, और कहा सत्य वचन महाराज ! यद्यपि मेरी खड़ग छोटी है तो मेरा हृदय विशाल है युद्धक्षेत्र में खड़ग चाहे कितनी बड़ी हो, परन्तु यदि हृदय संकुचित हो तो वह खड़ग किस काम की, हां यदि हृदय महान् है खड़ग भले छोटी हो तो वह विजय प्राप्त करता है अर्थात् जब भी मनुष्य किसी कार्य को हृदय से करे तो सफलता होती है अन्यथा नहीं। सम्राट ने जब यह उत्तर सुना तो बड़ा प्रसन्न हुआ । फिर तीसरा प्रश्न किया, औरंगजेब ने राजकुमार के दोनों हाथ पकड़ लिए, और उससे कहा, अब बताओ यदि तुम किसी शत्रु के यहाँ ऐसे ग्रस्त हो जाओ तो फिर अपने आप को कैसे मुक्त करोगे? औरंगजेब के प्रश्न को सुनकर राजकुमार खूब हंसा। तो औरंगजेब राजकुमार को हंसता देखकर कहने लगा, कि तू उनमत होगया है। राजकुमार ने निवेदन किया कि हे सम्राट! यदि मैं आज भी न हसूं जो अवसर हंसने का है, तो फिर कब हसुंगा। और कहा मैं बड़ा भाग्यशाली हूँ। मेरा जैसा भाग्यवान आदमी संसार में और कौन होगा। औरंगजेब ने उत्तर सुनकर और चकित होकर पूछा, कैसे तू आज संसार में भाग्यवान हो गया है ? राजकुमार ने निवेदन किया, आप की छत्रछाया बनी रहे, और कहा, हमारे वेद व शास्त्र में लिखा है और ऐसा ही हम करते चले आते हैं कि जब वर, कन्या का विवाह होता है तो वर, वधु एक २ हाथ आपस में मिलाते हैं। बस इसी पर आयु पर्यन्त एक दूसरे पर प्राण तक न्योछावर कर देते हैं। अब तो जैसा मेरा सम्राट, और फिर आप के और मेरे दोनों हाथ मिल जाएं फिर किसी की क्या शक्ति है, जो मुझे ऐसे ग्रस्त कर सके। सम्राट ने राजकुमार का उत्तर सुना सन्तुष्ट हो गया राजगद्दी पर बैठने की स्वीकृति दे कर विदा किया।

प्यारे ! क्या यह प्रश्नोत्तर राजकुमार को मन्त्रियों ने पढ़ाये थे कदापि नहीं, यह माता का आर्शीवाद था जिस ने कह दिया था जा पुत्र ! ईश्वर आश्रय, तेरा रक्षक तेरे साथ है, वह जो कहलवाएगा कह देना। प्यारे माता ईश्वर विश्वासी न होती तो पुत्र को कैसे विश्वास दिलाती परन्तु वर्तमान काल में माताएं स्वयं भोगी हैं और उन की सन्तान भी भोगी हैं प्रभु इन्हें सन्मार्ग पर चलावें ताकि संसार में राम राज्य हो।

अयं पन्था अनुवित्तः पुराणो यतो देवा उदजायन्त विश्वे
अतश्चिदा जनिषीष्ट प्रवृद्धो मा मातरममुयापत्तवे कः

ऋ० मं ४ सू० १८ म० १

भावार्थ-हे मनुष्यो ! जिस मार्ग से यथार्थ वक्ता पुरुष जावें उसी मार्ग से आप लोग भी चलो जो बड़ी वृद्धि भी होवे तो भी माता का अपमान किसी को भी न करना चाहिये।

मातृ भक्ति का फल

(२) झुगीवाला तहसील अलीपुर (पकिस्तान) में एक छोटा ग्राम है मुझे वहां श्री महाशय आशानन्द जी (अब उनका नाम श्री आनन्द भिशु जी वान प्रस्थी) के निमन्त्रण पर जाना पड़ा यज्ञ की पूर्णाहुति पर मैं ने मातृ-भक्ति पितृ-भक्ति पर उपदेश दिया, मेरे उपदेश के पश्चात श्री भक्त सोनूरांम जी जो पुरातन ऋषि भक्त हैं मेरे पास आए और मुझ से कहा कि आज आप का उपदेश बहुत अच्छा हुआ और साथ ही यह भी कहा कि एक घटना वर्तमान युग की मैं आप को बताता हूँ तो मै ने कहा, बड़ी कृपा होगीं। तो उन्हों ने फरमाया एक सज्जन ने विवाह किया उसका एक पुत्र उत्पन्न हुआ उसकी धर्मपत्नी स्वर्गवास हो गई तो उस ने पुनर्विवाह किया। इस दूसरी देवी से उस के तीन पुत्र उत्पन्न हुए। वह स्वयं मर गया है। अब ज्येष्ठ पुत्र पृथक हो चुका है। वह माता का खच देने से इनकारी है अब दूसरे भाइयों में अभियोग चल रहा है। भक्त जी ने साथ

यह भी कहा, दो (यमन) मुसलमान भाई हैं। पर्याप्त भूमि के स्वामी हैं आभूषण, पशुधन अधिक है, नगर में मान है। अब वे आपस में पृथक होने लगे तो छोटे भाई ने वड़े भाई से कहा कि मैं सम्पत्ति के दो भाग बनाता हूँ। वड़े भाई ने कहा अच्छा बनाओ तो छोटे भाई ने भाग बना कर कहा देखो भाई ! एक भाग में सारी भूमि, आभूषण, पशु, तथा सारी सम्पत्ति और दूसरे भाग में केवल माता है अब तुम चुन लो। तो बड़े भाई ने कहा, कहीं तुम पागल तो नहीं हो गये हो, ठीक २ भाग बनाओ। क्या मां को तू बोएगा और काटेगा, ठीक २ भाग बना। परन्तु छोटे भाईने कहा, मैं पागलनहींहूं सोच विचार करके ये भाग बनाए हैं। तुम चुन लो, बड़े भाई ने अपने सम्बन्धियों को कहा कि मेरे छोटे भाइ को समझा दें, ठीक २ भाग बनावे। अब दूसरों ने आकर समझाया परन्तु छोटा भाई अपने संकल्प पर दृढ़ रहा, अब सब ने कहा भाई ! अब तुम चुन लो, तो बड़े भाई ने सारी सम्पत्ति वाला भाग ले लिया और कहा लेजा मां को, तेरी बुद्धि मारी गई है। छोटे भाईने माताको लेलिया और नगर में जाकर एक सेठ से दो सहस्र रुपये ऋण ले लिया और व्यापार शुरू कर दिया और बड़े भाई ने भूमि काशत की। फ़सल पक कर तैयार हुई तो ओले बरसे इतने वेग से, कि सारी की सारी फ़सल नष्ट होगई, पशु भी मर गये। और छोटे भाई ने व्यापार किया बड़ा धन कमा लिया और अब बड़ा भाई छोटे भाई का ऋणी है। यह सत्य घटना है, कलियुग की है प्यारे सत्ययुग में यही सूर्य पूर्व दिशा में निकलता था और पश्चिम में अस्त होता था अब भी वैसा ही है। प्रकृति के नियम अटल हैं परन्तु हम स्वयं बिगड़ गये। पर दोष दूसरों पर लगाते हैं फारसी में एक कवि ने कहा है:—

करदने खुद पेश से आयद , फ़लक रा तोहमत अस्त।
हरचि अंदाज़ी मियाने आस्यां अरद बिरूं ।

अर्थात्-अपने किये कर्म अपने सामने आते हैं और दैव को दोष लगाना व्यर्थ है। चक्की के अन्दर जैसा दाना डालेगा वैसा

आटा आवेगा।

हरचे मा करदेम बा खुद ना बीना न कर्द।
दरम्यिाने खानारा गुम करदेम साहिब खाना रा।

अर्थात-जो कुछ हमने अपने साथ व्यवहार किया, वस अन्धे भी अपने साथ नहीं करते। घर के स्वामी को घर में ही गुम कर बैठे है और ढूँढते बाहिर हैं।

अभिदवान का फल

(३) मेरे पूज्य पाद प्रातः स्मरणीय गुरुदेव जी महात्मा प्रभु आश्रित स्वामी जी महाराज (महात्म टेकचन्द जी महाराज) जो उन्होंने आप बीती घटना सुनाई अंकित करता हूँ। आप एक दिन एक प्रश्न को हल करने के लिये एकान्त होकर घर बैठ गये। सायंकाल होने को आई तो माताजी ने ऊपर मकान पर जहां गुरुदेव जी बैठे थे जाकर पूछा क्या आज अमावस्या का व्रत तूने रखा है तो मुख से उत्तर निकला, हां माता जी! माता जी नीचे चली गई परन्तु प्रश्न सिध्द न हुआ रात्री को सो गये। प्रातः ब्रह्म मुहूर्त में प्रभु शरण में फिर बैठे उस प्रश्न को हल करने के लिये। आविष्कार कहो अथवा आकाशवाणी कहो। भीतर से आदेश हुआ कि जाओ माता के चरणों में। सो तत्काल नीचे उतरे, माता जी चक्की पीस रही थी निकट पहुँचते ही दोनों घुटने टेक मस्तिष्क माता के चरणों में रख दिया। माता जी ने पीठ पर हाथ फेरा और कहा पुत्र तेरी भक्ति बनी रहे। अब फिर ऊपर आकर आसन पर बैठे उस प्रश्न को सामने लाया तो तत्काल प्रश्न हल हो गया। जो २४ घण्टे में न हुआ था, माता के चरणों में पड़ने पर तत्काल पूर्ण हो गया। और जो सेवा गुरुदेव जी महाराज ने अपनी माता की जीवन काल में तन, मन, धन से की, ऐसा कोई विरला माईका लाल ही वर्तमान युगमें होगा आप क वचन है बस मैं उसी माता के आशर्वाद के आधार पर जीवित हूँ। इस समय आप वैदिक भक्ति साधन आश्रम रोहतक में विराजमान हैं। जिन प्यारों ने महारज के दर्शन किये वह स्वयं ही अनुभव कर सकते हैं, 'प्रत्यक्षं किं प्रमाणम्'।

मुल्तान की आंखों देखी घटना

मैं मुलतान अनाथालय का संचालक (संरक्षक) था। वहाँ पर एक लाला मोतीराम जी नारंग वकील और वह डी० ए० वी० हाई स्कूल के प्रबन्ध-कर्त्ता भी रह चुके थे। ऋषि भक्त हैं इस समय देहली में रह रहे हैं वकालत आदि से कई वर्षों से मुक्त होकर बानप्रस्थी आश्रम के रूप में रहते हैं, उन की माता का देहान्त हो गया। जहां तक मेरा ख्याल है उस की माता की आयु १०० वर्ष अथवा कुछ अधिक होंगी देहान्त के चौथे दिवस लोक मर्यादानुसार सर्व प्रेमी और परिवार एकत्र हुए। हवन-यज्ञ प्रार्थना भजन उपदेश के पश्चात् भिन्न २ संस्थाओं को दान किया जाना था, मृतक की स्मृति में तो उस समय ला० मोतीराम जी फूट फूट कर रोने लगे।

लाला मोतीराम जी प्रतिष्ठित सज्जनों में से एक हैं इस अवसर पर प्रर्याप्त संख्या से नर नारी उपस्थित थे। ला० मोतीराम जी को व्याकुलता से रोता देख कर सब चकित हो गये। और कहा एक सौ बर्ष की बुढ़िया माता, जिसकी फुलवाड़ी इतनी फली फूली हो कि जिस के पोते-प्रपोते और सभी सुखी तथा प्रसन्न हों ऐसे समय यदि वह माता न मरती तो और कौन सा उपयुक्त समय था। वह बड़ी भागिनी थी आप उस को रो रहे हैं। तो ला० मोतीराम जी ने यह सुन कर रोते हुए कहा भाई आप सब सच्चे हैं।

"घायल की गति घायल जाने, और न जाने कोय"

प्यारे-यह बातें मैं दूसरों को भी कहा करता था पर मैं आज क्यों रो रहा हूँ सुनो, मुझे इस समय कोई ला० मोतीराम कोई वकील साहिब, कोई मैनेजर साहिव, आदि नामों से सम्बोधित करते हैं। पर यह सब मेरे गौण नाम हैं। अब मैं रोता क्यों हूं कि जब मैं घर आता था तो मां जी प्रेम भरे शब्दों से मुझे पुकारती थी ओ मोती! जो मेरा निज नाम है। अब मुझे इस वास्तविक नाम से कौन बुलाएगा।

प्यारे यह है मातृ-भक्ति। अब उनकी सन्तान को देखो जिधर ला० मोतीराम जी मुख मोड़ें सामने आज्ञा पालने पर तैयार खड़े हैं।

ओ३म् त्वँ सोम प्रचिकितो मनीषा त्वं रजिष्ठ मनु नेषि पन्थाम्।
तव प्रणीती पितरा नऽ इन्दो देवेषु रत्नम भजन्त धीराः॥

यजू अ० १६ मं० ५२

भावार्थ-जो सन्तान माता पिता आदि के सेवक होते हुए विद्या और विनय से धर्म का अनुष्ठान करते हैं वे अपने जन्म की सफलता करते हैं ॥ ५२ ॥

लेखक की आप बीती

जब मैं गृहस्थी था तो मेरी बुढ़िया दादी थी। जब मैं घर भोजन करने को जाता था तो मुझे धर्मपत्नी भोजन परोस कर देती और क्रोध में भरी हुई मेरी दादी की ओर संकेत कर के कहती कि देखो यह बुढ़िया मरती नहीं। न काम की न काज की। मृतक गले पड़ी हुई है आदि २ शब्द कहती, तो मैं भी भोजन करते २ क्रोध से अपशब्द दादी को कहता पर वह बेचारी चुपचाप रहती। एक दिन मैंने पढ़ा कि जो अपने माता पिता की सेवा नहीं करता उन्हें सन्तुष्ट नहीं करता उसका जप, तप, यज्ञ, दान, पुण्य सब निरर्थक जाते हैं। यह पढ़ कर मैं चकित हो गया। मन में पश्चाताप किया। सेवा करनी तो एक ओर; प्रतिदिन ऐसे अपशब्द दादी से कहे, पता नहीं उसका मेरे लिए क्या परिणाम होगा मैं सायंकाल को घर गया तो मुझे खाना परोस कर स्त्री ने दिया। मैंने उससे कहा; एक बात सुनो, वह कहने लगी क्या ? मैंने कहा जो तेरी मेरी बीत चुकी है, जानो वह एक नरक में बीती। अब रही सही तो बना लेवें। तो मेरी स्त्री ने उत्तर दिया, क्यों नरक में क्यों ? प्रातः ४ बजे उठते हैं, शौचस्नान से निवृत हो कर आप संध्या, हवन कीर्तन वेद-पाठ करते हैं। न किसी से लेना न देना ! यही काम तो

ईश्वर प्राप्ति के हैं तो नरक में कैसे बीती ? तो मैंने कहा—सुन, यह बुढ़िया (दादी) बैठी है, कल से तू और मैं प्रातः उठकर इस के चरणों में नमस्कार करें और सदैव मधुर शब्द कहे. इसकी सेवा करें, खाने से पहले इसे खिलावें, शेष बना कर हम खावें। मेरी स्त्री ने सुना, चुप हो गई। दूसरे दिन जब मैं भोजनार्थ घर गया तो देवी ने भोजन परोस कर मेरे आगे रखा तब मैंने उससे पूछा, दादी जी को भोजन करा चुकी हो ? तो उत्तर मिला नहीं, आप खा लो फिर वह खा लेगी। तो मैंने कहा देख, जब तक ज्ञान न था तो जैसी बीती सो बीती। वह तो अज्ञानवश; पर फल भी उसका भोगेंगे हाँ अब देख भालकर तो नरक में न जावें। उसने फिर मुझ को उत्तर दिया कि उसने अभी स्नान नहीं किया। मैंने कहा पहले वह स्नान कर के भोजन कर ले फिर मैं भोजन कर लुँगा। परन्तु वह पुनः मुझे विवश करती रही; नहीं २ आप खा लेवें, पर दादी के आगे झुकना नहीं चाहती। भला प्रतिदिन उसको आँखें दिखाने वाली अपशब्द कहने वाली अहंकार से भरी हुई अब उसके आगे सिर कैसे झुकावे ? इस से अपना अपमान समझती है ? मैं यह कहकर भोजन छोड़ कर चला आया कि अब तक तुझ अहंकारिनी का भोजन करता रहा, अब मैं तेरे हाथ का भोजन नहीं करुँगा जब तक तू अपने हाथों मेरी दादी को भोजन नहीं खिलाएगी। मैं दुकान की ओर आ रहा था तो मुझ को एक प्रेमी मिला। मैंने उस से कहा आज मैं आप के यहाँ भोजन करना चाहता हूँ वह प्रेमी बड़े प्रेम से मुझे अपने घर ले गया और भोजन कराया। पर मेरी धर्मपत्नी ने भोजन न किया, क्योंकि वह जानती थी कि जब तक पति देव भोजन न करें तब तक मुझ को भोजन करना पाप है। इस तरह दूसरा दिन दोपहर तक बीत गया। मेरे नानके शहर में थोड़ी दूर रहते थे। मेरी नानी और मामी को मेरे घर का समाचार मालूम हो गया तो वे दोनों मेरे घर सायंकाल ५ बजे आईं, तो मेरी धर्मपत्नी से पूछा सावित्री ! क्या बात है सुना है घर में कल से चूल्हे अग्नि नहीं पड़ी। न कोई तेरी जेठ जेठानी, और न कोई छोटा बड़ा घर में, केवल पति

पत्नि और एक बुढ़िया घर में है वह दो फुलके की मोहताज है। न तेरी में, न मेरी में, तो मेरी आने वाली धर्मपत्नी ने उत्तर कुछ न देकर सिर नीचा कर लिया। पुनः २ पूछने पर कोई उत्तर न मिला। तो मुझको बुलवाया गया। जब मैं घर पहुँचा तो मुझे नानी मामी ने कहा तू दूसरों की बिगड़ी बनाता है कईयों को उपदेश देता है, पर "दिये तले अन्धेरा" घर में पत्नी और तुम, बुढ़िया न लेने में न देने में, दो रोटियों की मोहताज, घर में कल से आग चूल्हे में न पड़ी, क्या बात है। मैंने नम्रता से कहा, नानी जी! इस (धर्मपत्नी) से पूछो। घर में आटा दाल; चावल, घी, लवण, लकड़ी आदि कौन सी चीज नहीं है जो भोजन नहीं बनाती और खाता। इस से पूछो मैंने कोई अपशब्द कहा है, अथवा हाथापाई की है। तो मेरी नानी ने कहा अब तो सावित्री मुँह सामने की बात है, पढ़ी लिखी बुद्धिमती होती हुई यह तेरी क्या बात है, परन्तु वह उत्तर न देकर सिर नीचा किये बैठी रही। अब मैंने कहा, नानी जी मैं बताऊं। नानी ने कहा-बताओ। मैंने कहा परसों रात्रि को भोजन करने मैं घर आया तो इसने मुझे भोजन परोस कर दिया, तो मैंने इससे कहा, जो तेरी मेरी बीती वह नरक में बीती, अब रही सही बनालें; तो इसने तत्काल उत्तर दिया, कि नरक में कैसे? ४ बजे प्रातः उठते हैं शौच आदि से निवृत हो कर जाप सन्धया हवन यज्ञ आदि करते है यही मुख्य कर्म परमेश्वर के साक्षात करने के हैं। न लेना न देना किसी का। तो मैंने उत्तर दिया- जो माता पिता और वृद्धों की सेवा नहीं करता और उन को नमस्कार नहीं करता, उसके ये पुण्य कर्म निरर्थक हैं इसलिये कल से तू और मैं प्रातः उठते ही इस दादी) को नमस्कार करें और इस (दादी) को पहिले खिलायें पिलायें फिर शेष बनाकर हम खायें। तब तेरा मेरा रहा सहा कुछ बन जायेगा यह सुन कर चुप हो गई, दूसरे दिन जब मैं दोपहर को भोजन करने घर आया, तो इसने भोजन परोस कर दिया, तो मैंने पूछा, दादी जी को भोजन कराया है उत्तर मिला नहीं, आप खा लेवें, मैंने कहा जब तक ज्ञान न था तब तक और बात थी; अब देख भाल कर नरक में क्यों जाऊँ? फिर कहने लगी कि अभी उस ने स्नान नहीं किया।

मैंने कहा उसे स्नान कर लेने दो, कौन सी बड़ी बात है। फिर यह अकड़ी हुई अहंकार से भरी हुई जो नित्य उसको बुरा भला कहने वाली नौकर से भी नीच समझने वाली उसके आगे सिर को नहीं झुकाती है। तो मैं ने कहा, कि बस अब मैं तेरे हाथ का भोजन नहीं करता, उठकर चला गया।

अब इससे पूछो कि यह बात यथार्थ है अथवा कुछ असत्य है, अब मेरी नानी बोली; कहो सावित्री ! यह ठीक है। अब वह लज्जा से सिर नीचे किए हुए बैठी है, तो मेरी नानी ने प्रेम से कहा—वाह सावित्री वाह; सुशक्षित होकर। आज जो बोयेगी; कल उसे काटेगी. कोई बुढ़िया पर उपकार करती हैं "जैसी करनी वैसी भरनी" यह अवस्था सब की होती है। और कहा—

जवानी हैवानी होती है; बस यह शब्द सुनते ही मेरी धर्मपत्नी फूट २ कर रोने लगी और दादी के चरणों में जा गिरी; दादी ने तुरन्त ही उठाकर अपने गले से लगा लिया और मेरी नानी को सम्बोधित कर क्रोध से कहने लगी, कि आप मेरे घर इस वास्ते आई हैं। मेरी गऊ पुत्री को आकर रुलावा है, मेरी देवता पुत्री है। मैंने इस पुत्री की कभी आप से निन्दा की। इसके पति की बातें सुन कर इसे रुला दिया है।

जब यह शब्द मेरी धर्मपत्नी ने दादी के मुख से सुने तो फूट २ कर रोई। पांव पड़ी हुई मानों हृदय से अहंकार का नाश हो रहा है। कठोरता, कोमलता में परिवर्तित हो रही है तब से वह दादी की दासी बन कर रहीं।

प्यारे—इस के पश्चात् जो मेरा गृहस्थ का समय बीता कथा लम्बी है। इतना कह दूँ कि इसी दादी के आर्शीवाद ने मुझे नाना प्रकार की विपत्तियों के आने पर मार्ग दर्शाया और वह देवी (धर्मपत्नी) तो देवी बन गई उसका देहावसान हो गया, पर इसका पवित्र जीवन सदैव मेरे सामने रहता है।



महाभारत से

(१) जब दुर्योधन की सेना के सब योद्धा युद्धक्षेत्र में मारे गये और चारों तरफ अब उसे मृत्यु नजर आने लगी तो मां याद आई; तो माता गाँधारी की शरण में गया और कहा माता! अब आप बचाओ कोई मार्ग बचने का नजर नहीं आता। प्यारे! माता में ममता अधिक होती है कितनी माता से बुराई कर जाओ। जैसाकि वर्तमान काल में गुड्डी, गुड्डे का विवाह हुआ तो माता पिता से पृथक हुए और व्यसनों में ग्रस्त हो गए, माता पिता चाहे उदर के लिए भोजन के टुकड़े के लिये तरसते रहें पर टस से मस नहीं होते ।

ऐसी सूरत में भी रहते हुए माता-पिता जब अपने बालक को रोग अथवा तथा संकट में फंसा हुआ देखें तो बालक के सब दुष्ट व्यवहारों को भुला कर बिन बुलाए दौड़े आते हैं, उस की अपनी स्त्री सो जायगी अन्य मित्र भी सो जायेंगे; परन्तु माता सिरहाने पर रातों गुजार देती है और हर समय उसके सुख कल्याण के लिए भगवान से प्रार्थना करती रहती है अपना खाना पीना तक भी भूल जाती है ।

प्यारो! अब माता गांधारी ने कहा बेटा! अपना कल्याण यदि चाहता है तो युधिष्ठर की शरण में जा। वह ही तेरी रहनुमाई करेगा, जिससे तू बच जावेगा। दुर्योधन ने कहा; माता वह तो मेरा विरोधी, शत्रु है क्या वह ऐसी अवस्था में मेरी सहायता करेगा। कवि ने कहा है:—

तू भला सब जग भला, भला २ कर देखे।
तू बुरा सब जग बुरा, बुरा २ कर देखे॥

प्यारे! जिस समय युधिष्ठर को राज तिलक लगाने का समय आया। तो दुर्योधन से पूछा गया कि सभा मण्डप में बैठे हुए में से आप तजवीज़ करें कि कौन राजा युधिष्ठर को तिलक लगावे, तो दुर्योधन ने कहा; कि मेरी दृष्टि में कोई ऐसा योग्य नजर नहीं आता जो राज तिलक लगावे।

फिर युधिष्ठर से कहा गया तू नियत कर; तो युधिष्ठर ने कहा मेरी दृष्टि में सब महान आत्माऐं है मैं किस का नाम लूँ। प्यारे! जिस की आंख पर लाल रंग का चश्मा होगा वह संसार को लाल ही देखेगा। जिसका कृष्ण वर्ण का होगा, वह कृष्ण वर्ण का देखेगा। परन्तु जिसके चश्मे का शीशा सफेद निर्दोष होगा वह तो प्रत्येक रंग काला, पीला, लाल की परख कर सकेगा।

❀ जैसी दृष्टि वैसी सृष्टि ❀

प्यारे! माता गाँधारी ने कहा। दुर्योधन! युधिष्ठिर सयत्वादी धर्म पुत्र हैं। धर्म पुरुष सत्य व न्याय के पुजारी होते हैं। छल कपट से विमुक्त होते हैं तू जा वह तेरी रहनुमाई करेगा। तू अपने आप शुद्ध हृदय होकर जा। दुर्योधन माता की आज्ञानुसार घर से चला। युधिष्ठर की शरण में आया युधिष्ठर ने स्वागत किया अतिथि सत्कार किया। पूछा कैसे दर्शन दिये। दुर्योधन ने कहा कि माता के पास गया था कि अब मुझे बचाओ तो माता ने कहा युधिष्ठर की शरण में जा। वह तुझ को बचने का साधन बतला देगा। इस वास्ते उस की आज्ञानुसार आप की सेवा में उपस्थित हुआ हूँ। युधिष्ठर यह सुन कर चकित हो गया। सोचने लगा कि इतना बड़ा भारी युद्ध किया; सारे कुल के वीर युद्धा मारे गये, अनेकों अनाथ बालक; अथवा विधवायें बन गईं रक्त की नदियां वही इसका मुख्य कारण यही दुर्योधन ही है। अब सारा खेल तमाशा समाप्त होने को है, बाजी जीतने का समय है अब यह शरण में आ गया। परन्तु भीतर से आवाज आई कि यह अतिथि है! शरण में आया है कर्त्तव्य पालन मुख्य है। भले राज मिले या न मिले जीत हो या न; पर शरण आये को मार्ग बताना कर्त्तव्य है।

तो युधिष्ठर ने कहा दुर्योधन तुम अपना भला चाहते हो कि मुझ को कोई मार न सके तो उसका उपाय तो है; करो तो बताऊँ। दुर्योधन ने कहा इसीलिए तो माता के कहने पर आया हूँ।

प्यारे! दुर्योधन को देखिये; अब तक भी अहंकार में भरा हुआ है, क्या कहता है कि माता के कहने पर आया हूं। अपने आपको नहीं

झुकाता, सफलता फिर कैसे होगी। युधिष्ठर ने फिर कहा दुर्योधन तुम नितांत नग्न होकर माता गाँधारी के पास जाओ वह आँखों की पट्टी खोल कर अपनी दृष्टि तुम्हारे सारे शरीर पर एक बार डाल दे जिस २ अंग पर उसकी दृष्टि पड़ जावेगी तो बस फिर वह वज्र हो जायगा; फिर तुम को कोई शक्ति नहीं जो मार सके! दुर्योधन, साधन सुन कर युधिष्ठिर से विदा होकर वापिस आया; तो नितांत नग्न होकर माता की शरण में जा रहा था तो योगीराज कृष्ण चन्द्र जी की दृष्टि पड़ गई। तुरन्त शीघ्रता से सामने आ गये और दुर्योधन से कहा, अरे पागल होगया है, तो दुर्योधन ने कहा, कि माता गांधारी के पास गयाथा मैं ने कहा माता बचाओ। माता ने आज्ञा की थी कि युद्धिष्ठर के पास जाओ। वह तुम्हें तुम्हारे बचने का साधन बतायेगा। तो मैं युद्धिष्ठर के पास गया, तो युद्धिष्ठिर ने कहा है कि नितांत नग्न होकर माता के पास जाओ। तुम्हारी माता आंखों से पट्टी खोल कर तुम्हारे सारे शरीर पर दृष्टि डाल देवें तो तुम वज्र समान होजाओगे फिर कोई तुझे नहीं मार सकेगा इस वास्ते इस अवस्था में माता की शरण में जा रहा हूं। श्री कृष्ण भगवान ने जब यह बात सुनी तो आश्चर्य में पड़ गये, मन में कहने लगे कि कितनी आपत्तियों का सामना किया; अब सब कुछ हो चुका है केवल इसी दुष्ट का विध्वंस करना है। युद्धिष्ठर तो युद्धिष्ठर ही रहा, अब सारे किये कराये पर पानी फेर रहा है। झट दुर्योधन से कहा। अरे क्यों अपनी सारी शान और मर्यादा को खोता है।

युद्धिष्ठर तो दुष्ट है, वह तो बदला की भावना से अन्त में तेरी दुर्गति देखना चाहता है तू कितना बुद्धिमान होता हुआ भी तुम्हें तनिक लज्जा नहीं आती कि इतनी विशाल काया और फिर नितांत नग्न होकर माता के सामने जा रहा है ऐसा कार्य अज्ञानी से अज्ञानी और दुष्ट से दुष्ट भी नहीं करेगा, भले तू युद्धिष्ठर का कहना मान।
पर अपने लिंग को तो ढांप ले, तो दुर्योधन ने कहा, अब तो मेरे पास इस समय कोई वस्त्र नहीं है तो श्री कृष्ण महाराज ने फूलों की

मालाओं से कमर से लेकर पट तक ढाँप दिया, और फिर कहा कि अब जाओ।

दुर्योधन माता गांधारी के पास गया और कहा माता जी मैं युद्धिष्ठर के पास गया था उस ने कहा है कि तुम निताँत नग्न हो कर माता की शरण में जाओ, यदि वह आँखों से पट्टी खोल कर तुम्हारे सारे शरीर पर दृष्टि डाल दे तो तू पुनः बज्र समान हो जायेगा, कोई तुम को नहीं मार सकेगा, अब आप कृपा करके आंखो से पट्टी खोल कर मेरे शरीर पर दृष्टि डालें। गांधारी ने जब पट्टी खोल कर दुर्योधन को देखा तो चकित रह गई और पूछा। क्या तुम को मार्ग में श्री कृष्ण चन्द्र महाराज मिल गये थे दुर्योधन ने कहा—हां। तो गांधारी ने कहा। बेटा अब तुम नहीं बच सकते। दुर्योधन ने चकित होकर पूछा, माता जी इस का कारण। अथवा यह भी वतलाओ कि आप को कैसे ज्ञात हो गया कि मार्ग में भगवान कृष्ण चन्द्र जी मिले थे। तो माता ने कहा कि हे पुत्र। तू मुझको माता जानकर मेरे पास नहीं आया। और कहा संसार में अनेकों देवियाँ हैं भद्र पुरुष अपनी स्त्री के बिना अन्य सब को माता के समान जानते हैं। यद्यपि अपनी स्त्री वा माता दोनों देवियां होती हैं। पर अपनी मानसिक दृष्टि एक पर अपनी स्त्री भाव से और एक पर माता के भाव से पड़ती है। इस प्रकार दोनों के साथ व्यवहार जुदा २ होता है। माता के वास्ते पुत्र कितना ही धन से, ज्ञान से ऊंचा क्यों न हो जावे, फिर भी वह बेटा ही है। वह अपनी दृष्टि को नहीं बदल सकती। बालकपन से वृद्धावस्था तक समान दृष्टि रखती है और जानती है। पर तूने मुझे माता नहीं जाना। यदि जानता, तो जैसे युद्धिष्ठर ने कहा था वैसे ही तू पूर्ण रूपेण आता। क्यों कि वह धर्म पुत्र सत्यवादी था पर सत्य के पुजारी ही सत्य की तुलना कर सकते हैं। तेरा सारा जीवन ही अधर्म और असत्य मुख रहा है। तू सत्य पर कैसे चल सकता था। जिस पात्र में खटास लगी हो उस पात्र में अमृत गाय का दूध यदि धार द्वारा निकालें, तो गाय तो दूध देगी

परन्तु दूध, दूध नहीं रहेगा, न दही जमेगी। न मक्खन निकलेगा, न खोया न रबड़ी बनेगी। इससे यह परिणाम निकालना कि दूध खराब है भूल है। भूल का परिणाम तो असफलता ही है। बुद्धि स्थिर नहीं रहती। और कहा:—

"विनाश काले विपरीत बुद्धिः"

एक व्याध ने बुलबुल के फंसाने के वास्ते पाश (जाल) बिछाया बुलबुल आकर फंस गई। व्याध ने पकड़ लिया, कमर में सूत का मोटा तागा बाँध कर हाथ पर बिठाया तो बुलबुल ने प्रार्थना की, तू इन्सान है शब्द इन्सान उन्स (प्रेम) से बना है 'फारसी के प्रसिद्ध कवि शेख सादी ने कहा है:—

चूँ इन्सान बाशद फ़सलो एहसां।
चे फर्क अज़ आदमी ता नक्शे दीवार॥

अर्थ-यदि मनुष्य के भीतर कृपा-कृतज्ञता-प्रेम सहानुभूति के गुण नहीं हैं तो जिस प्रकार दीवार खिचा हुआ मनुष्य का चित्र होता है उसमें और ऐसे गुणहीन पुरुष में कोई भेद नहीं।

है उन्स, मादा उसका मुहब्बत हो उसका जमीर,
यही सबब है जो इन्सान नाम उस का हुआ।
दर्द दिल यासे वफा जज़बाऐ ईमां होना,
आदमीयत है यही और यही इन्सान होना।
हुसने सूरत महज़ बेरौनक है, सीरत के बंदों,
जिन गुलों में बू नहीं, वह खुशनुमा कहने को हैं।
वह आदमी ही क्या है, जो दर्दे आशना न हो,
पत्थर से कम है दिल जिसमें शरर गर निहां न हो।
हुकमें जिस्म है या दस्तगीरी नीम जानों की,
खरीदा करमिलें जितनी दुआऐं नातवानों की।

और कहा मुझ पर दया कर मुझे खोल कर मेरी आर्शीवाद ले। व्याध ने बुलबुल को छोड़ दिया, बुलबुल वृक्ष की शाखा पर जा बैठी और व्याध से कहने लगी, कि तूने मुझ पर दया की है। धन्यवाद करती हूँ, और कहा, कि जिस शाखा पर मैं बैठी हूँ। ठीक इसके नीचे जमीन को खोद इस में दबा हुआ कोश है निकाल लो। व्याध ने गढ्ढा खोदा और कोश दबा हुआ पाया, तो चकित होकर बुलबुल से कहा ऐ बुलबुल! यह बता। यह कोश जब भूमि में दबा हुआ था तुझे दीख रहा था परन्तु भूमि के ऊपर बिछा हुआ जाल तुझे न दीख पड़ा और तू आकर फंस गई। इस का कारण? तो बुलबुल ने कहा:—

"विनाश काले विपरीत बुद्धिः"

क्षुधा से पीड़ित थी दृष्टि दाने पर थी जाल दीख भी न पाया। गांधारी ने कहा बस प्यारे! तेरी दृष्टि भोगों पर ही रही, तुझे भीतर की वास्तविकता का क्या ज्ञान। पुत्र! किये कर्मों का फल भोगे बिन मुक्ति नहीं होती। वास्तविकता तो तब प्रत्यक्ष होती है जब कि आपत्ति सर पर आती है कबूतर के सामने बिल्ली आ जाने पर कबूतर आंखें बन्द कर लेता है। इस विचार से बिल्ली चली गई, पर पुत्र! यह तो मन के लड्डू हैं बिल्ली आ कर गला नोच लेती है।

दूसरी बात यह है तेरा दुष्टता का फल देने के वास्ते श्री कृष्ण जी को ही ईश्वर ने भेजा था इतने शूरवीर योद्धाओं और असीम सेना का होना क्या अर्जुन की शक्ति ने उनका नाश किया है? अर्जुन तो पग २ पर दम तोड़ कर बैठ जाता रहा। अर्जुन तो शरीर था, कृष्ण ही उसका प्राण था। श्री कृष्ण जी ने कितना तुझे समझाया। परन्तु तू ने उस की एक न मानी। अनेकों बार तू ने उसका अपमान किया। प्यारे! लाखों भेड़ों के पालने वाला मत यह अहंकार करे कि मैं जंगल का सरदार हू। इसके विपरीत एक शेर की गर्ज से सर्व भेड़ें दुम दबा कर भाग जाती हैं।

तीसरी बात माता गाँधारी ने पुत्र से यह कही। मैंने आज तक अपने स्वामी (पति) की आज्ञा का उलंघन नहीं किया, और उनकी सेवा

से अपने आपको वंचित नहीं किया। छल कपट उन के साथ भूल कर भी नहीं किया। यह उसी का ही फल है। स्त्री स्वामी की सेवा करने से मुक्ति पा लेती है। पतिव्रता देवी इस जन्म में ही मोक्ष प्राप्त कर लेती है। वह अपने कर्त्तव्य पालन करने में योग सिद्धी प्राप्त कर लेती है। प्यारे गांधारी ने जब अपने पति को प्रज्ञा चक्षु देखा तो उसने अपनी आंखों पर पट्टी बांध ली थी। यही दिव्य शक्ति ही थी। जिस ने दुर्योधन को आते ही कहा था कि तुझे रास्ते में कृष्ण ही मिल गया था। गांधारी ने कहा यदि तू अपनी कमर को ढाँप कर न आता. तो पूर्ण वज्र बन जाता यह कृष्ण की चालाकी है, अब तो तेरा कुशल नहीं है। प्यारे! अब पछताए क्या होत जब चिड़ियाँ चुग गईं खेत अब दुर्योधन युद्ध क्षेत्र में आया उसके मुकाबले में भीम ने गदा लेकर ललकारा। दोनों की मुठभेड़ हुई जिसमें भीम हताश हो गया। उस समय श्री कृष्ण जी ने पट पर हाथ मारते हुए भीम को संकेत किया, बस भीम ने गदा कस कर दुर्योधन के पट पर मारा। तो दुर्योधन अचेत होकर गिर पड़ा और कहने लगा, कि कमर के नीचे वार करना तो अधर्म है। यह सुनकर भीम तो असमंजस में पड़ गया, तो कृष्ण ने झट कहा, अरे दुर्योधन! उस समय तेरा धर्म कहाँ गया था, जब निष्पाप पाण्डवों के जलाने के लिये लाक्षा भवन तैयार कराया था; और सभा मण्डप में द्रोपदी को नंगा कर के पट पर बिठाया वह कौन सा धर्म था। भीम ने जब यह शब्द सुने, तो रक्त उबलने लगा। गदा उठाकर एक बार और दुर्योधन के पट पर दे मारा; और उसकी पट के रक्त से दो चुल्लू भर कर अपनी प्रतिज्ञा को पूर्ण किया। और दुर्योधन को सदा की नींद सुला दिया। प्यारे! माता की आशीर्वाद और दृष्टि इतनी प्रबल थी कि जहाँ २ पर गाँधारी की दृष्टि पड़ चुकी थी, वह वज्र बन चुकी थी वहाँ भीम का आक्रमण कुछ न कर सका और न हो सकता था।

अधा मित्रो न सुधितः पावको ग्निर्दीदाय मानुषीषु विक्षु ॥
ऋ० म० ४ सू० ६ म० ७

भावार्थः-हे मनुष्यो जिस पुत्र के विद्यमान रहने पर माता और पिता को दुःख होता और सत्कार नहीं होता है, वह भाग्यहीन निरन्तर पीड़ित होता है। और जिस पुत्र की उत्तम सेवा से माता पिता प्रसन्न होते हैं। उसकी प्रजाओं में प्रशंसा और उस को सुख होता है।

अवज्ञाकारी सन्तान और उसका परिणाम

एक अपनी बीती घटना मुझे अलीपुर तहसील के श्री अज़ीज़ बी० ए० मुख्याध्यापक ने सुनाई, वह इस प्रकार है:—

उन्हों ने कहा कि हम चार सहपाठी बी० ए० में पढ़ते थे। बी० ए० पास कर के अपने भाग्यनुसार कार्य में लग गये तो एक सहपाठी ने हम को निमंत्रण दिया, हम तीनों उस के पास गये, मेज कुर्सियां बिछी हुई थीं, हम बैठ गए। खाना आया और हम चारों ने खुशी से खाया। खा चुकने के पश्चात् हमारे मित्र ने हम तीनों से पूछा, कोई अन्य सेवा। तो मैंने कहा कि मुझे हुक्का पीने की लतहै। तो मेरा मित्र हुक्का लाया उस में उसने पानी डाला फूल में तम्बाकू रखा और आग उठाने जा रहा था तो एक वृद्ध सफेद दाढ़ी वाला सज्जन अकस्मात मिल गया तो मेरे मित्र ने उस को कहा-यह फूल ले जाओ इस में आग ले जाओ।

वह वृद्ध फूल लेकर आग ले आया, मैंने हुक्का पिया और मित्र से आज्ञा लेकर हम चले गये। अज़ीज ने कहा कि मैं उस समय तहसील लय्या के मिडिल स्कूल का मुख्याध्यापक था। कुछ काल बीता एक दिन मेरे द्वार पर दस्तक हुई। मैने सेवक को कहा कि देखो कौन द्वार पर खड़ा है। सेवक ने लौट कर कहा, अमुक नाम का व्यक्ति अमुक नगर का रहने वाला अपने आप को बतलाता है तो मैंने कहा उसको भीतर ले जाओ। सेवक कुछ दूर गया ही था तो मैंने सेवक

से पुनः पूछा, कि वह किस स्थिति में है, तो सेवक ने कहा कि वह तो भीतर आने के योग्य नहीं। बहुत बुरी दशा में, फटे पुराने लत्ते कपड़े हैं जिसको देख कर घृणा आती है। तो अज़ीज ने कहा मैं स्वय ही उठ कर गया तो क्या देखा, कि दस्तक करने वाला वही मित्र है। जिस ने हम को निमन्त्रण दिया था। अज़ीज उसको अपने साथ भीतर लाया, उस का अतिथि सत्कार किया, उसके फटे पुराने कपड़े उतरवाये और नए वस्त्र पहनाए और साथ बिठाया फिर मैं ने पूछा, मित्र! तू हमारी श्रेणी में प्रथम, परीक्षा में प्रथम, और सेवा में भी प्रथम था, पर इतने अल्प काल में यह तेरी दुर्दशा क्यों हो गई है। मेरे इस प्रश्न पूछने पर मेरा मित्र फूट २ कर रोने लगा, कुछ बताता नहीं। मैं पूछूं वह रोए, तो मैं ने तंग आकर कहा–मित्र! मैं परमात्मा तो नहीं हूँ, जो कि तेरे मन की बात को जान लूँ, कुछ तू बताएगा तो मेरे से जो बन पड़ेगा, तेरी सेवा करुँगा, मैंने जल का गिलास लेकर उसे पिलाया और वह शान्त हुआ और वह फिर यूँ कहने लगा भ्राता जी! जब मैंने आप सब मित्रों को निमन्त्रण दिया और खाना खिलाने के पश्चात् मैंने आप से कुछ सेवा पूछी, तो आपने हुक्का पीने की इच्छा प्रगट की। आपके कहने पर मैं ने हुक्का तैयार किया और फूल में आग लेने को चला ही था तो एक वृद्ध आगे आ गया। उसको मैंने कहा कि फूल में आग लाओ, वह आग लाया और आपने हुक्का पिया। वह वृद्ध मेरे पिता जी थे। मैं नौकरी के नशा में मस्त था कि मुझे २५०) वेतन मिलता है, मैं ने यह न देखा कि ऐसी निकृष्ट सेवा के लिए मै अपने पिता को आज्ञा देरहा हूँ। पिताजी आग लाए। आपने हुक्का पिया आपके चले जाने के पश्चात् पिताजी ने इसको बुरा मनाया, और मुझे शाप दिया। परिणाम यह निकला कि मैं थोड़े दिनों में अपने कार्य से पृथक कर दिया गया। अब मैं अपने कार्य से पृथक हूं। अब यह मेरी दशा है कि दर पर आए कुत्ते को लोग ग्रास डालते हैं पर कोई नहीं मुझे पूछता यह कहकर पुनः वह फूट२ कर रोने लगा यह बात सुनकर मेरी आखोंसे आंसू भर आये। हिचकी आने लगी तो मैंने पर-

मात्मा से प्रार्थना की, ऐ दयालू पिता ! तू हम पर दया कर, हम अब परीक्षा के योग्य नहीं । हम पापी हैं । हम पर दया करो, करुणा करो हमें मार्ग दिखाओ । इस अन्तर में मुझे भीतर से ध्वनि आई कि जाओ तुम सब मिल कर अपने किये का प्रायश्चित करो और उस व्योवृद्ध से क्षमा की याचना करो । अजीज ने कहा मैंने उसी समय शेष दो मित्रों को चिट्ठी लिखी, कि रविवार को पहुँचो । जब रविवार को हम सब एकत्र हुये, तो यह निश्चय किया कि हम चारों गले में वस्त्र डाल कर इसके पिता के चरणों में चल कर क्षमा मांगें और आर्शीवाद की याचना करें । अब हम चारों इस निश्चय के अनुसार गले में वस्त्र डाल कर नतशिर हो उसके पिता के यहाँ चले । देखा वह सज्जन बैठे हुये है पर क्या बतलावें, कि उसकी आँखों की दृष्टि दूर से ही ऐसी हमारी आंखों को चुंध्याने लगीं जैसे सूर्य के सम्मुख होने से । अस्तु हम सब उसके समीप जाकर उसके चरणों में गिर पड़े । और फूट २ कर रोने लगे । उस वयोवृद्ध ने हमें बहुत फटकारा और कहा जाओ मेरी आँखों से दूर हो जाओ । ऐसी सन्तान से मैं बिना सन्तान रहना अच्छा समझता हूँ । कई वार उसने ऐसा कहा परन्तु हम ने चरण न छोड़े अन्ततः उसके पिता के आँखों से भी अश्रु बह निकले, उसने हम चारों को गले से लगाया और आर्शीवाद दी । हम ने मित्र की मिसल निकलवाई, पुनः विचार कराया और भगवान् की कृपा से हमारा पुरुषार्थ सफल हुआ और मेरा मित्र पुनः उसी कार्य पर नियुक्त हो गया ।

प्यारे ! यह है पिता के निरादर तथा आर्शीवाद का फल ।

★ गुरु ★

प्यारे ! पूर्व ही बताया गया है कि शत पथ ब्राह्मण में लिखा है कि मनुष्य के तीन गुरू हैं (१) माता (२) पिता (३) आचार्य, माता पिता के सम्बन्ध में विस्तार से ऊपर बताया जा चुका है । अब गुरू

के सम्बन्ध में सुनिये, कि गुरू कौन हो सकता है। शिष्य का गुरु के प्रति क्या कर्त्तव्य होना चाहिये, वर्तमान काल में प्रायः मास्टर, लाला जी, मौलवी, पन्डित गुरु नहीं कहलाते। यह तो व्यापार करने वाले होते हैं। जैसे दुकानदार को पैसा दिया उसके बदले सौदा लिया वैसे विद्या दिलाई जा रही है। जिसका फल, न आचार न विचार, न सदाचार है। भोगी पढ़ाने वाले और भोगी उत्पन्न हो रहे हैं। न मास्टर, लाला अपने उद्देश्य को समझते हैं और न ही शिष्य। उपमा के लिये कुछ घटनायें लिखता हूँ प्राचीन काल में शिष्य गुरू की खोज करते थे। परन्तु आज गुरू शिष्य की खोज करते हैं। घर २ में जाकर बालकों तथा बालकों के माता पिता को प्रार्थना करते हैं कि अपने बालक को हमारे स्कूल में प्रविष्ट कराओ। कैसी दयनीय दशा है, यदि किसी धनी बालक की कोई अध्यापक टयूशन रख लेवे, तो उसे बालक के सारे नाज नखरे सहने पड़ते हैं। जैसे मास्टर बालक को पाठ पढ़ा कर जाता है। दूसरे दिन मास्टर फिर पढ़ाने आता है, बालक से पाठ पूछा, नहीं आया, तो मास्टर ने बालक को समझाने के लिए थोड़ा सा दण्ड दिया। लड़का रोता रहा और पढ़ता भी रहा। जब मास्टर जी पढ़ाकर चले गये तो लड़का रोता हुआ मां के पास आकर कहता है कि मैं भोजन नहीं खाता। मां प्यार करती है फ़िर भोजन न खाने का कारण पूछती है कि भोजन क्यों नहीं करता, बालक कहता है। मुझे मास्टर जी मारते हैं। मैं इस मास्टर के पास नहीं पढ़ता; तो माता कहती है; बस यही बात है। उठ भोजन खाले। यह मास्टर हमारा नौकर है हम जब चाहें, इसको हटा दें। कोई उस के बंधे हुए थोड़े हैं कल उसको हटा देंगे जो तू चाहेगा वह रख लेंगे। अनेकों मास्टर आकर याचना कर जाते हैं अब बालक चुप हो गया बड़ा प्रसन्न होकर भोजन किया। दूसरे दिन मास्टर जी को पता लगा कि मेरी टयूशन गई तो एकान्त में बालक को बुलाकर याचना करता है कि मैं तुम को नहीं मारूँगा। प्रेम से पढ़ाऊंगा। यदि पुनः मारूँ तो फ़िर दूसरा मास्टर रख लेना। बालक कहता है अच्छा! फिर आप ही

पढ़ाने आना। बालक घर आया, कहा माता जी! आज कल वाले मास्टर जी पढ़ाने आवेंगे। उस को पढ़ाने दो, यदि उसने पुनः मारा तो हटा देंगे। माता ने कहा! अच्छा बेटा तुम्हारी खुशी। अब बताओ शिष्य गुरू बना या; गुरू शिष्य बना। अब मैं अपनी कानों सुनी घटनाएं इस के नितान्त प्रतिकूल कहता हूँ।

१-एक माननीय व्यक्ति के मुख से

मेरे पास एक आर्य समाज के प्रसिद्ध माननीय व्यक्ति आए और वार्तालाप करते हुए अति दुखित हृदय तथा व्याकुलता से कहा कि स्वामी जी! प्रभु ने मुझे सन्तान दी। उसके लालन पालन के सर्व साधन प्रदान किये। उनके भावी जीवन के लिये उत्तम शिक्षा चाहिये। वर्त्तमान काल में स्कूलों, कालिजों, पाठशालाओं की अवस्था देखी। भिन्न २ सम्प्रदायों ने अपने २ स्कूल, कालिज खोले हुए हैं। ईश्वर की कृपा से आर्यसमाजने ऋषिदयानन्द के नाम पर डी० ए० वी० स्कूल पाठशालायें तथा कालिज भी खोले। यद्यपि राज्य की ओरसे पहिले स्कूल व कालिज विद्यमान हैं परन्तु पृथक २ कालिज स्कूल खोलने का अभिप्राय तो यह था कि विद्यार्थी वेद के पुजारी, सदाचारी, माता पिता के आज्ञाकारी देश के भक्त, भगवान के उपासक तैयार होंगे। ताकि संसार में सुख और शान्ति का राज्य स्थापित हो। इन्हीं मुख्य उद्देश्यों को सम्मुख रख कर यह डी० ए० वी० स्कूल खोले गये थे! परन्तु परिणाम विपरीत निकला। 'प्रत्यक्षे किं प्रमाणम्'। और कहा कि मैं स्वयं इन्हीं स्कूलों कालिजों में पढ़ा, पूज्य महात्मा हंसराज जी स्वय सत्यार्थ प्रकाश और धर्म शिक्षा पढ़ाते थे और हमारे चरित्र को बनाने में कटिबद्ध रहते और आर्य समाज के सद्गुणों से हमें जागृत करते। मनुष्य कर्त्तव्य, मनुष्य जीवन का उद्देश्य बतला कर हमें सन्मार्ग पर चलाते यह उस महान-पवित्र-तपस्वी-त्यागी की शिक्षा का परिणाम है जो आज तक आर्य समाज रूपी माता की सेवा करने में ही मुझे शान्ति मिलती है।

इसके विपरीत आजकल के प्रिन्सिपल, प्रोफेसर, मुख्याध्यापक तथा पण्डित महोदयों को देखें जिसके नाम पर स्कूल में सेवा करते हैं, जिसका अन्न खाते हैं, तनिक भी दिल में विचार नहीं करते कि हम किस प्रकार संसार को धोके में डालकर अपना अनमोल जीवन नष्ट भ्रष्ट कर रहे हैं। वह छोटे २ बालक तथा युवक जो भावी समय के हमारे पद अधिकारी बनेंगे, किस भट्ठी में उनको धकेल रहे हैं।

और कहा महाराज! मेरा पुत्र मैट्रिक में पढ़ता है। कल स्कूल से आकर कहा कि हैडमास्टर साहिब ने आज्ञा कीं हैं कि स्कूल का प्रत्येक विद्यार्थी दस २ आने कल साथ लावे ताकि लड़कों को सिनेमा दिखाया जायगा, यह सुनतेही दिल बड़ा दुखी हुआ कि मैंने लड़कों को अन्य स्कूलोंमें शिक्षा इस लिये न दिखाई कि भगवान् दयानन्द के स्कूल में लड़का पढ़कर सदाचारी तथा देश भक्त बनेगा। अपने माता पिता के नाम को उज्जल करेगा। अब दयानन्द स्कूल के हैडमास्टर का यह हाल है। अब रकम न दूँ तो लड़का रोता है, मास्टर जी बुरा मानेंगे। क्लास में ताना लगाया करेंगे अब बताएं ऐसी अवस्था में हम क्या करें। जब ऐसे हैडमास्टर जो सिनेमा वालों से भी अपनी दलाली ठहरा कर नवयुवकों का जीवन; आचार भ्रष्ट कर रहे हों। तो अब कहां शिक्षायें दिलवाऐं स्कूल के प्रबन्धक, कमेटी के अधिकारी खुशामदी जिस की हैडमास्टर ने खुशामद कर दी, वह खुश हो गये। उन को क्या? कोई मरे अथवा जीवे, उनको तो मान चाहिए। यह हैं ऋषि दयानन्द के भक्त। क्या इन का भविष्य सुख व शान्ति का गुजरेगा। वह स्वयं अपनी बुद्धि से उत्तर लेवें। शैख सादी ने कहा है:—

अगर बीनम कि ना बीना ओ चाह अस्त।
वगर खामोश व नशीनम गुनाह अस्त।

अर्थात्— तू देखे कि अन्धा जा रहा और उसके आगे कूप आ गया है, और यदि तू मौन रह जाय, उसे न बचाये तो पापी है।

सहस्रों की संख्या में डी० ए० बी० स्कूलों, कालिजों में विद्यार्थी पढ़ते हैं आप सोचो कि कितने विद्यार्थी आर्य समाज के साप्ताहिक अधिवेषण में आते हैं। जब गुरू स्वय मुक्त हों, शिष्य विचारों को क्या दोष ? आर्य समाज के सत्संग से मास्टरों को धन थोड़ा मिलता है जो यह आयें ? फिर लड़कों को क्यों कर आदेश करें और यदि आदे करें भी तो कौन इन की सुनता है। यह सभी अध्यापक परस्पर यों जुटे हुये हैं कि:—

मन तुरा हाजी बियोयम, तू मरा मुल्लां बगो।

कोई मरे अथवा जीवे, इनको क्या ? इनको दाम से काम है।

२. एक और व्यक्ति आया। दुख भरे शब्दों से कहा कि स्वामी जी ! पुस्तक 'पितृ यज्ञ प्रसाद' मैंने आपकी लिखी हुई पढ़ी. आप ने ऐसी पुस्तक लिख कर भावी सन्तान को सन्मार्ग दिखाया है। पर मैं आपसे क्या प्रगट करूँ ? मेरा लड़का कक्षा ८ श्रेणी तक अच्छा पढ़ता रहा जब मैट्रिक में प्रविष्ट हुआ तो मुख्याध्यापक ने आज्ञा दी कि सिनेमा देखने को ।।=) चन्दा लाओ सिनेमा दिखायेंगे लड़का आया रोया। मैंने ।।=) दे दिये। अब उसे सिनेमा दिखाने का यह फल मिल रहा है कि तीसरा वर्ष है मैट्रिक में उत्तीर्ण नहीं हो सका घर से, रुपया चोरी उठाकर ले जाता है अथवा लड़कों से उधार लेकर स्कूल जाने के बजाय सिनेमा ही चला जाताहै एक बार तो वह तीन सौ रुपये चोरी कर के भाग गया। अगले जंकशन स्टेशन से जाकर पकड़ लाया हूँ। पचास रुपये नष्ट कर चुका था, शेष राशि उससे मैंने ले ली है। अब बताएं, यह तो हुई डी० ए० वी स्कूलों की दशा, जो संसार का उपकार करने वाले हैं अब कहाँ लड़कों को पढ़ाएं ?

प्यारे ! यह दो सच्ची घटनायें मैं ने लिखी हैं। अब आप मन में विचारें, आप सब का कर्त्तव्य है कि ऐसी कमेटी के अधिकारियों और मास्टरों का संशोधन करने के लिये यत्न करो। यह जो राज्य तपस्वियों के तप त्याग का फल हमें मिला है इसको सुरक्षित रखने के वास्ते तपस्वी, त्यागी, ब्रह्मचारी, सदाचारी सन्तानें बनाएं।

(२) "वर्तमान के गुरुओं को उचित सूझ"

प्रश्न होता है ? एक विद्यार्थी बी० ए० पढ़ता है, वह परीक्षा में उत्तीर्ण हो जाता है। तो इसे पास होने (उत्तीर्ण होने) की डिगरी कौन देता है ? उत्तर मिलेगा, गवर्नर, जो सूबा का मालिक है। अब बी० ए० की डिग्री मिल गई ग्रेजुएट बन गये। अब वह ग्रेजुएट अपना प्रार्थना पत्र लिख कर बी० ए० की डिग्री सहित नौकरी के लिए आफीसर के पास जाता है तो बताईये, आफीसर बी० ए० की डिग्री को देख कर ग्रेजुएट को सर्विस देगा ? उत्तर स्पष्ट होगा कदापि नहीं। भले ही बी० ए० की डिग्री प्रांत के मुख्य बड़े शासक गवर्नर ने प्रदान की है तथापि वह मान्य नहीं है तो प्रश्न होता है ! क्यों ? उत्तर आएगा पहले अपने सदाचार का (कैरैकटर) सार्टीफिकेट लावें अब सोचो कि कौन सी डिग्री मान्य हुई ? उत्तर होगा, आचरण की अब यह आचरण के पवित्रता की डिगरी कौन देगा, क्या माता पिता या कोई आफीसर देगा नहीं २ किन्तु यह डिग्री तो एक मात्र स्कूल कालेज का प्रिंसिपल तथा हैडमस्टर ही दे सकता है। अब जब लड़का सदाचार के सार्टीफिकेट के लिए जाकर प्रार्थना करता है तो प्रिंसिपल ने तत्काल कागज, कलम, दवात उठाई और लिख दिया इसका आचरण शुद्ध है (कैरेकटर गुड है), अब इस प्रिंसिपल से पूछो कि परमात्मा को साक्षी करता हुआ अपने हृदय पर हाथ रख कर कहे, कभी तूने इस लड़के के आचरण का ख्याल, विचार किया ? क्या तू जानता है यह सदाचारी है ? उत्तर स्पष्ट होगा कदापि नहीं। तो ऐ प्रिंसिपल और हैडामस्टरजी कुछ अपने पर दया करो। कितने विश्वासघाती बन कर अपने अनमोल हीरे जन्म को खो रहे हो सारे राज्य का विश्वास आपकी कलम पर है। दुराचारी लड़कों को सदाचारी लिख दिया क्या कुछ सोचा कि परमात्मा ने कैसे सीधे साफ सुथरे हाथ दिए हैं। जिन से सत्य कर्म होना चाहिये; बुद्धि जो लाखों करोड़ों रुपयों से नहीं मिलती। किस चीज के बदले इसका नाश कर रहे हो सारे राज्य को अंधेरे में डाल रहे

हो क्या तुम्हारा जीवन भविष्य में प्रकाश प्राप्त कर सकेगा, नहीं कदापि नहीं, वेद भगवान् ऐसे विश्वासघाती के सम्बन्ध में क्या आदेश करता है। पढ़िये।

यजुर्वेद अध्याय ४० मन्त्र ३

ॐ असुर्या नाम ते लोका अन्धेन तमसावृता:
तांस्ते प्रेत्यापिगच्छन्ति ये के चात्महनो जना:

अर्थात्-जो आत्मा के विरुद्ध चलते हैं, विश्वासघात करने वाले मनुष्य हैं जो वाणी से कुछ कहते हैं और करते कुछ और हैं वे लोग मर कर गहरे अंधकार से अच्छादित हुए प्रकाश रहित लोक को प्राप्त करते हैं।

❖ आर्दशगुरु ❖

मुलतान में भक्त रामचन्द्र जी बी० ए० बी टी गवरमेंट हाईस्कूल में अध्यापक थे। नियमों के कट्टर थे। समय पर आना और जाना। डिप्टी कमिश्नर साहिब ने अपने बालक के लिए भक्त जी की टयूशन रखनी चाही। कोठी पर उन्हों ने बुलाया और भक्त जी से प्रार्थना की कि आप मेरे बालक को पढ़ाया करें, पढ़ाने का समय अथवा शुल्क की राशि निश्चित कर लेवें। भक्त जी ने कहा, मुझे समय नहीं है और न मैं पढ़ा सकता हूं स्कूल का कार्य मेरे मस्तिष्क के लिये पर्याप्त है, इससे अधिक काम नहीं ले सकता। न मुझे पैसे की आवश्यकता है! मेरा निर्वाह वर्तमान वेतन पर चल जाता है, यह कहकर चले आये। डिप्टी कमिश्नर साहब ने स्कूलों के इन्सपैक्टर को लिखा, कि भक्त जी की टयूशन रखा देवें। इन्सपैक्टर साहब ने भक्त जी को बुलाया, और कहा और समझाया पर ढाक के वही तीन पात। भक्त जी ने कहा, मै डिप्टी कमिश्नर साहब को पूर्व ही उत्तर दे चुका हूँ। क्या उन को मेरी बात पर विश्वास नहीं आया, और कहा इन्स-पैक्टर साहब! यदि एक स्कूल का अध्यापक स्कूल का कर्त्तव्य पूरा पालन करे; तो वह टयूशन कदापि नहीं पढ़ा सकता, यदि पढ़ायेगा तो थोड़े

काल में बुद्धि से हाथ धो बैठेगा। जीवन नष्ट करेगा। हाँ यदि मैं आपको अथवा डिप्टी कमिश्नर को खुश करूँ, तो पहले अपने कर्त्तव्य से हीन होऊँ। जिस का वेतन पाऊं उससे छल करूँ। अपना भविष्य बिगाड़ूँ। अतः न मुझे रुपये की जरूरत है और न ही मेरे पास समय है। जितना मुझे वेतन मिलताहै उससे मेरा निर्वाह अत्युत्तम हो जाता है। न खाया हलवा—खाली दाल रोटी। न कीमती वस्त्र पहने सादे वस्त्र पहन लिए, पर सुख की नींद तो सोया करुँगा और न ही दर २ बालकों के पांव चूमुँगा, यह सुन कर इन्सपैक्टर जी चुप हो गये।

वर्तमान टीचर (अध्यापक)

प्यारे! स्वार्थी भोगवादी अध्यापकों का काम ही तो है, कि स्कूल में तो समय व्यर्थ खो दिया, गीध की न्याई देखा कि यह धनी का बालक है बस उसको दो चार थप्पड़ लगाए, समझा बुझा कर भेजा कि माता पिता को जाकर कहो, मैं हिसाब पढ़ने आदि में कमजोर हूँ मुझे मास्टर रख दो। अब बालक के कहने पर पिता स्कूल आया, मास्टर से पूछा, मेरा बालक कैसा चलता है, तब मास्टर ने कहा, पढ़ने अथवा हिसाब में डल है। बालक के पिता ने कहा, तो आप कृपा कर के स्कूल क समय के पश्चात् पढ़ा दिया करें हम आप का हक चुका देंगे। अब मास्टर प्रसन्न होगया कि मेरा कार्य सिद्ध हो गया।

प्यारे! बुद्धिमान बालकों को स्वार्थी अध्यापकों ने निर्बुद्धि बना दिया है। स्कूल से निकलते ही मास्टरों को खाना पीना भूल जाता है, बालक अभी स्कूल से घर नहीं पहुँचते परन्तु मास्टर पूर्व ही बालक की परीक्षा उसके घर पर कर रहे होते हैं ताकि एक घण्टा इसको पढ़ाएं पुनः दूसरे, तीसरे बालक के घर जावें। इसी प्रकार १२ बजे रात्री तक बालकों के घर पर घूमते रहते हैं। भला ऐसे लोगों का भविष्य स्वर्ग बनेगा या नरक। परन्तु निर्धनों के बालक स्वयं पुरु-

षार्थी होते हैं। वे धनिओं के बालकों से प्रथम रहते हैं। चाहे धनी

बालक टयूशन भी रखते हैं, यह क्यों ? इसलिए कि निर्धन बालक परमेश्वर के सहारे रहते हैं और पार हो जाते हैं। परन्तु अमीर धनिओं के बालक नास्तिक होकर सदैव माता पिता के धन के नाज पर अपना जीवन नष्ट कर देते हैं। वर्तमान काल में प्रायः बालकों का जीवन देखो, जो विद्यार्थी जीवन, मनुष्य की नींव कही गई है। भला किसी मकान की नींव में सजावट की जाती है, नहीं, सदैव नींव में रोडी पत्थर आदि से कुटाई की जाती है तभी तो मकान अधिक समय तक स्थिर रहता है। उसके आधार पर ऊपर मंजिलें जाती हैं। यदि मकान की नींव में ही सजावट की जावे तो मकान कैसे स्थिर रह सकता है और ऊपर मंजिलें कैसे जा सकतीं हैं, वर्तमान काल में स्कूलों पाठशालाओं में आप देखते हैं बालकों ने बालिकाओं जैसा हार सिंगार करना अर्थात (कंघा शीशा से बाल बनाना) और बालिकाओं ने बालकों की न्याईं नंगे सिर रहना प्रारम्भ कर दिया है। मुंह पर पौडर लिवण्डर या सेंट, होठों हर मसी लगा कर तन को चमकदार वस्त्र और भूषणों से सज धज बना कर अति ढेठाई की तरह फिरती हैं। न घर में खाना पकाना, न पति सेवा, जहां चाहे घूमें।

स्त्री, पुरुष बनी हुई है, और पुरुष स्त्री, वाह रे ज़माने। मैंने शिमला में दृश्य देखा कि माल रोड पर युवती देवियाँ सज धज कर के हार सिंगार कर सिर पर छाता लिये आती हैं। उन के पति भी साथ २ हाथ से हाथ मिलाये घूमते हैं। अनेकों पढ़े लिखे पदाधिकारी ठीक ४ व ५ बजे अपने कार्य से अवकाश पाकर माल रोड पर उन देवियों का दृश्य आकर देखते हैं और अपनी पवित्र दृष्टि को दूषित करते हैं। नहीं सोचते कि यदि मेरी पुत्री इसी स्थान पर इसी प्रकार घूमने आवे और अन्य पुरुष उस पर मेरी न्याईं दृष्टि डाले, तो क्या मैं सहन कर सकुँगा।

उत्तर यह होगा कि इस सदाचारी पुरुष के वास्ते डूब मरना होगा, पर यहाँ पर तो बाबा आदम ही निराला है। ऐसी देवियों को देखने वाले अपनी कन्या पुत्र नहीं देखते, और सज धज आने वाली

देवियों की कामना भी यही होती है कि लोग हमें देखें। क्या यह वेश सभ्य घरानों का होता था हरगिज नहीं। हां गुण्डे, निर्लज्ज, कामी यह कार्य करते हैं परन्तु जो देवियां वहां घूमने आती हैं क्या वह मूर्ख थोड़ी होती हैं, वे बी० ए० ऐम० ए० पास होती हैं परन्तु वह इस बात को नहीं समझतीं कि यह हार सिंगार हमारे आंतरिक जीवन के लिए अत्यन्त हानिकारक है पर वर्तमान शिक्षा उनको अपने अध्यापिकाओं से यही मिलती है। कहावत है:—

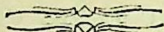
गुरू जिन्हांदे चन्देरे चेले चौड़ चपट वाली बात है।

ऋगवेद म० ८ सू० ६६ मं० १६ में लिखा है:—

अधः पश्यस्व मोपरि सन्तरां पादकौ हर।
मा ते कशप्लकौ दृशन् स्त्री हि ब्रह्मा बभूविथ ॥

अर्थात्-ऐ स्त्री! नीचे देख ऊपर न देख, गम्भीरता से पाँव रखकर चल तेरा अवयव (अंग) किसी को दिखाई न दे, क्योंकि यह आत्मा ही स्त्री रूप तेरे भीतर प्रगट हुआ है। (१) पुरुष की तरह ऊपर न देख नीचे देख। (२) चलने के समय गम्भीरता से चल अर्थात् तेरे पाँव की आवाज दूसरे के कान में न पड़े। (३) वस्त्र से अपने अंगों को ढांप कर चल ताकि तेरा अंग दूसरों को दिखाई न दे। प्यारे! जो देवियाँ आंख ऊपर करके चलती है! उन का तेज बल नष्ट होजाता और वह निर्लज्ज कहलाती हैं लज्जा का स्थान आंख में है एक सती देवी भगवती सीता पर रावण ने आक्रमण किया। जिसका फल रावण स्वयंमेव नष्ट हुआ, और उस की कुल भी नष्ट हो गई। आज लाखों वर्ष उसकी मृत्यु को हो गये परन्तु कलंक का टीका बराबर उस पर लगा आता है। हर वर्ष विजयादशमी पर प्रत्येक हिन्दू राम की जय और रावण की क्षय की ध्वनि लगाता है। यह है भगवती सीता का तप और शिक्षा का बल।

❀ आदर्श पिता ❀



प्यारे ! मनुष्य संतान उत्पन्न करता है, और पशु पक्षि भी संतान पैदा करते हैं । पशु का बच्चा जन्म लेते ही पांच दस मिन्ट के बाद खड़ा हो कर चलता है। माता के स्तनों का दूध स्वयं पीता और उछलता कूदता फिरता है। जब कुछ बड़ा हुआ उस के सामने कोई चीज पड़ी हो वह खाने योग्य होगी तो खायगा नहीं तो सूँघ कर हट जायगा। विपरीत इसके मनुष्य का बच्चा जब जन्म लेता है तो मैल में लतपत होता है। स्वय कुछ नहीं कर सकता, माता ही उसे मैल से साफ सुथरा करेगी। उसे उठा कर मुँह में स्तन डालेगी। बोलना सिखाएगी, अंगुली से पकड़ कर खड़ा होना, चलना, फिरना सिखायगी ! बच्चे के सामने जो चीज कलम, दवात आदि आ जाए वह उठा कर मुँह में डाल लेगा वह नहीं जानता यह मेरे काम की है या नहीं; मानो आरम्भ मे ही वह ज्ञान प्राप्ति के लिये आया है। बच्चे को अनजान कहा है ज्ञान रहित माना जाता है। परन्तु ज्ञान मिलता कहां से है ? पहला गुरू माता है। माता वह जो मति के बनाने वाली। दूसरे गुरू पिता हैं। तीसरे गुरू आचार्य।

मैं इस पुस्तक में गुरू, माता, के बिषय में अनेक घटनाएं लिख चुका हूं अब पिता के सम्बन्ध में कुछ लिखुँगा जो कि गुरुका दर्जा (स्थान) रखता है। आदर्श पिता ही आदर्श सन्तान बना सकता है।

एक सद् गृहस्थी जिसका एक ही लड़का था एक दिन रात को जब सोने का समय हुआ; तो पिता ने लड़के से कहा कल तुम कमा आना, फिर घर आना, खाना, खाना। बिना कमाए घर मत आना। लड़के ने पिता की बात सुनी और सो गया। प्रातः उठा; खेल कूद में मस्त हो गया, धनी पिता का पुत्र था। जब सायंकाल हुआ तो पिता की बात याद आई चिंता करता हुआ घर पर आया, मकान के चोखट

को पकड़ कर रोना आरम्भ कर दिया। माता ने जब बच्चे का रोना सुना दौड़ती हुई बाहर आई। बच्चे को पकड़ कर पूछा बेटा! किस ने तुम्हें मारा है? बच्चा अधिक २ रोने लगा, पर बोलता कुछ भी नहीं। निदान माता ने क्रोध से कहा, कि बोलता क्यों नहीं? बता किस अभागे ने तुझे मारा है? अभी तेरे पिता को बुलाऊँ और उसे पिटवाऊँ। अब लड़का कहने लगा, माता जी! मुझे किसी ने नहीं मारा। माता ने कहा फिर रोता क्यों है? चल घर, बेटा कहता है, भीतर नहीं चलता, पूछा, क्यों अन्दर नहीं चलता! बच्चे ने कहा; तू ने गत रात्रि को सोते समय नहीं सुना था! पिता जी ने मुझे कहा था कि कल कमा आना, घर आना, खाना खाना, बिना कमाए मत आना। अब मैं घर कैसे आऊँ पिता जी मारेंगे।

माता बोली बस बेटा, यही तुम्हारा रोना है, उसे प्यार किया भीतर ले गई जल पिलाया, मिठाई दी, लड़का फिर रोता हुआ बाहर निकलने लगा, तो माता ने पकड़ लिया, और पूछा कहाँ जाता है? बालक कहता है पिता जी आवेंगे वह पीटेंगे, पूछेंगे क्या कमा लाया है? मैं क्या कमाई दिखाऊँगा।

प्यारे! गुरू वह जो कहे, उसे स्वयं करे और शिष्य से करवाए बालक का पिता जहाँ पिता था वहाँ गुरूपन भी रखता था। जो कुछ बालक से कहता था वही उससे करवाता भी था। अतः बच्चा अब घर नहीं ठहर सका। शिक्षा पद्धति में भी लिखा हुआ है कि जो कुछ गुरू कहें वह शिष्य से करवावे; वही यथार्थ गुरू एवं शिक्षक है। अब माता बालक को भीतर ले गई एक पौंड उठा कर उसे दे दिया और कहा जाओ पिता जी से कहो मैं पौंड कमा लाया हूँ।

बालक जब पिता के सामने पहुँचा तो पिता ने पूछा क्या कमा लाए हो? लड़के ने तुरन्त पौंड पेश कर दिया। तब पिता ने लड़के से कहा जाओ सामने कूआं है उसमें इस पौंड को डाल दो। बालक बंदर

की भाँति उछलता कूदता गया और पौंड को कूप में डाल दिया, कुछ

दिन गुजरे लड़के की माता अपने मैके चली गई। तो रात को लड़के से पिता ने कहा।

कल कमा आना, घर आना, खाना खाना; बिना कमाए मत आना, अब बालक सोचता है माता तो नहीं है; कल कैसे गुजरेगी ? विचार करते २ निद्रा आ गई। प्रातः उठ कर दिन भर खेलता कूदता रहा और सांयकाल को पहले की भांति घर के बाहर आ कर खड़ा हो गया और चौखट पकड़ कर जार २ रोने लगा। तब बहिन दौड़ी हुई आई और पूछा, ओ वीर ! किस ने तुझे मारा है बता, मैं पिता जी को बुला लाऊँ और मारने वाले दुष्ट को दण्ड दिलवाऊँ। लड़के ने कहा, बहिन जी ! तुम्हें याद नहीं कि एक बार पहले भी पिता जी ने रात को मुझे कहा था कि कल तुम कमा आना; तब भोजन करना बिना कमाए घर मत आना। तब तो माता ने पौंड दे दिया था मैंने पिता जी को भेंट कर छुट्टी पाई थी। कल रात को फिर पिता जी ने मुझे आदेश किया कि कल तुम कमा कर आना तब भोजन करना बिना कमाए मत आना अब कैसे भीतर आऊँ। तो बहिन ने प्यार किया उसे अन्दर ले गई एक रुपया भाई को दे दिया। अब बालक प्रसन्न होकर पिता के पास गया तो पिता ने पूछा, क्या कमा लाये हो ? बालक बोला हाँ पिता जी ! पिता ने कहा क्या कमा लाये हो ? लड़के ने झट एक रुपया भेंट कर दिया। तो पिता ने कहा जाओ इसे कूप में डाल दो। लड़के ने दौड़ कर रुपया कूएं में डाल दिया। अब कुछ दिन बाद बहिन सुसराल चली गई। रात को पिता ने फिर वही आदेश लड़के को किया। अब आदेश सुन कर लड़का बेचैन हो गया। सोचा, माता जी यहां नहीं है। न बहिन है। न ही पांच सात मील के समीप माता बहिन जी हैं जो कि वहाँ जाकर ले आऊं। सैकड़ों मीलों की दूरी है। तात्पर्य यह कि सारी रात चिन्ता में पड़ा रहा, और नींद काफूर, प्रातः उठा खेल कूद अब भूल गई बाजार के एक किनारे अब खड़ा हैं। संयोगवश एक बाबू ने कुली कह कर पुकारा तो यह लड़का

पेश हो गया। बाबू ने कहा यह ट्रंक विस्तरा; स्टेशन पर ले चलो

और पूछा बोलो क्या दाम लोगे ? लड़के ने पहले कभी मजदूरी नहीं की थी। वह अब क्या बताए, बोला बाबू जी जो आप की मर्जी आवे दे देना प्यारे गर्मी की ऋतु थी। लड़के ने ट्रंक सिर पर रख ऊपर बिस्तरा धरा तो सिर और शरीर एक होने लगा। पांव भूमि में धसने लगे। पसीने से तर बतर हो रहा है। पिता को कोसता हुआ स्टेशन पर पहुँचा सामान उतार कर अपने सिर गर्दन टांगों की मुट्ठी चापी करने लगा। सिर चकरा रहा है। वाणी बन्द हो रही है। होश से बेहोश है। अब मालिक ने आकर सामान संभाला दो आने मजदूरी के दिये। अब सायं होने को आई तो बालक घर को चला पिता के सामने पहुँचा तो पिता ने पूछा, कमा लाए हो ? अब मुख से उत्तर नहीं निकल सकता गर्दन झुका देता है मानो हां कर रहा है। फिर पूछा क्या कमा लाए हो तो गांठ खोलने लगा। आठ गाँठे लगाई हुई थीं अब गाँठे खोल कर दो आने दिखा कर बोला यह कमा लाया हूँ। तो पिता न कहा जाओ इसे कूएँ में डाल आओ। लड़का सुनते ही क्रोध से लाल पीला मुख करते हुए बोला, मरते २ दो आने कमाए हैं आप कहते हैं, इसे कुएँ में डाल दो, ऐसा कहते ही जार २ रोना आरम्भ कर दिया। पिता ने कहा बेटा ! ये दो आने तुम्हें क्यों प्यारे लग रहे है जब कि पौंड और रुपये को कुएँ में डालते हुऐ तुम्हें रोना न आया। अब दो आने जान से प्यारे लग रहे हैं। यह क्यों ? बालक चुप चाप सिर नीचे किये खड़ा है। अब लड़के को बोध हो गया कि किस प्रकार खर्च करना चाहिए।

प्यारे ! पाठको ! पहले पिता ने बालक को अधिकारी बनाया पीछे सब संदूकों की चाबियां उसे सौंप दी।

यह आदर्श है पिता गुरु; यदि वर्तमान काल के माता पिता इसी प्रकार आचरण करें तो घर २ स्वराज्य हो जाये और देश सुख व शान्ति का धाम बन जावे।

'अब कुछ घटनाए' गुरु भक्ति की यहां वर्णन करता हूँ'

ऋषि दयानन्द जी महाराज का विश्वाश और श्रद्धा

(१) ऋषि दयानन्द जी महाराज जब गुरु ऋषि विरजानन्द जी महाराज की सेवा में विद्या प्राप्त करने के लिए द्वार पर पहुँचे और दरवाजा खट खटाया तो गुरु विरजानन्द महाराज ने पूछा कि तुम कौन हो।

दयानन्द ने कहा-महाराज ! यही तो पूछने आया हूँ कि मैं कौन हूँ श्री विरजानन्द ने फिर पूछा-तुम क्या पढ़े हो।

दयानन्द-अमुक २ ग्रंथ इत्यादि।

श्री विरजानन्द-इन सर्व ग्रन्थों को गंगा में वहा दो और स्वयं हृदय से भी उनको निकाल दो और फिर रिक्त हृदय होकर मेरे पास आओ।

दयानन्द अब यह आदेश सुनकर चकित हो गया और मन में बिचारने लगा, कि कई वर्षों का परिश्रम है उस समय इतने प्रेस भी न थे, हस्त लिखित ग्रन्थ तैयार किये हुये थे। विचार आया कि इन ग्रंथों को कहीं जाकर छुपा कर रख आऊँ. फिर आकर कह दुँगा कि कि मैंने यमुना में वहा दिये हैं। न जाने इस प्रज्ञा चक्षु से ज्ञान मिलेगा अथवा नहीं। इस विचार के उत्पन्न होने के पश्चात् मन में पुनः अन्दर से विचार आया, कि दयानन्द गऊ तो दूध देगी, परन्तु पात्र में खटास लगी हुई है। पात्र में आते ही यह वह अमृत रूप दूध फट जायेगा। न जमेगी दही, न मक्खन बनेगा, न वनेगी रबड़ी, न खोया और न खीर। यदि तुम को गुरू पर विश्वास नहीं; तो हट जाओ।

यजुर्वेद : अध्याय १ : म. ६

कस्त्वा युनक्ति स त्वा युनक्ति कस्मै त्वा युनक्ति।
तस्मै त्वा युनक्ति कर्मणे वाम् वेषाय वाम् ॥

वस इस ध्वनि को सुना और झट यमुना पर जाकर सब ग्रन्थ वहा दिये। शुद्ध पवित्र हृदय होकर महाराज विरजानन्द के चरणों में आ गया, यह था गुरु पर विश्वास; श्रद्धा। जिस को आप अन्ध

श्रद्धा कह सकते हैं। यदि दयानन्द इस अन्ध श्रद्धा को धारण न करता तो दयानन्द आज ऋषि दयानन्द न होता। प्यारे! अन्ध का नाश श्रद्धा से होता है पर हम अन्ध श्रद्धा कहते २ श्रद्धा से भी रहित हो गये। गीता में कहा है:—

श्रद्धावांल्लभते ज्ञानं तत्परः संयतेन्द्रियः।
ज्ञानं लब्ध्वा परां शांति मचिरेणाधिगच्छाति॥

अर्थात्—जितेन्द्रिय तत्पर हुआ श्रद्धावान पुरुष ज्ञान को प्राप्त होता है ज्ञान को प्राप्त होकर तत्क्षण भगवत् प्राप्त रूप शांति को प्राप्त होता है।

❀ श्रद्धा ❀

श्री स्वामी सर्वदानन्द जी महारज ने अपनी सन्मार्ग दर्शन पुस्तक में यह दृष्टान्त लिखा है। वह यह है। एक सेठ सायंकाल को वायु सेवन करने को तैयार हुआ। सेवक को कहा कि टांगा जोत लाओ। वह तांगा जोत लाया तो सामने की दुकान पर बैठे हुए सेठ ने पूछा कि आप कहाँ चले हैं।

सेठ—घूमने को। तब दूसरे सेठ ने कहा ठहरिये; मैं भी चलता हूँ। अब दोनों इकट्ठे बैठ कर घूमने चले, चलते २ नदी पर पहुँचे, तो देखा एक साधु नदी के तट पर बैठा मिट्टी का खिलौना बनाने में मस्त है, तो श्रद्धालु सेठ ने तांगे से उतर कर साधु के निकट जाकर नमस्कार की और पूछा महाराज यह क्या बना रहे हो।

साधू-यह घर बना रहा हूँ।

सेठ-महाराज! इसे बेचोगे।

साधू-यदि कोई लेगा तो दे ही देंगे।

सेठ-महाराज इसका क्या मूल्य है।

साधू-२००) रुपये।

श्रद्धालु सेठ ने तुरन्त २००) रूपये जेब से निकाले और साधू के चरणों में रख दिये और वह मिट्टी का खिलौना सेठ ने उठाकर इक्के में रख लिया और नमस्कार कर के चल पड़ा, यह दृश्य दूसरा साथी तारिक सेठ देखकर चकित हो गया और क्रोधित अवस्था में श्रद्धालु सेठ को यों कहा, वाह सेठ जी ! वाह, भगवान ने धन सम्पति दी पर उसका सदुपयोग करना आप ने न सीखा, यह साधू पाखंडी मुशंडे, हलवे मण्डे खाने वाले ऐसे ५८ लाख साधू वर्तमान काल में संसार में मुफ्त का अन्न खा रहे हैं। कितनो विधवाएं, अनाथ, दुखी तड़फ रहे हैं उन पर दया नहीं आती।

श्रद्धालु सेठ—आप ज्ञानी, ध्यानी, विद्वान हैं हम लोग अनपढ़ सारा दिन दुकान पर बैठे हुए असत्य व्योहार और हाथ से लेखनी कहीं से कहीं चली जाती है, मुख से राम का नाम तक नहीं निकलता यह साधू संत न असत्य बोले, न व्योहार करें और भगवान् भजन में मस्त रहते हैं। हुक्का, चर्स, अफीम, गांजा; शराब यह नहीं पीता यह दो सौ २००) रुपये किसी बुरे काम में थोड़ा लगायेगा, अपितु साधू; संतों, महात्माओं को खिलायेगा। इनके ही प्रताप से भगवान हमें भी दे रहा है।

तारिक-वाह सेठ जी ! वाह ! सर्प के आगे मुरली बजती रही वह छजली निकालता और सिर हिलाता रहा वाली अवस्था आप की है, अरे बाबा ! क्या अच्छा होता, वह रुपये किसी अनाथालय, विधवा आश्रम, धर्मार्थ, औषधालय, अथवा किसी पाठशाला में दे देता कुछ तो तेरा भविष्य बन जाता; इस मुशंडे को खिला कर संसार के ऊपर पाप का बोझ और बढ़ाया है, यह बातें कहते २ वापस स्वथान पर पर आ गये। दोनों एक दूसरे से पृथक हो गये। रात्रि को तारिक सेठ सोया तो स्वपन में क्या देखता है कि श्रद्धालु सेठ जो खिलौने लाया था वास्तव में वह खिलौना क्या है वह एक बड़ा भारी लम्बा चौड़ा उद्यान है उस उद्यान के भीतर एक बड़ा विशाल भवन है जो भीतर से चित्रित और बहुमूल्य सामान से सजा हुआ है उस में एक

पालकी अत्यन्त सुन्दर लटक रही है। जिस में वह श्रद्धालु सेठ सोया हुआ आनन्द से झूला झूल रहा है; सारांश वह भवन; वह उद्यान लाखों के मूल्य का है बस यह दृश्य देखा। फिर आंख खुल गई, तो आश्चर्य में पड़ गया और विचारने लगा यह सेठ दो सौ रुपये में इतनी सम्पति और आनन्द का झूला ले आया है। साधू को लूट लाया है। दिन भर मन में अनेकों प्रकार के विचार तरंग उठते रहे और विलीन होते रहे इस प्रतीक्षा में था कि सायंकाल होवे पुनः सेठ के साथ सैर को जाऊँ। ताकि मैं भी वही खिलौना लाऊँ। जब सायं हुई, सेठ ने तांगा मंगवाया उस में बैठे. तो तारिक सेठ ने कहा, कि ठहरिये सेठ जी! मैं भी आप के साथ चलता हूँ, सेठ जी ठहर गये तारिक महोदय आ गये अब सेठ ने इक्का को चलाया पर अन्य ओर मोड़कर चलाथा।

तारिक-महाराज! कल की ओर चलें।

श्रद्धालु सेठ-न सेठ जी, आप ज्ञानी, ध्यानी अथवा विद्वान् हैं आप उस सन्त महात्मा से वाद विवाद करेंगे। आप का तो कुछ नहीं विगड़ेगा। पर उसके श्राप से मेरा नाश हो जायगा। आपने तो घूमना है और क्या।

तारिक-नहीं सेठ जी! मैं कोई उनसे वाद विवाद नहीं करुंगा, सेठ ने तांगा उस ओर मोड़ लिया। दोनों सेठ साधु की ओर चल पड़े जब साधु के समीप पहुँचे तव साधु पुर्ववत् खिलौना वना रहा था. तारिक सेठ महोदय ने तांगा रोक। सेठ ने कहा भाई तूने कहा था मैं वाद विवाद नहीं करुँगा। तारिक सेठ ने कहा क्या साधू से लाभ न उठाऊं यह कह कर वह नीचे उतरा आगे बढ़ कर साधू को यूँ कहा, यह क्या वना रहा है, साधू ने कहा, मकान बना रहा हूँ। तारिक सेठ ने कहा यह बेचोगे, साधू ने कहा कोई दाम देगा तो दे ही देंगे।

तारिक-अहंकार से पूछा, इसके क्या दाम हैं।

साधू-१ लाख रुपया ।

तारिक-कल तो आप ने इस सेठ को २००) रुपये में दिया था तो आज क्यों इतना मूल्य बढ़ गया है कोई विदेश की माँग आई है ?

साधू-अरे ! उस सेठ ने तो आँखें बन्द कर श्रद्धा से ले लिया था, तू तो सारे मकान व उद्यान की सैर कर चुका है। तू साधू को ठगने आया है, जा, बिजनस वाले से बिजनस कर ठग कहीं के। यह सुन कर सेठ अत्यन्त लज्जित हुआ. और मन ही में कहने लगा, सचमुच जो प्राप्ति श्रद्धा से होती है तर्क से नहीं हो सकती।

प्यारे-आजकल समाजी लोग तो चार पैसे तब देंगे जब पहले उनको चार आने का फल दिखा दो, इनसे तो किसान अच्छा जो पल्ले के पल्ले अन्न को मिट्टी में डाल देता है, भगवान आसरे पर। प्यारे दयानन्द का सारा विद्यार्थी काल गुरू चरणों में असीम श्रद्धा से हम देखते हैं। गुरू भी तो इतने आस्तिक थे कि एक बार जो पाठ दयानन्द को पढ़ा दिया, वह पाठ को भूल गया ! गुरू से विनय की, कि पाठ बताएं परन्तु गुरू ने कहा यहाँ पाठ एक ही बार मिलता है दूसरी बार नहीं मिल सकता। दयानन्द के बार २ याचना करने पर गुरू ने कहा जाओ पाठ स्वयं स्मरण करो नहीं तो यमुना में डूब मरो। यह दयानन्द की परीक्षा थी। दयानन्द यमुना के किनारे जाकर बैठ गया। समाधि लगाई और भगवान से पुकार की।

ओ३म अग्न आ याहि बीतये गृणामो हव्यदातये। न होता सत्सि वर्हिषि॥ साम० अ० १ म० १

प्रभु आओ ! अंधकार को दूर करो और प्रकाश प्रदान करो मेरा तो आप के सिवाय और आचार्य, गुरु, पथप्रदर्शक कोई नहीं है आप ही साक्षात कराओ। दयानन्द अपने को समंपरण कर दिया।

फारसी के कवि ने लिखा हैः—

मन तो शुदम, तू मन शुदी, मन तन शुदम, तू जां शुदी
ता कस न गोयद, बाद अज़ीं, मन दीगरम, तू दीगरी
सपुर्दम बतो दिल खेश रा,
तू दानी हिसाबे कमो बेश रा ।

सन्त कबीर—जिन दूँढा तिन पाईयां, गहरे पानी पैठ ।
मैं बांवरी डूबन डरी, रही किनारे बैठ ॥

प्यारे ! प्रकाश कहाँ होता है, रिक्त स्थान में—आकाश में, कहते हैं एक रोगी को यूनानी वैद्य ने नुस्खा लिख दिया—रोगी पंसारी के यहां गया नुस्खा देकर कहा, कि दवा इकट्ठे कर दो । पंसारी का बालक दवाईयाँ इकट्ठी करने लगा पर बक्स के एक खाना में हाथ फेर रहा है । तो पिता पूछता है कि क्या इस खाने में कुछ नहीं है । बालक ने कहा, भगवान का नाम है । प्यारे ! सोचो । परमात्मा कहाँ हुआ जिस का हृदय रिक्त है । आकाश की न्याई है वहां प्रकाश होगा ।

कवि ने कहा हैः—

१—जमाना हम में बसता है, बसे हैं हम जमाने में ।
दो आलम साफ उड़ते हैं, जरा आया मिटाने में ॥
२—जिस घड़ी ख्वाहिशें भागीं, तो बने शहनशाह ।
शक्ल जो बे नूर थी, पहले से पुर नूर हुई ॥
३—गर तू मर जाये तो, जीने का मज़ा आये तुझे ।
ज़हर गर पीवे तो अमृत का मजा आये तुझे ॥
४—ज़हर गर मीरा ने पी, हो गई मीरा अमर ॥
खाल गर खिचवाए, तो शमसी मज़ा आए तुझे ॥

५—गर तुझे मन्जूर है, मनसूर सा लेना मज़ा ।

वार पर चढ़ जा नज़र, शक्ले खुदा आये तुझे ॥
६–ईसा भी पहुँचा वहां तक, जान देने से जो तू ।
सूली पर सोवे सदाए, महरवां आये तुझे ॥
७–गर शाहनशाह बनना चाहे, तो ताजे दुनियां तर्ककर ।
सर कटा दे अपना, तो मिलने बफा आए तुझे ॥

भगवान कहता है, फिर क्या होता है ।

भक्त हमारे दास हैं, हम भक्तन के दास ।
हम भक्तन में यूं बसे, ज्यों फूलन में बास ॥

प्यारे-जब दयानन्द ने अपने आप को भगवत् अर्पण कर दिया और कहा यदि आज मुझे भूला हुआ पाठ याद न हुआ तो मैं अपने आपको नदी नदी में बहा दुंगा । परिणाम क्या हुआ, कि सारे का सारा पाठ सम्मुख आगया, अब दयानन्द फूला नहीं समाता तो परमात्मा से प्रार्थना करता है ।

कमर कसता हूं तेरे नाम पर, तू मुझ को हिम्मत दे ।
सहारे पर तेरे उठता हूं, तेरा मदाह खां होकर ॥
जहां भूलूँ बता, जिस जा, बहक जाऊं हिदायत कर ।
जो हो लग़जिश तो मुझ को थाम, मेरा मेहरबां होकर ॥
भरोसे पर तेरी इमदाद, के बेड़ा उठाया है ।
फ़लक के बोझ उठाने पर, तुला हूं बेतवाँ होकर ॥

अब दयानन्द गुरु के चरणों में आया । प्रार्थना की महाराज ! पाठ सुनिए । गुरूदेव ने पाठ सुना, तो पूछा किससे पढ़ लाया । दयानन्द ने कहा, वेद की पवित्र वाणी कल्याण द्वारा पुकार की ।

ओ३म्, अग्न आ याहि वीतये गृणानो हव्यदातये ।
नि होता सत्सि बर्हिषि ॥ साम अ० १ म० १

वाणी वाले ने वाणी को सुना और उसने पाठ पढ़ाया। ऋषि विरजानन्द जी यह सुन कर फूले न समाए, आशीर्वाद दिया, और आगे को पाठ पढ़ाया और कहा तू काल जवा है अर्थात् तेरी वाणी काल पर विजय पाने वाली होगी।

प्यारे-आजकल के विद्यार्थी और पढ़ाने वालों को देखो। दर दर पर शिष्यों के पीछे फिरते है शिष्यों को भाड़े का टट्टू बना कर अपना उल्लू सीधा करते हैं, और सुनिये।

एक दिन दयानन्द ने गुरू स्थान पर झाड़ू दिया। कूड़ा कर्कट संग्रह कर एक कोने में धर दिया, उठाना भूल गया। गुरू विरजानन्द प्रज्ञाचक्षु ही थे, चलते समय पांव कूड़ा कर्कट पर जा पड़ा; तो क्रोध से पूछा, कि यहाँ कूड़ा कर्कट किस ने रखा है; तो विद्यार्थियों ने कहा कि महाराज! आज दयानन्द की वारी थी, उसने झाड़ू देकर यहाँ पर धर दिया है। यह सुनते ही गुरू ने कहा, बुलाओ दयानन्द को। जब सामने आया तो गुरू देव ने खूब लाठी से पीटा। जब थक गये, तो दयानन्द ने गुरू के हाथ पकड़ कर दबाने शुरू किये, और कहा महाराज! मेरा शरीर वज्र है। आप को बहुत कष्ट हुआ होगा। प्यारे! यह थे शिष्य। नयन सुख ने गुरू जी से एक बार प्रार्थना की, कि महाराज! दयानन्द सन्यासी है, इसको न मारा करें। दयानन्द को जब मालूम हुआ, तो बहुत बुरा मनाया। कहा कि मेरा टेढ़ापन कैसे दूर होगा। प्यारे! आज जरा अध्यापक शिष्य के कान को हाथ लगावे तो झट आंखें फाड़ कर कहते है, आप ने मेरा कान क्यों पकड़ा मेरा अपमान किया है। आप को मेरा कान पकड़ने का क्या अधिकार है। मैं रिपोर्ट करता हूँ। तो अध्यापक विचारे को क्षमा मांग कर जान छुड़ानी पड़ती है। यह है वर्तमान शिक्षा। सदाचार, अब तो शिष्टाचार का नामो निशान मिट रहा है। फिर कहते हैं राम राज्य हो जावे।



वर्तमान शिष्य और गुरू

आजकल विद्यार्थी, प्रायः जब यूनिवर्सिटी की परीक्षा देते हैं जब परीक्षार्थ कमरे में होते हैं तो वह पुस्तकों से लेख लिखकर जेब, में छुपाकर जाते हैं। जब परीक्षा का पर्चा बट जाता है; तो उनकी देखभाल (Inviglation) करने के लिये अध्यापक नियुक्त किये जाते हैं। ताकि विद्यार्थी एक दूसरे की नकल न करें; अथवा कोई गुप्त लेख लिख कर साथ लाया हो तो उसे पकड़ लें।

यदि किसी विद्यार्थी को नकल करने या गुप्त लेख लाया हुआ देख कर परीक्षक (Invigiation) पकड़ लेवे तो उस विद्यार्थी को परीक्षा भवन से निकाल दिया जाता है। और उसका परिणाम् यह होता है कि वह विद्यार्थी उस परीक्षक को अपमानित करने तथा उस को गुण्डों द्वारा मौत के घाट उतरवा देता है। यदि परीक्षक इस भय से उस विद्यार्थी को नही पकड़ता ता पर्चा देखने वाले जब उस विद्यार्थी के पर्चों को हूबहू किताब का नकल किया हुआ देखते हैं तो वह रिपोर्ट करते हैं कि यह पर्चा किताब से नकल किया गया है। तो खोज की जाती कि परीक्षा समय इस पेपर का परीक्षक कौन था तो परीक्षक का बोध हो जाने पर उसे नौकरी से पृथक कर दिया जाता है ।

सज्जनो ! अध्यापक को मौत का ग्रास बनना या नौकरी से पृथक हो जाने का कारण, परीक्षक स्वयं ही है। पर कैसे ? आजकल प्रत्येक स्कूल, कालिज में दुकानदारी जारी है, वह क्या ? टयूशन। टयूशन रखने वाले विद्यार्थी स्वयं नहीं पढ़ते। वह इस लिये नहीं पढ़ते कि परीक्षा समय मास्टर जी नकल करा देंगे हम उत्तीर्ण हो जायेंगे। यदि अध्यापक उस को न पढ़ाने पर दण्ड देता है तो विद्यार्थी माता पिता से कहता है कि मैं इस के यहाँ नहीं पढ़ता, तो पिता दूसरा अध्यापक रख देते हैं जिस से पहले अध्यापक की टयूशन मारी जाती है। अब अध्यापक अपनी टयूशन के लोभ वस दूसरे अध्यापकों से मिल

कर यह निश्चय कर लेते हैं कि आप मेरे विद्यार्थी की सहायता करें मैं आप के विद्यार्थी की अथवा वह अपने इन टयूशन वाले विद्यार्थियों को तीव्र बुद्धि वाले विद्यार्थी के पीछे बिठा देते हैं और उन्हें कह देते हैं कि इसे नकल करने देना। और फिर पर्चा देखते समय अध्यापक एक दूसरे के विद्यार्थी को उत्तीर्ण होने के नम्बर देकर पास कर देते हैं। जिस का परिणाम यह होता है कि अध्यापक का यह किया कर्म ही, कर्म-फल लाता है। अध्यापक लोभवश विद्यार्थी के जीवन को चोरी करने और ऐसी हत्या करने का अभ्यासी बनाता है। यही बोया हुआ बीज अध्यापक के लिये मौत का रूप बनाकर आता है। जब अध्यापक मौत का शिकार बन जाता है तो दोष विद्यार्थियों पर लगाया जाता है। फारसी का कवि लिखता है:—

करदनी पेश आमदनी पेश

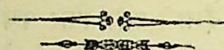
करदने खुद पेश में आयद-फलक रा तोहमत अस्त हर

के अन्दाजी मियाने आस्या आरद गिरो॥

अर्थात-अपने किये कर्म का फल सामने आता है फ़लक को कोसना फजूल है चक्की में जैसा दाना डाला जाता है वैसा आटा आता है।

इन अध्यापकों की उलटी शिक्षा के परिणाम से प्रायः सारा भारत इन विद्यार्थियों के जीवन से दुखी है। अब न इन की आँख है, न कान है, न जीव है न हाथ है। न यह माँ के, न बाप के, न देश और जाति के ही हैं। चरित्र का तो दिवाला ही निकाला जा रहा है। इसका कारण यही वर्तमान के गुरू ही हैं। पर यह भी पत्थर नाथ हो गये है। विद्यार्थियों से लट्ठ खाते अपमानित होते हुए भी अपनी इस बुरी आदत (टयूशन) का परित्याग नहीं करते। भगवान इनको सुमति दें ताकि यह मनुष्य जीवन के कर्त्तव्य को जानें और उन्हें पालन कर अपने जीवन को पवित्र करें। जिससे विद्यार्थी शुद्ध आचार विचार वाले हो कर भारत माता के लिये सुख शाँति का रूप बन कर जीवन को सफल करें।

❀ श्री कृष्ण जी महाराज ❀



दुर्वासः ऋषि श्री कृष्ण जी के गुरु थे। जब द्वारका आए, तो श्री कृष्ण चन्द्र महाराज ने नंगे पांव स्वागतार्थ आगे जाकर स्वागत किया, लिखा है कि दुर्वासा ऋषि के साथ शिष्यों की पर्याप्त संख्या थी। श्री कृष्ण चन्द्र ने भोजन तय्यार कराया, जब भोजन तय्यार हो गया। तो दुर्वासा ऋषि ने उसको स्वीकार न किया, कहा यह अच्छा नहीं। तो दूसरी बार तय्यार कराया गया, तो कहा यह भी ठीक नहीं है स्वीकार न किया जब तीसरी वार भोजन तैयार कराया तो ऋषि ने स्वीकार किया। जब उठकर चलने लगे, तो श्री कृष्णचन्द्र से कहा, कि आप ने श्रद्धा से सेवा की है, हम प्रसन्न हैं पर आप पर एक विशेष हमारी कामना है वह पूरी कर दो। श्री कृष्ण ने कहा महाराज! वह आज्ञा कीजिये। तो दुर्वासा ऋषि ने कहा कि जिस रथ पर मैं चढ़ूँ उस रथ को तुम दोनों स्त्री पुरुष खेंचो, यह सुनकर श्री कृष्ण जी घर आए। धर्मपत्नी से कहा, एक काम करना है पत्नी ने कहा आदेश करो। श्री कृष्ण जी ने कहा कि पहले प्रतिज्ञा करो कि जो काम मैं कहुँगा उसे आप मानेंगीं। पत्नी ने कहा, आज नई प्रतिज्ञा करूँ ? विवाह के समय जो प्रतिज्ञा की थी आपने मेरी उसमें क्या त्रुटि देखी है जो नई प्रतिज्ञा कराते हैं। यह मन्त्र पढ़ कर सुनाया।

प्रमे पतियानः पन्था कल्पता शिवा अरिष्ठा पति लोक गयेयम्

ब्रा० १-१-८

यह क्या मैं भूल गई हूँ ? क्या कभी मैंने आज्ञा का उल्लंघन किया है। श्री कृष्ण जी ने गुरू का आदेश कह सुनाया। पत्नी ने कहा, इसमें आप को मुझ पर सदेह क्यों है, मैं तो सेविका हूँ। अब दोनों ने गुरूजी को रथ पर बिठाया। पत्नी और श्री कृष्णचन्द्र जी

ने रथ को खींचा, खींचते समय दुर्वासा ऋषि ने दोनों पर खूब हंटर लगाये यहां तक कि पीठ लाल कर दी। श्री कृष्ण अथवा पत्नी ने चूँ तक न की। यह अवस्था देख कर ऋषि रथ से उतर पड़े और श्री कृष्ण जी को आशीर्वाद दिया और कहा, बस ! तेरी परीक्षा ले ली। प्यारे यह थी गुरु भक्ति ! ओ श्री कृष्ण चन्द्र के पुजारियो. श्री कृष्ण चन्द्र जी की जय पुकारने वालो, अपने जीवन का निरीक्षण करो। आप में से कौन माई का लाल है जो गुरु भक्ति को जानता है।

श्री स्वामी विवेकानन्द जी महाराज

श्री स्वामी विवेकानन्द जी महाराज का पहला नाम नरेन्द्रकुमार था आप बंगाल प्राँत के रहने वाले थे। आप श्री परमहंस महात्मा रामकृष्ण जी महाराज के शिष्य थे। आप के गुरु देव रोगी हो गये सारे शरीर पर फोड़े ही फोड़े हो गए, अनेक औषधियों के करने पर भी आराम न आया तो डाक्टरों ने कहा यदि आप के फोड़ों को कोई मनुष्य मुख से चूस २ कर रस निकाल डाले तो आप बच सकते हैं वरना नहीं। स्वामी विवेकानन्द जी महाराज ने सुना तो कहा, यह सेवा मैं करुँगा और करने को तय्यार हो गया, पर गुरु देव ने इन्कार कर दिया कि मैं मर जाना अच्छा समझता हूँ ऐसा कदापि न होने दुँगा। परन्तु स्वामीविवेकानन्दजी ने डाक्टरों से एकान्त में जाकर प्रार्थना की, कि मेरे गुरुदेवजी को ऐसी दवाई पिलायें कि जिससे वह बेहोश हो जाएं ताकि मैं उनके फोड़ों का रस चूस लूँ। डाक्टर ने ऐसी औषधि दी जो गुरु देव को पिला कर बेहोश कर दिया। तो स्वामी जी ने सारे फोड़ों का रस चूस २ कर बाहर फैंक दिया। जिस से गुरु देव स्वस्थ हो गये, ये थे गुरु भक्त, स्वामी विवेकानन्द जी महाराज जिन्हों ने अमेरिका देश में जाकर मनुष्यत्व का सन्देश पहूंचाया। सच्चे विवेकी जैसा नाम था वैस बन गये।

कर्ण

श्री परशुराम जी कर्ण के गुरू थे। एक दिन गुरुदेव सोचे। कर्ण ने अपना घुटना तकिये के रूप में गुरू के सर के नीचे दे दिया। गुरू देव नींद में मस्त हो गये। इस अवस्था में एक कनखजूरा (एक कीड़ा होता हैं) निकला और उस घुटने को जिस को गुरू के सर के नीचे दिया हुआ था चिपक गया। मांस काट २ कर खाता रहा; पर कर्ण ने चूँ तक नहीं की, और नाही घुटना हिलाया, ताकि गुरू जी जाग न पड़ें और उन को कष्ट न हो। जब गुरू देव जागे तो कर्ण की अवस्था देखी। चकित हो गये।

"प्यारे यह थे गुरू भक्त"

राधा स्वामी मत के शिष्य श्री सालिगराम जी (भूतपूर्व पोस्ट-मास्टर जनरल) गुरु के वास्ते तीन बजे रात को उठ कर नदी से पानी भर लाते और गुरू जी को स्नान कराते। एक दिन किसी ने सालिग राम से कहा कि इतनी रात्रि होते आप पानी इस लिए भर लाते हो कि कोई देख न ले. लज्जा आती है। सालिगराम ने यह सुना तो दूसरे दिन सूर्य निकलने पर घुँघरू पाव में बाँधकर नाचता हुआ पानी भर लाया। यह थी गुरू भक्ति। आज अपनी सन्तान को कहो पुत्र! पानी तो ले आ, आंखें दिखाते हैं।

गुरू अमरदास जी महाराज

गुरू अमरदास जी महाराज का पूर्व नाम अमरु था। एक दिन वर्षा हो रही थी। गुरुदेव जी के वास्ते जल भर कर ला रहा था तो कीचड़ से पांव फिसला, धड़ाम से गिर पड़ा। एक धोबी का घर निकट था। धड़ाम से गिरने की ध्वनि सुन कर धोबी ने अपनी स्त्री से पूछा यह कौन गिरा हैं। स्त्री ने कहा, अमरु निमाना निथाना होगा ? ऐसी आपत्ति के समय किस को ऐसी पड़ी है जो पानी भरने जाये। गुरु देव ने यह शब्द सुने तो धोबन को बुलाया, पूछा तू क्या कह रही थी सच २ बता। धोबन डर कर बोली, महाराज! मैंने कहा था

अमरु निमाना, निथानां गिरा होगा और कौन! गुरु ने यह शब्द सुनते ही कहा, कि अब अमरु निमाना निथाना नहीं है यह अमर दास निमानों की मान, निथानों का थान होगा, उसे गद्दी पर बिठा दिया।

बिना गुरु जो करे योग, छीजे काया बधे रोग।
विधि सहित जो करे योग, बधे काया हटे रोग॥

प्यारे—लोकोक्ति है कि "गुरु बिना गत नहीं; शाह बिना पत नहीं"। प्राचीन काल में जब शिष्य गुरु चरणों में विद्या प्राप्ति के वास्ते पवित्र भाव से जाता था तो शिष्य बर्तमान की तरह बादाम, पताशे भेंट नहीं करते थे किन्तु तीन शुष्क समिधाएं लेकर गुरु चरणों में जाते। अग्नि होत्र करते और यह तीन समिधाएं तीन वेद मन्त्रों से अग्नि की भेंट करते।

प्रथम अयन्त इध्मात्मा:—इससे एक समिधा, भावना यह होती थी कि मैं अपनी आत्मा आप के समर्पण कर रहा हूं।

(२) समिधा अग्निं तथा सुसमिधाय। इन दो मन्त्रों से दूसरी समिधा चढ़ाते थे।

भावना—अपना मन आप के समर्पण कर रहा हूँ।

(३) तं त्वा समिद्भिरङ्गिरो-इस मन्त्र से तीसरी समिधा।

(भावना) अपना तन (शरीर) आप के समर्पण कर रहा हूँ।

तो आरम्भ में शिष्य को यह शिक्षा गुरू देते थे।

१—आज से तू ब्रह्मचारी है तेरा मुख्य गुरू धर्म संयम है।

२—आलस्य त्याग कर सदा कर्म में कौशल रहना।

३—दिन के समय न सोना। इस में बुद्धि घटती है।

४—क्रोध न करना इससे बुद्धि तथा स्वास्थय बिगड़ता है। ब्रह्मचर्य का नाश होता है।

५—असत्य भूल कर भी न बोलना; इस से विश्वास जाता है।

६—नर्म बिछौनों (मृदु पुष्प) पर कभी न सोना, इससे आलस्य आता है।

७—सुगन्धित तेल तथा सुर्मा न लगाना, इस से विलासिता बढ़ती है।

८—अधिक स्नान; भोजन, निद्रा तथा जागरण से बचना, इस से जीवन में न्यूनता आती है।

६—लोभ और मोह त्याग देना, इससे जीवन उच्च होता है।

१०—निन्दा, चुगली (पृष्ट पेषण) कभी न करना, न झूठा दोष लगाना।

११—भय तथा शोक न करना, इससे कायरता आती है।

१२—नित्य प्रति रात्रि के पिछले पहर जाग कर दातुन स्नान कर के ईश्वर चिन्तन करना।

१३—क्षौर न करना। इससे भी विलासता बढ़ती है।

१४—माँस, अण्डा, मछली मदिरा अथवा अनेक अपवित्र वस्तु न खाना। इस से मन तथा बुद्धि मलीन होती है। राक्षसी योनि मिलेगी।

१५—जूता तथा छाते का, प्रयोग न करना।

१६—अधिक खट्टी, कड़वी, तीक्ष्ण वस्तु सेवन न करना।

१७—सदा वीर्य की रक्षा करना।

१८—थोड़ा बोलना, परिमित खाना पीना तथा सोना।

१६—सब से शिष्टाचार तथा सभ्यता का व्यवहार करना।

२०—सदाचारी बनना।

२१—माता पिता तथा गुरू को जागते सोते समय नत मस्तक होकर नमस्कार करना और आज्ञा का पालन करना, बड़ों मान करना। हर एक से प्रेम प्रीति का व्यवहार करना।

अन्त में यही निवेदन करता हूं कि धर्मशास्त्रों तथा अन्य पूर्वी तथा पश्चिमी लेखकों के आधार पर यह बात भली प्रकार दर्शाई गई हैं, कि जो सन्तान माता पिता तथा गुरू की आज्ञाकारी नहीं, उसका होना न होना बराबर है।

सन्त कबीर ने ठीक कहा:—

जननी जने तो भक्त जन, कै दाता कै सूर ।
नहीं तो रहे बांझरी, काहे गंवावे नूर ।

इस लिए सन्तान को उचित है कि जो उसका कर्त्तव्य ऊपर बतलाया गया है उस को पूरा कर के अपने पैतृक ऋण से उऋण हों अपना नाम उज्जवल करें, और लोक तथा परलोक में यश के भागी बनें। जब तक शिक्षा प्रणाली नहीं सुधरती उस समय तक माता पिता तथा बालक स्वयं ऐसा प्रबन्ध करें कि अपने धर्म ग्रन्थों को पढ़ कर अपने कर्त्तव्यों को जानें और उसे पूरा करें।

जब माता पिता वृद्ध हो जावें। उस समय उनकी सेवा का अधिक ध्यान रखना चाहिये क्योंकि संसारिक दृष्टि से उसी समय के लिये माता पिता सन्तान माँगते हैं, और उन के पालन पोषण का कष्ट उठाते हैं। जब तक वह कार्य करने की शक्ति रखते हैं उस समय तक वह बालकों के लिए लाते हैं और घर का कार्य व्यवहार करते हैं। ऐसी दशा में उनकी सेवा करनी और उनका आदर करना कोई महत्व की बात नहीं है क्योंकि वह तो एक प्रकार का स्वार्थ है। सेवा और आदर सच्चे अर्थों में उसी समय में कहे जा सकते हैं जब माता पिता वृद्ध हो जाने के कारण कार्य व्यवहार करने के योग्य न हों, माता पिता जीवित तीर्थ होते हैं। जीवित इष्ट देव होते हैं। जीवित ईश्वर होते हैं। जिसने उन की सेवा की और उनको प्रसन्न किया, उसने मानो देवता परमात्मा की उपासना की। जिस ने माता पिता को अप्रसन्न किया· उससे परमात्मा कदापि प्रसन्न नहीं हो सकते।

एक कवि ने कहा है:—

बच्चों का फ़र्ज क्या है, उसका ज़वाब यह है।
मां बाप की है ख़िदमत, मां बाप को है ख़िदमत ॥

सन्तान को यही कर्त्तव्य अपने सम्मुख रखना चाहिये, इसी में उन का कल्याण है, इस लोक और परलोक दोनों का सुधार माता

पिता की भक्ति तथा सेवा से होसकता है । जो लोग अपने परलोक सुधारने के लिए अनेक उपाय करते हैं परन्तु माता पिता की सेवा से उपराम रहते हैं उनका सारा उद्योग निष्फल जाता हैं। ईश्वर भक्ति सफल नहीं हो सकती । यदि घर में वृद्ध माता पिता क्लेश पाते हैं। निसंदेह अन्य कोई साधन न किये जावें और माता पिता की सेवा की जावे तो वह कहीं इससे अच्छा है कि अनेक व्रत तथा अनेक साधन किये जावें परन्तु माता पिता को दुःखी रखा जावे । जो माता पिता की सेवा से मुख मोड़ कर प्रभु भक्ति तथा अन्य किसी देव की पूजा का मान करते हैं। उनकी वह कोरी डींग और थोथा ढोंग है। उस मनुष्य से ईश्वर कोसों दूर भागता है जो माता पिता की सेवा से उपरामता करता है। इस का यह अर्थ नहीं कि ईश्वर भक्ति व्यर्थ है किन्तु इस के साथ २ माता पिता की भक्ति भी आवश्यक है ।

कई युवक कहते हैं कि माता पिता उदारता नहीं दिखाते उनसे और उनकी पत्नी तथा बालकों से क्रूरता का व्यवहार करते हैं । संभवतः यह कहीं २ ठीक भी हो परन्तु फिर भी ऐसी बुद्धिमता से चलना चाहिये कि माता पिता को दुःख न पहुँचे । निस्संदेह पति को पत्नी तथा बालकों को भी दुःख न होने देना चाहिए । परन्तु माता पिता की पदवी उन से बड़ी है। उन की ओर अधिक ध्यान देना चाहिये । क्यों कि उनकी अप्रसन्नता और दुराशीश बड़ी हानी का कारण होती है। फिर यह एक बात ध्यान में रखनी चाहिये, कि माता पिता का भाव प्रायः अच्छा होता है । उनका क्रूरपन भी सन्तान के हितार्थ होता है। एक और बात भी स्मरण रखनी चाहिये कि वृद्धों का स्वभाव बालकों का सा प्रायां बन जाता है यह के बस की बात नहीं होती। जब वह कुछ कटु बोलें तो इस स्वभाव की बात को सराहना चाहिए।

सारांश यह कि हर अवस्था में सन्तान का कर्त्तव्य है कि माता पिता तथा गुरू की भक्ति तथा सेवा में तत्पर रहें और उनकी प्रसन्नता प्राप्त करें और अपना जीवन सफल करें ।

॥ दोहे ॥

सेवा जो पितु मातु की, करते श्रद्धा धार ।
आयु, यश, बल, विद्या, बढ़ते उनके चार ॥

अर्थात्-जो माता पिता बड़ों की श्रद्धा से सेवा करते हैं उनको आयु, यश, बल, विद्या, चार चीजें बढ़ती हैं।

श्लोक–पिता स्वर्गः पिता धर्मः पिता ही परमं तपः ।
पितरि प्रीतिमापन्ने प्रीयन्ते सर्वदेवता ॥

अर्थात-पिता ही स्वर्ग; पिता ही धर्म, पिता ही तपस्या पितृ अर्थात माता पिता की जिस ने प्रीति से सेवा की, उसने मानों सर्व देवताओं को प्रसन्न कर लिया।

महात्मा तुलसीदास जी रामायण में लिखते हैं:—

चार पदार्थ कर तल ताके,
प्रिय पितु मात प्राण सम जाके ।

अर्थात-धर्म, अर्थ, काम मोक्ष ये चार पदार्थ जो मनुष्य जीवन के मुख्य उद्देश्य हैं, वह उन लोगों की हाथ की हथेली पर ही हैं जिन्हों ने माता पिता को अपने प्राणों के समान समझा है।

वानप्रस्थ जाते समय लक्ष्मण जी को माता सुमित्रा का आदेश

दशरथ राम को समझियो, सीता मात समान ।
अयोध्या बन को जानियो, इससे हो कल्याण ॥

दोहा—तीरथ अनेक, दान बहु, कर वै पर उपकार ।
एक सेवा पितु मात की, सहस्र गुण अधिकार ॥

पुन्य तीर्थ संसार में, और बड़े ताप दान ।
पाऊँ चले पितु मात के कर सेवा सन्मान ॥

माता पिता गुरु तीन को प्रसन्न करे नर जोय।
सम्पूर्ण सुख तप सफलता, उस नर को नित होए॥

एक फारसी का कवि क्या लिखता है:—

जन्नत की रजाय मादरान अस्त।
अन्दर तह पाय मादरान अस्त॥

अर्थ—स्वर्ग का सुख माता के पैरों तले है। और वह उसकी प्रसन्नता से निकलता है।

एक उर्दू का कवि भी क्या लिखता है:—

हम ऐसी कुल किताबें, काबिले ज़बती समझते हैं।
जिन्हें पढ़ कर के लड़के, मां बाप को ख़बती समझते हैं॥

भगवत्प्राप्ति का अन्तिम ध्येय

❀ गुरू मन्त्र ❀

मूढ़ बुद्धि, अज्ञानी-शुद्ध बुद्धि ज्ञानी

जलालपुर जट्टां (पाकिस्तान) के एक सद् ग्रहस्थी के बालक का नाम खुशहाल था। खुशहाल को ८-६ वर्ष की आयु में स्कूल में प्रविष्ट किया गया, पर खुशहाल स्थूल बुद्धि था; न स्मृति थी न समझ। आरम्भ में तो अध्यापक ने पाठशाला में आने का अभ्यासी बनाने के लिये कुछ न कहा, मौखिक तर्जना करते रहे। अब जब वह पाठशाला में आने का पूरा अभ्यासी बन चुका और बहुत समय

बीतने पर एक दिन पिता जी ने कहा कि खुशहाल ! अपनी पुस्तक लाओ और मुझे सुनाओ, क्या पढ़ा है। खुशहाल पुस्तक लाया, पिता के पाठ सुनने पर पाठ शून्य ही सुनाया। पिता जी क्रोध में आ गए, खुशहाल को साथ लेकर स्कूल में पहुँचे मास्टर जी से कहा मास्टर जी ! आपने इस को अब तक क्या पाठ पढ़ाया है ? कृपा करो इसका ध्यान करो। कि यह कितना बड़ा हो चला है, इस से छोटे २ बालक कितना पढ़े हुऐ हैं। पिता जी मास्टर जी को कह कर चले गए अब खुशहाल पर मास्टर जी की कड़ी दृष्टि पडने लगी। मास्टर जी पाठ पढ़ायें, छुट्टी करने से पहले उस से पाठ पढ़ाया हुआ सुना तो वह चुप। अब मास्टर जी ने खूब हाथों से पीटा और अन्ततः रुखसत किया अब खुशहाल की प्रतिदिन क्या दशा बनी ? स्कूल जाते ही मास्टर जी सर्व प्रथम उसे बुलाएं और कहें, कल का पाठ सुनाओ पर उत्तर कुछ भी न हो, तो मास्टर जी बुरी तरह से ताड़ना करें और बेंच पर खड़ा कर दें। स्कूल की छुट्टी होने तक बैंच पर खड़ा रहे। अन्त में मास्टर जी पाठ सुनें तो वही दशा फिर मार खा कर खुशहाल घर जाता। घर में पिता जी और स्कूल में मास्टर जी प्रतिदिन मरम्मत करें। मां के पास जाए रोता हुआ, तो मां मार तो नहीं, परन्तु जबानी झाड़ देवे फिर रोटी खिलावे। निदान खुशहाल के लिये यह प्रोग्राम दैनिक बन गया। खुशहाल नित्य की मारपीट से अति व्याकुल हो गया। चारों ओर अन्धेरा नजर आया। दिल में ठानी कि ऐसे जीने से तो मर जाना अच्छा है।

जलालपुर जटाँ में एक नाला है जो वर्षा के दिनों में खूब भर कर बहता है। अब खुशहाल को अपने मुक्त होने का यही साधन दिखाई दिया कि नाला में छलांग लगा डूबकर मर जाऊं, यही निश्चय कर के नाला पर गया, छलांग लगा दी और डूब ही रहा था तो किसी व्यक्ति ने देखा। झट नाला में कुद कर डूबते हुए खुशहाल को बाहर निकाला और सथ लेकर उस को पिता के हवाले किया, और कहा कि मुंशी जी ! आप का यह पुत्र नाला में डूब रहा था। पिता जी को बड़ा क्रोध

आया उसे खूब पीटा। अब खुशहाल बेचारा हाल से बेहाल हैं और जार २ रोता है। कवि ने कहा है:—

स्याह वखती में कब कोई किसी का साथ देता है।
कि तारीकी में साया भी जुदा इन्सां से रहता है॥

प्यारे खुशहाल के पिता जी श्रद्धालु थे। अतिथि सत्कार उदारता तथा प्रेम से करते थे। एक दिन श्री स्वामी नित्यानन्द जी महाराज आये, उन्हें अपनी वाटिका में ठहराया गया। रात को खुशहाल से पिता जी ने कहा, कि कल समय पर स्वामी जी को भोजन कराना। खुशहाल प्रातः उठ शौचादि से निवृत हो कर स्कूल चला गया तो मास्टर जी ने पाठ सुनाने को कहा। पर उत्तर कुछ न दे सका, आज मास्टर जी ने खूब पीटा क्योंकि नाले में डूबने का समचार मास्टर जी को लड़कों से पहले मिल चुका था। अब बैंच पर खड़ा कर दिया गया। जब छुट्टी का समय आया, पाठ सुना फिर भी याद नहीं था, फिर मार पड़ी और कहा, बस आज तुम बैंच पर खड़े रहो, और सब स्कूल के लड़के छुट्टी होने पर अपने घर चले गये। मास्टर जी को रजिस्टरों का कुछ काम करना था, वह उस काम में लगे रहे। आध घण्टा बाद वह फारिग हुये, तो फिर पाठ सुना। पाठ न आने पर फिर पीटा और रुखसत किया।

प्यारे घर पर जब खुशहाल पहुँचा तो पिता जी प्रतीक्षा कर रहे थे, क्रोध में भरे हुये थे, क्योंकि और सब मुहल्ले के लड़के आध घन्टा पहले आ चुके थे, पिता जी ने खुशहाल के देर में पहुंचने पर न देरी में आने का कारण पूछा, बस खूब पीटना आरम्भ कर दिया, पिताजी ने घर में एक भैंस रखी थी; उसकी सेवा, पानी पिलाने की (डयूटी) खुशहाल के जिम्मे थी जब पिता जी मार कर थके तो फिर पूछा, भैंस को पानी पिलाया है तो खुशहाल ने कहा नहीं। तो फिर मार पड़ी और कहा, जाओ पहले भैंस को पानी पिला लाओ। जल्दी वापस आ जाओ। अब खुशहाल हाल से बेहाल रोता हुआ भैंस को

खोला, तालाब पर ले गया, भैंस ने पानी पिया। भैंस शक्ति वाली थी पानी पीकर किसान के खेत में दौड़ गई और जा कर खेत को चरना शुरू कर दिया। अब किसान ने देखा तो क्रोध से पूर्ण दौड़ता हुआ खेत में पहुँचा, खुशहाल भैंस को पकड़ रहा था, तो किसान ने खुशहाल को खूब पीटा। अब खुशहाल भैंस को लेकर घर पहुंचा पिता जी क्रोध में भरे हुये बैठे थे कि खुशहाल ने फिर बड़ी देर लगा दी है। जब खुशहाल आया तो देरी से आने का कारण न पूछकर खूब पीटा और कहा, उठा रोटी, स्वामी जी को जाकर खिलाओ।

प्यारे पाठकगण! अब तनिक स्वयं सोचो, विचारे खुशहाल की क्या अवस्था है। क्या खुशहाल के कान नहीं, जो पाठ नहीं सुन सकता था। क्या आंखें नहीं जो पाठ देख नहीं सकता था। भगवान् ने तो शरीर के सब अंग पूर्ण बनाये थे और स्वास्थय भी अच्छा है। अब मास्टर मारे; पिता मारे, पीटें, माता धिक्कारे, क्या किसी ने मारते मारते खुशहाल को पाठ याद कराया। क्या पाठ शरीर याद करता है जो प्रतिदिन शरीर को पीटा जाता है। क्या कोई वैद्य, हकीम, डाक्टर इस की औषधि कर सकता है? क्या डाक्टरों के (Injection) से ठीक हो सकता है कि पाठ याद करना आ जावे। उत्तर नकार में होगा और प्रत्यक्ष ही है। बेचारा कोमल बच्चा है, बेबस है पर उसकी चिकित्सा कौन जाने?

प्यारे! वर्तमान काल में तो माता, पिता, मास्टर. डाक्टर सभी शरीर के पुजारी, भोगवादी, स्वयं नहीं जानते कि हम संसार में क्यों आये हैं, क्या करना है और किधर जा रहे हैं। कहावत है:—

"गुरू विना गत नहीं"। विना गुरू के सुख शान्ति प्राप्त नहीं हो सकती।

शतपथ ब्राह्मण में कहा है कि **"मातृमान, पितृमान, आचार्यबान् पुरुषोवेद"**। पहला गुरू माता, दूसरा पिता; तीसरे विद्या, ज्ञान का गुरू, वह ज्ञान जो परमात्मा और आत्मा का साक्षात कराए।

वर्तमान काल में गुरू कहलाने वाले यह तीनों प्राया असफल हैं। आत्मा और परमात्मा का साक्षात तो वही करावेगा जिस ने स्वयं साक्षात किया हुआ होगा।

प्यारे! आप को यह जान लेना चाहिए कि अतिथि को ईश्वर का पुत्र कहा गया है। और उस को ही गुरू कहा गया है। जो अन्धेरे से प्रकाश की ओर ले जावें। अब खुशहाल वेचारा अंधेरे में है उसको प्रकाश कौन दिखाये जो स्वयं प्रकाश का पुजारी हो। अब आईये! सच्चे भगवद् पुजारी सच्चे गुरू की शरण में चलें जो इस पाठ को याद कराने वाली कला को खोले।

पाठकगण! खुशहाल ने भोजन उठाया, वाटिका में पहुँच कर श्री स्वामी नित्यानन्द के चरणों में रखा। नतशिर होकर नमस्कार किया। श्री स्वामी जी की दृष्टि खुशहाल के मुख पर पड़ी, आँखें लाल, हाल से बेहाल हुआ है और शरीर निढाल है।

कवि लिखता है:—

घायल की गति घायल जाने, और न जाने को।
आंकि दारद दर दिलश, खौफे खुदा ॥
आंकि पाक, अस्त, अज़, इनादो अज़ रिया।
आंकि ज़खमे गैर रा, मरहम शवद ॥
तोफ़ाए नाचीज ईं नज़रश बवाद।
जिस के दिल में दर्द है इन्सान का ॥
जिस के दिल में ख़ौफ़ है, यज़दान का।
दूर भागे जो बुराईयों से बशर ॥
तोहफाए नाचीज़ है उसकी नज़र।

श्री स्वामी जी महाराज ने खुशहाल से बड़े प्यार और प्रेम से पूछा, क्यों बेटा! आज तेरी आँखें लाल मुखड़ा कुम्लाया हुआ है क्या

किसी ने तुम को कष्ट दिया है ? प्यारे ! खुशहाल ने श्री स्वामी जी के प्यार और सहानुभूति के शब्दों को सुनते ही फूट २ कर रोना आरम्भ कर दिया । श्री स्वामी जी प्यार करें और पूछें, और खुशहाल बेचारा रोवे। अब सारी दुःखी कथा रोने के रूप में सच्चे गुरू की शरण में बैठा हुआ प्रकट कर रहा है । आह ! धन्य हो ऋषि दयानन्द महाराज ! युग २ में तेरा भला हो । तेरह बार विष के प्याले पी कर भी विष देने वाले को अमृत पिलाया । दीन दुखियों अनाथों, विधवाओं, अबलाओं की आवाज को सुना, सच्चे माता पिता बन कर उन को सन्मार्ग पर चलाया फिर क्यों न तेरे पुजारी तेरे सद्गुणों की धारणा करें ।

प्यारे ! श्री स्वामी नित्यानन्द जी महाराज तो अग्निरूप ही थे जहाँ अग्नि हो वहाँ जीवन होता है, उदारता, त्याग; पवित्रता, प्रकाश होता है । पतित से पतित आये, पवित्र हो जाये । अब स्वामी जी महाराज ने खाना, खाना छोड़ दिया और खुशहाल के दुःख में दुःखी हो गए । अब मानों खुशहाल सच्ची माता की गोद में पहुँच गया है । अब खुशहाल ने अपनी पहले की सारी अवस्था और आज की बीती अवस्था प्रकट की और फिर जार २ रोना आरम्भ कर दिया । स्वामी जी ने प्यार किया, जल पिलाया और कहा, प्यारे ! बस अब तेरे संकट कट गए हैं, अब तू सच्चा खुशहाल बन जायगा और कहा एक टुकड़ा कागज का लाओ । खुशहाल ने जेब में देखा तो कागज का टुकड़ा साफ मिल गया । स्वामी जी महाराज की भेंट किया । स्वामी जी महाराज ने रूल पैन्सिल उठाई, कागज पर गायत्री मन्त्र लिख दिया जो निम्न प्रकार है ।

ओ३म् भूर्भुवः स्वः तत्सवितु र्वरेण्यंभर्गोदेवस्य धीमहि । धियो योनः प्रचोदयात ॥

और कहा, खुशहाल ! यह गुरु मन्त्र है । रात के तीन बजे उठ कर जब कि तुम्हारे माता पिता सोते होंगे तुम गायत्री मंत्र का जाप

प्रतिदिन शुरू कर दो। बस तेरी बुद्धि का विकास होगा तेरी बुद्धि ज्ञान युक्त हो जायगी तेरे सर्व संकट दूर हो कर जैसा तेरे पिता ने तेरा नाम रखा है, वैसा तू खुशहाल, निहाल बन जायगा।

प्यारे! खुशहाल ने मन्त्र लिखा हुआ ले लिया। श्री स्वामी जी महाराज ने भोजन किया फिर खुशहाल नमस्कार कर आशीर्वाद ले कर बर्तन उठा स्वामी जी से विदा हुआ और घर पहुंचा। अब रात को उठ कर गायत्री मंत्र का जाप आरम्भ कर दिया। जाप करते २ दो तीन मास के पश्चात् बुद्धि का विकास होने लगा और पाठ खूब कण्ठ होने लगा। अब स्कूल की बैंच नीचे से निकल गई। ६ मास के बाद क्लास का मानीटर बन गया। अब माता पिता का प्यार और मास्टर जी खुश होने लगे। अब खुशहाल, खुशहाल बन रहा है, खुशहाल परीक्षा में पास होकर ३०) का सेवक उप सम्पादक आर्य गजट समाचार पत्रका बन गया। अब खुशहाल से खशहाल चन्द बन गये; फिर सम्पादक बने। बाद में 'मिलाप' पत्र जारी किया अब लाखों रुपये के स्वामी बन गये। धर्मपत्नि मिली तो धर्म युक्त, संतान भगवान ने दी तो देश भक्त। संग मिला तो महान आत्माओं का अब लाला खुशहाल चन्द खुसंन्द बन गये। अब तप त्याग का जीवन बिताने लगे। आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा लाहौर की पचास साला सिलवर जुबली मनाने की जब घोषणा कर दी गई तो लाला खुशहाल चन्द जी वेद प्रचार अर्थ धन संग्रह करने के लिए लाहौर से झोली पसार कर चल पड़े। श्री बावा गुरुमुखसिंह जी के द्वार पर भी पहुँचे तो उन्हों ने कहा कि जिस कदर धन वेद प्रचार अर्थ आप अन्य स्थानों से संग्रह कर लावेंगे उसी कदर मैं दे दुँगा। यह सुनते ही ला० खुशहाल चन्द जी वहाँ से चल पड़े और सवा लाख रुपया एकत्र कर लाए तो श्री बावा गुरुमुखसिंह जी ने सवा लाख रुपयों के नोटों का हार ला० खुशहालचन्द जी के गले में डाल दिया यह अढ़ाई लाख रुपया वेद प्रचार सभा को भेंट किया।

सज्जनों! यह सफलता क्यों हुई? इसका कारण त्याग और

पवित्रता, भक्ति रस और गायत्री माता का ही आर्शीवाद था। पश्चात हैदराबाद सत्याग्रह के डिक्टेटर बनकर गये। जेल में जो सत्याग्रह करने वालों की सेवा की और रक्षा की और स्वयं तप किया, तो जेल में ही भगवान ने 'महात्मा' का अधिकार देदिया अब महात्मा खुशहाल चन्द खुशंन्द बन गये। कहावत है 'जो जागता है, सो पाता है। अब महात्मा खुशहाल चन्द जी वेद भक्त, वेद माता के सच्चे पुजारी अज्ञातवास करने लगे। शरणागत ने शरण में ले लिया; उसने वह सच्चा रूप दे दिया। क्या अग्नि का बाना पहना दिया अब महात्मा 'आनन्द स्वामी जी महाराज' हो गये हैं। अब जहां जाते हैं भगवान वेद की अमृत वाणी कल्याणी का गीत गाते दीवाने मस्ताने होकर आनन्द मग्न हो जाते हैं और श्रोता नर नारी इस अमृत रस से तृप्त होकर दर्शनों के वास्ते जहाँ तहां से पुकार आती है। समय प्रदान करें।

प्यारे! स्वामी जी ने यह आप बीती अवस्था ला० गणेशदास जी प्रोप्राइटर भारत गलास कम्पनी, कुतुब रोड देहली के मकान जवाहर नगर में जिसका नाम "प्रयाग निकेतन" है; उपदेश में सुनाई अन्त में आप ने कहा तीन वेदों ने तो इस गायत्री मन्त्र का गीत गाया चौथे अर्थवेद ने इस मन्त्र का महातम गान किया। आज मेरी आयु ६८ वर्ष की हो चुकी है। गोया ५८ वर्ष मुझे इस माता का पूजन करते बीत गये, पर इस माता ने सचमुच मेरे नाम खुशहाल को सार्थक खुशहाल बना दिया है। पर यहां तक नहीं, अथर्ववेद का १९ सू० ७१ मं० में १ जो मन्त्र आया, वह इस प्रकार है:—

ओ३म् स्तुता मया वरदा वेद माता प्रचोदयन्ताम् पावमानी द्विजनाम्, आयु प्राणं, प्रजां पशुम्, कीर्तिं, द्रविणं ब्रह्मवर्चसं महयम् दत्वा व्रजत ब्रह्मलोकम्।

गायत्री माता अपने उपासक को आयु, प्राण, सन्तान, नौकर चाकर, पशु, धन, सम्पत्ति और ब्रह्म तेज प्रदान करके प्रभु चरणों में पहुँचा देती है।

इस गायत्री माता ने मुझ मूढ़ बुद्धि अज्ञानी को शुद्ध बुद्धि प्रदान की और ज्ञान मार्ग दिखाया, आयु, स्वास्थ, सन्तान, पशु, गाय, दूध; धन; अन्न, यश कीर्ति अपना भक्ति रस, अन्तिम इस वेद माता का जो आदेश था वह मुझे वेष पहना दिया, एक घर का पुजारी था, अब विश्व का पुजरी वना दिया।

प्यारे ! आओ इस गायत्री माता की शरण में अमृत समय में जागकर अपनी बुद्धि को शुद्ध और निर्मल बनाओ। एक सहस्त्र १००० गायत्री का जाप नित्य प्रति किया करो फिर मृत से अमृत को प्राप्त करो, यही गुरू मन्त्र है इस को वेद मुखमाता तथा सावित्री कहते हैं जो सूक्ष्म से शून्य अवस्था में रक्षा करती है। भगवान का साक्षात कराती है भक्त कहता है:—

॥ गीत ॥

हो गया आनन्द दुनिया को रिझा कर क्या करूँ।
दिल प्रकाशित हो तो, दीपक राग गा कर क्या करूँ॥
जल गया अज्ञान का, वह जाल अग्नि ज्ञान से।
खुद बुझा ज़ाता है, अब इसको बुझाकर क्या करूँ॥

खुल गया जिसपे राज़े पिनहानी ।
हेच समझे वह ऐश सुलतानी ॥

प्यारे पाठकगण–अब आप सोचें, विचारें, खुशहाल की बिगड़ी कला किस ने बनाई। क्या स्कूल मास्टरों की मारपीट ने या मास्टरों की टियूशन रखने से, या जैसे की आजकल स्कूल में जुर्माना लगाया जाता है उससे बना, या पिता के पीटने और माता के झाड़ झंकार से बना, नहीं, हरगिज नहीं, यह बिगड़ी कला गायत्री जाप के करने से बनी। 'ईयाँ राचे बियाँ'। 'प्रत्यक्षं किं प्रमाणम्' अर्थात् प्रत्यक्ष में प्रमाण कहाँ।

ओ३म् शान्ति ! शान्ति !! शान्ति !!!

भजन नं० १

तेरे द्वारे ते आ गए, रखन वाला तू ही तू ।
सारे ही जग नूँ वेखिया, लगदा प्यारा तू ही तू ॥
पापा दे घुम्मर घेर बिच्च, वदियां दे काले अंधेर विच ।
बेड़ी है डगमग डोल दी, आस किनारा तू ही तू ॥
तेरे द्वारे ते आ गए.....................

खाली द्वारे तों मोड़नाँ, तेरे बिना कोई होर ना ।
मैनूं है तेरा आसरा, मेरा सहारा तू ही तू ॥
तेरे द्वारे ते आ गए...

मैं निमानी दा मान तू, अपना विरद पहचान तू ।
चरनां दी प्रीति दा दान दे; दाता दुलारा तू ही तू ॥
तेरे द्वारे ते आ गए...

अमलां दे लेखे न फोलना, ऐबां दे कंडे ना तोलना ।
अवगुण हारा जहान है, बखशण हारा तू ही तू ॥
तेरे द्वारे ते आ गए...

स्वामी ब्रह्मानन्द